page 1 and 8_page 1 Mar 25 final ds.qxd 11/23/2025 1:16 AM Page 1

epaper.dehatsandesh.com

3 एआई के माध्यम से कृषि क्षेत्र में बड़ी क्रांति की ओर उत्तर प्रदेश

5 वैभव सूर्यवंशी ने 32 गेंदों पर ठोका था शतक, क्या साउथ अफ्रीका के खिलाफटी 20 टीम में मिलेगी जगह

8 फसल अवशेष प्रबंधन और मृदा कार्बन गतिशीलता

मौसम जम्मू
न्यूनतम 10
अधिकतम 22

E-mail: dehatsandesh@gmail.com

जम्मू-कश्मीर का एकमात्र ग्रामीण दैनिक

देहात संदेश

वर्ष-22, जम्मू तवी, अंक-287 | जम्मू तवी, रविवार 23 नवम्बर, 2025 | मूल्य-3 रूपये- (लेह) 4 रूपये | पृष्ठ -8

जी -20 में बोले मोदी, वैश्विक आर्थिक विकास के मानकों को बदलने की जरूरत

जोहान्सबर्ग 22 नवंबर । भारत ने जी 20 देशों से वैश्विक आर्थिक विकास के मानकों पर फिर से विचार करने का आह्वान करते हुए कहा है कि मौजूदा मानकों के कारण एक बड़ी आबादी संसाधनों से वंचित रह गयी है और इसके लिए सभ्यतागत मूल्यों पर आधारित वैश्विक पारंपरिक ज्ञान कोष बनाना चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को यहां जी 20 नेताओं के 20 वें सम्मेलन में वैश्विक पारंपरिक ज्ञान कोष के अलावा स्वास्थ्य क्षेत्र की आपात स्थितियों तथा प्राकृतिक आपदाओं के संकट से निपटने के लिए जी 20 वैश्विक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया टीम के गठन और मादक पदार्थों की चुनौती से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मादक पदार्थ-आतंक गठजोड़ और उसके वित्तपोषण से निपटने के लिए जी 20 पहल के गठन का प्रस्ताव रखा। उन्होंने अफ्रीका में बड़ी संख्या में युवाओं को कुशल बनाने के लिए जी 20 अफ्रीका कौशल पहल शुरू करने का भी प्रस्ताव रखा।

प्रधानमंत्री ने जी 20 नेताओं से अपील की कि सभी को वैश्विक संस्थाओं में ग्लोबल साउथ की आवाज को बुलंद करने के लिए मिलकर प्रयास करने चाहिए।

श्री मोदी ने दक्षिण अफ्रीका की जी 20 की अध्यक्षता में कुशल व्यक्तियों के आव्रजन, पर्यटन, खाद्य सुरक्षा ,कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था , नवाचार और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में हुए कामों की सराहना करते हुए कहा कि नई दिल्ली जी 20 शिखर सम्मेलन में जो ऐतिहासिक पहल शुरू की गयी थी उन्हें यहां आगे बढ़ाया गया है। प्रधानमंत्री ने वैश्विक विकास के मानकों में बदलाव पर जोर देते हुए कहा कि इनके कारण एक बड़ी आबादी संसाधनों से वंचित रह गयी है। उन्होंने कहा कि अफ्रीका इसका बहुत बड़ा भुक्तभोगी रहा है।

उन्होंने कहा ,卐 पिछले कई दशकों में जी 20 ने वैश्विक वित्त और वैश्विक आर्थिक विकास को दिशा दी है। लेकिन विकास के जिन मानकों पर अब तक काम हुआ है, उनके कारण बहुत बड़ी आबादी संसाधनों से वंचित रह गई है। साथ ही, प्रकृति के अत्यधिक दोहन को भी बढ़ावा मिला है। अफ्रीका इसका बहुत बड़ा भुक्तभोगी है। आज जब अफ्रीका पहली बार जी 20 समिट की मेजबानी कर रहा है, तो यहां हमें विकास के पैरामीटर्स पर फिर से विचार करना चाहिए।卐

इसके समाधान का उपाय बताते हुए उन्होंने कहा कि इसका एक रास्ता भारत के सभ्यतागत मूल्यों में है और इसमें हमें मानव, समाज और प्रकृति को एक व्यापक रूप में देखना होगा। इससे प्रगति और प्रकृति के बीच सौहार्द संभव होगा। उन्होंने कहा कि दुनिया में कई समुदायों ने अपने पारंपरिक और पर्यावरण संतुलित जीवन शैली को संभाल कर रखा है। इन परंपराओं में सततता तो दिखती ही है, साथ ही इनमें, सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक एकता और प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान के भी दर्शन होते हैं। श्री मोदी ने इसके उपाय के रूप में भारतीय ज्ञान प्रणाली पहल के आधार पर वैश्विक पारंपरिक ज्ञान कोष के गठन का प्रस्ताव किया।

श्रीनगर में सुरक्षित और शांतिपूर्ण माहौल सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कदम उठाए गए हैं : सीआरपीएफ आईजी

'खेलों के ज़रिए हम शांति, सद्भाव को मज़बूत करना चाहते हैं और युवाओं के साथ पॉज़िटिव तरीके से जुड़ना चाहते हैं'

श्रीनगर, 22 नवंबर ।

श्रीनगर में सुरक्षित और शांतिपूर्ण माहौल सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कदम उठाए गए हैं क्योंकि यहां तीसरा सीआरपीएफ क्रिकेट टूर्नामेंट शुरू हो गया है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के महानिरीक्षक जनरल पीके शर्मा ने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए यह बात कही।

आईजीपी ने कहा कि यह टूर्नामेंट 2023 से नवंबर-दिसंबर में रेगुलर तौर पर आयोजित किया किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य युवाओं को जोड़ना और खेल संस्कृति को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि इस साल श्रीनगर, बारामूला और गांदरबल की लगभग 123 टीमों ने दिलचस्पी दिखाई, लेकिन समय की कमी के कारण ड्रॉ निकाला गया और सोलह टीमों को शॉर्टलिस्ट किया गया। यह टूर्नामेंट जम्मू और कश्मीर क्रिकेट एसोसिएशन के साथ मिलकर ऑर्गनाइज़ किया जा रहा है, जबकि ग्राउंड कश्मीर यूनिवर्सिटी ने दिए हैं।

आईजीपी शर्मा ने कहा कि युवाओं की भागीदारी पर खास ज़ोर दिया गया है।

हमने 19 और 23 साल से कम उम्र के खिलाड़ियों की ज्यादा

भागीदारी पक्का करने के लिए उम्र की पाबंदी रखी है। कश्मीर में बहुत ज्यादा क्रिकेट टैलेंट और जोश है। खेलों के ज़रिए हम शांति, सद्भाव को मज़बूत करना चाहते हैं और युवाओं के साथ पॉज़िटिव तरीके से जुड़ना चाहते हैं।

श्रीनगर में सुरक्षा तैयारियों पर आईजीपी ने कहा कि सीआरपीएफ, जम्मू-कश्मीर पुलिस, आर्मी और सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के साथ मिलकर शांति बनाए रखने के लिए काम कर रहा है। उन्होंने कहा, 卐मैं ज्यादा डिटेल में नहीं जाना चाहता, क्योंकि आज एक स्पोर्ट्स इवेंट है, लेकिन हमारी तरफ से हर मुमकिन कदम उठाए गए हैं।卐 उन्होंने आगे कहा कि सीआरपीएफ पिछले 35 सालों से यहां सेवा दे रहा है और लोगों का उनके साथ सहयोग बढ़ता जा रहा है।

संक्षेप खबर

गोली लगने से भारतीय सेना के एक अग्निवीर की मौत

पुंछ, 22 नवंबर । अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि पुंछ जिले के मेंढर सेक्टर में गोली लगने से भारतीय सेना के एक अग्निवीर की मौत हो गई। उन्होंने मरने वाले की पहचान अग्निवीर दीपक सिंह के तौर पर की। अधिकारियों ने बताया कि यह घटना पुलिस स्टेशन मेंढर के इलाके में हुई। उन्होंने कहा कि पुलिस उन हालात की जांच कर रही है जिनकी वजह से यह जानलेवा चोट लगी और यह भी पता लगा रही है कि यह आत्महत्या का मामला था या सर्विस राइफल का अचानक चलना था। उन्होंने कहा कि एक विस्तृत जांच शुरू कर दी गई है।

अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास गांव के ऊपर देखा गया पाकिस्तानी ड्रोन, इलाके की तलाशी

जम्मू 22 नवंबर । जम्मू-कश्मीर के सांबा जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा (आईबी) के पास एक गांव के ऊपर पाकिस्तानी ड्रोन देखा गया। अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि शुक्रवार देर रात पाकिस्तान में चक भूरा पोस्ट से ड्रोन को आते देखा गया था, कुछ मिनट तक घगवाल इलाके के रीगल गांव के ऊपर मंडराता रहा और फिर सीमा के दूसरी तरफ लौट गया। सुरक्षा बलों ने इलाके की तलाशी ली। ताकि पक्का हो सके कि वहां से कोई नारकोटिक्स या हथियार जैसा कोई पैकेट तो नहीं गिराया गया है। सुरक्षा बलों द्वारा शनिशार सुबह भी इलाके की तलाशी ली जा रही है।

मादक पदार्थ तस्कर गिरफ्तार, हेरोइन बरामद

जम्मू, 22 नवंबर । क्षेत्र में नशीले पदार्थों के बढ़ते खतरे पर नकेल कसने के लिए एक दृढ़ और रणनीतिक कदम में मीरान साहिब पुलिस स्टेशन ने एक ज्ञात ड्रग तस्कर को पकड़कर और बड़ी मात्रा में प्रतिबंधित सामग्री जब्क और सफलता हासिल की है। यह गिरफ्तारी नशीली दवाओं के व्यापार को जड़ से खत्म करने और समुदाय को इसके हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए पुलिस विभाग के निरंतर प्रयासों को रेखांकित करती है। पुलिस स्टेशन मीरान साहिब की एक सतर्क टीम के नेतृत्व में चलाए गए ऑपरेशन के परिणामस्वरूप राशिद अली पुत्र मोहम्मद शफी निवासी इंद्रा नगर, मीरान साहिब को गिरफ्तार किया गया। पकड़े जाने पर पुलिस ने उसके कब्जे से 9 ग्राम हेरोइन जैसा पदार्थ बरामद किया। यह क्षेत्र में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी पर चल रही कार्रवाई में एक उल्लेखनीय जब्ती है। एनडीपीएस अधिनियम की धारा 8, 21 और 22 के अनुसार एफआईआर संख्या 148/2025 के तहत मामला दर्ज किया गया है और विस्तृत जांच शुरू की गई है।

मुख्यमंत्री उमर ने जम्मू-कश्मीर की आपदा प्रभावित पंचायतों के लिए 50 अतिरिक्त मनरेगा कार्यदिवसों का किया स्वागत

जम्मू, 22 नवंबर । मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को जम्मू-कश्मीर के लिए मनरेगा काम की लिमिट बढ़ाने के लिए केंद्र को धन्यवाद दिया और कहा कि यह आपदा प्रभावित पंचायतों में कमजोर समुदायों को आर्थिक संकट से उबरने में मदद करने में अहम भूमिका निभाएगा। केंद्र ने जम्मू-कश्मीर के लिए महात्मा गांधी नेशनल रूरल एम्प्लॉयमेंट गारंटी एक्ट के तहत दिए जाने वाले पर्सन-डे की संख्या 100 से बढ़ाकर 150 करने की मंजूरी दे दी है। अब्दुल्ला ने इस फैसले के लिए केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान को धन्यवाद दिया और जम्मू-कश्मीर को केंद्र की तुरंत मदद के लिए तारीफ़ की। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अहम फैसला हाल ही में आई बाढ़ और भूस्खलन से प्रभावित

हज़ारों परिवारों की मदद करेगा जिससे उन्हें बेहतर रोज़ी-रोटी के मौके और समय पर राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि यह बढ़ी हुई मदद आपदा प्रभावित पंचायतों में कमजोर समुदायों को आर्थिक संकट से उबरने में मदद करने में अहम भूमिका निभाएगी। अब्दुल्ला ने ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री जाविद अहमद डार और उनकी टीम को केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ सफलतापूर्वक बातचीत करने के लिए भी बधाई दी। एक ऑफिशियल स्पोक्सपर्सन ने कहा कि केंद्र सरकार ने फाइनेंशियल ईयर 2025-26 के लिए जम्मू-कश्मीर में प्रभावित परिवारों के लिए मनरेगा काम की लिमिट ऑफिशियली 100 से बढ़ाकर 150 दिन कर दी है। उन्होंने कहा कि यह फैसला 1,962 पंचायतों को बाढ़ प्रभावित घोषित करने के बाद लिया गया है क्योंकि जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने खेती के कामों और गांव की रोजी-रोटी पर बुरे असर को दूर करने के लिए खास राहत मांगी थी। उन्होंने आगे कहा कि डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर एंड फार्मर्स वेलफेयर ने इस एक्सटेंशन की सिफारिश की थी जिससे सबसे कमजोर परिवारों को सीधा फायदा होगा जिससे स्टेबल इनकम होगी, आर्थिक मुश्किलें कम होंगी और टिकाऊ कम्युनिटी एसेट्स बन पाएंगे।

सिन्हा आज उच्च स्तरीय सुरक्षा बैठक की अध्यक्षता करेंगे

श्रीनगर, 22 नवंबर। जम्मू और कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर, मनोज सिन्हा रविवार को जम्मू में एक हाई-लेवल सिक्योरिटी मीटिंग की अध्यक्षता करेंगे। इसमें पिछले हफ्ते दिल्ली में हुए जानलेवा ब्लास्ट के बाद के हालात का रिव्यू किया जाएगा और फोर्स की सर्दियों की तैयारियों का जायजा लिया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि LG कल सुबह 11 बजे जम्मू कन्वेंशन सेंटर में मीटिंग की अध्यक्षता करेंगे। उन्होंने कहा, 卐मीटिंग में पुलिस, आर्मी, CRPF के टॉप अधिकारी, इंटेलिजेंस एजेंसियां और सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के टॉप अधिकारी शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि रब्ब पिछले हफ्ते दिल्ली में हुए ब्लास्ट के मद्देनजर जम्मू और कश्मीर में सिक्योरिटी की स्थिति का रिव्यू करेंगे और सिक्योरिटी फोर्स की सर्दियों की तैयारियों का भी जायजा लेंगे। इससे पहले, सिन्हा ने शनिवार को नौगाम पुलिस स्टेशन में हुए अचानक हुए ब्लास्ट के बाद पुलिस और सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के साथ एक हाई-लेवल मीटिंग की अध्यक्षता की, जिसमें नौ लोगों की मौत हो गई और 32 अन्य घायल हो गए।

यह ब्लास्ट तब हुआ जब फरीदाबाद से ज़ब्त किए गए एक्सप्लोसिव का स्टॉक पिछले शुक्रवार को नौगाम पुलिस स्टेशन में अचानक फट गया, जब फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी की टीम आगे की जांच के लिए एक्सप्लोसिव से सैंपल ले रही थी। सूत्रों ने यह भी कहा कि सिन्हा दिल्ली ब्लास्ट के बाद पैदा हुए हालात को देखते हुए जम्मू और कश्मीर में लाइन ऑफ़ कंट्रोल के हालात का रिव्यू करेंगे। उन्होंने कहा, 卐सिक्योरिटी फोर्स को रब्ब और अंदरूनी इलाकों में कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया जाएगा ताकि केंद्र शासित प्रदेश में शांति और कानून-व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ने के लिए देश विरोधी तत्वों द्वारा पैदा किए गए किसी भी सुरक्षा खतरे को रोका जा सके।

उन्होंने आगे कहा कि रब्ब को जम्मू और कश्मीर में टेरर इकोसिस्टम को खत्म करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

10 नवंबर को दिल्ली के मशहूर लाल किले के पास विस्फोटकों से लदी एक कार में हुए धमाके में कम से कम 15 लोग मारे गए और कई दूसरे घायल हो गए।

धमाके के बाद, जम्मू-कश्मीर में ज़रूरी जगहों पर अलग-अलग सुरक्षा एजेंसियों द्वारा तलाशी और रेगुलर पेट्रोलिंग तेज़ कर दी गई है।

उधमपुर पुलिस ने कुख्यात ड्रग तस्कर मोहम्मद की 22 लाख की चल संपत्ति कुर्क की

उधमपुर, 22 नवंबर । एनडीपीएस अधिनियम के तहत पुलिस स्टेशन रहम्बल में दर्ज मामले की एफआईआर संख्या 189/2025 यू/एस 8/21/22 एनडीपीएस एक्ट में जांच के दौरान यह पता चला है कि आरोपी मोहम्मद यूसुफ पुत्र अब्दुल रशीद निवासी वुयान पंपोर जिला पुलवामा के पास एक चल संपत्ति है।

एक टोयोटा इनोवा वाहन जिसका पंजीकरण नंबर जेके 01एम-3679 है। जांच के दौरान एकत्र की गई सामग्री के आधार पर जांच अधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण है कि उक्त वाहन नार्को व्यापार के माध्यम से उत्पन्न अपराध की आय से हासिल किया गया है। तदनुसार कानून के आदेश के अनुसार कार्रवाई करते हुए संपत्ति को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए एनडीपीएस अधिनियम की धारा 68 (एफ) के तहत संलग्न किया गया है। उक्त वाहन का मूल्य 22 लाख है जो अब मादक पदार्थों से संबंधित अपराधों के खिलाफ उधमपुर पुलिस की निरंतर कार्रवाई के हिस्से के रूप में एनडीपीएस अधिनियम की धारा 68 (एफ) के प्रावधानों के तहत संलग्न है। उधमपुर पुलिस की वर्ष के लिए एनडीपीएस संपत्ति कुर्की की संख्या अब 12 करोड़ तक पहुंच गई है जो ड्रग तस्करों के खिलाफ उसके निरंतर आक्रामक रुख को दर्शाता है।

आई.टीबीपी ने उधमपुर में 64वां स्थापना दिवस मनाया; गृह राज्य मंत्री, उपराज्यपाल शामिल हुए

जम्मू ,22 नवंबर। इंडो-तिब्बत बॉर्डर पुलिस (आई.टीबीपी) ने शनिवार को जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में अपना 64वां स्थापना दिवस मनाया, जिसमें गृह राज्य मंत्री बंदी संजय कुमार और उपराज्यपाल मनोज सिन्हा भी शामिल हुए। आर्मी के नॉर्दर्न कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा, जम्मू कश्मीर पुलिस के डायरेक्टर जनरल नलिन प्रभात, आई.टीबीपी के डायरेक्टर जनरल प्रवीण कुमार, आई.टीबीपी के एडिशनल डायरेक्टर जनरल मुकेश सिंह और दूसरे सीनियर अधिकारी भी उधमपुर में 15वीं बटालियन के हेडक्वार्टर में स्थापना दिवस समारोह में शामिल हुए। गृह राज्य मंत्री ने आई.टीबीपी के शहीदों को श्रद्धांजलि दी, सलामी ली और शानदार स्थापना दिवस परेड देखी। अपने भाषण में, मंत्री ने सभी आई.टीबीपी कर्मियों को शुभकामनाएं दीं और हिमालय की मुश्किल परिस्थितियों में उनकी शानदार सेवा की तारीफ

> उपराज्यपाल ने सेना के बलिदान की सराहना की, उन्हें 'एकता का प्रतीक बताया

की, देश की सुरक्षा में उनकी लगन, समर्पण और प्रोफेशनलिज्म को दिखाया। डीजी आई.टीबीपीने फोर्स की खास कामयाबियों के बारे में बताया और ऊंचाई वाली बॉर्डर सिक्योरिटी, मानवीय मदद और आपदा राहत, अंदरूनी सिक्योरिटी, नक्सल ऑपरेशन और माउंटेनियरिंग में बेहतरीन काम और बचाव ऑपरेशन में ITBP के योगदान पर ज़ोर दिया।

आतंकी हैंडलर की संपत्ति पुलिस ने की अटैच

श्रीनगर, 22 नवंबर । जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में पुलिस ने शनिवार को पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर से काम कर रहे एक आतंकी हैंडलर की संपत्ति अटैच की।

पुलिस के एक प्रवक्ता ने बताया कि पुलिस ने दक्षिण कश्मीर जिले के त्राल इलाके के सैयदाबाद पस्तूना में अचल प्रॉपर्टी अटैच की।

उन्होंने बताया कि यह संपत्ति मुबाशिर अहमद के तौर पर हुई है जो त्राल के सैयदाबाद पस्तूना का रहने वाला है और जो अभी पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर से आतंकी गतिविधियां चला रहा है। प्रवक्ता ने बताया कि पुलिस की जांच और पूछताछ के दौरान संपत्ति की पहचान हुई।

मुगल रोड पर ताज़ा बर्फबारी से मार्ग बंद

जम्मू, 22 नवंबर । जम्मू-कश्मीर में मौसम के करवट लेते ही मुगल रोड पर सीजन की ताज़ा बर्फबारी हुई जिससे सड़क पर यातायात प्रभावित हो गया।

पीर पंजाल की ऊंची पहाड़ियों पर जमा बर्फ की परत के कारण कई जगह फिसलन बढ़ गई जिसके चलते प्रशासन ने वाहनों की आवाजाही को अस्थायी रूप से रोक दिया। सड़क पर फंसे वाहनों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया और अधिकारियों ने लोगों से अनावश्यक यात्रा से बचने की अपील की है।

'व्हाइट कॉलर' टेरर मॉड्यूल केस के सिलसिले में एक और व्यक्ति गिरफ्तार

श्रीनगर, 22 नवंबर । जम्मू-कश्मीर पुलिस की स्टेट इन्वेस्टिगेशन एजेंसी ने शनिवार को एक 'व्हाइट कॉलर' टेरर मॉड्यूल केस के सिलसिले में एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बताया कि गिरफ्तार किए गए व्यक्ति की पहचान श्रीनगर शहर के बटमालू इलाके के रहने वाले तुफैल नियाज भट के रूप में हुई है। अधिकारियों ने बताया कि उसे 'व्हाइट कॉलर' टेरर मॉड्यूल केस की चल रही जांच के तहत गिरफ्तार किया गया। श्रीनगर पुलिस ने अक्टूबर के बीच में नौगाम के बनपोरा में दीवारों पर पुलिस और सुरक्षाबलों को धमकी देने वाले पोस्टर चिपकाने की जांच शुरू की जिसके बाद पूरे मॉड्यूल का भंडाफोड़ हुआ। सीनियर सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस (श्रीनगर) डॉ. जी. वी. संदीप चक्रवर्ती ने खुद जांच को लीड किया और सीसीटीवी फुटेज से पहले तीन संदिग्धों आरिफ निसार डार उर्फ साहिल, यासिर-उल-अशरफ और मकसूद अहमद डार उर्फ शाहिद की गिरफ्तारी हुई। उनसे पूछताछ के बाद मौलवी इरफान अहमद की गिरफ्तारी हुई जो पहले पैरामेडिक था और अब इमाम है। उसने पोस्टर सप्लाई किए और डॉक्टरों को कट्टरपंथी बनाया। निशानदेही पर जांच करने वाले फरीदाबाद में अल फलाह यूनिवर्सिटी पहुंचे जहां डॉ. मुजफ्फर गनी और डॉ. शाहीन सईद को गिरफ्तार किया गया और 2,900 किलो विस्फोटक सामग्री जब्त की गई। जांच करने वालों का मानना है कि डॉक्टरों की एक मुख्य तिकड़ी डॉ. गनी, उमर नबी (10 नवंबर को लाल किले के पास विस्फोटकों से भरी कार का ड्राइवर, जिसमें 13 लोग मारे गए थे) और मुजफ्फर राथर (फरार) मॉड्यूल चला रहे थे।

जम्मू एयरपोर्ट पर इमरजेंसी तैयारियों को परखने के लिए सीआईएसएफ का मल्टी-एजेंसी मॉक ड्रिल

जम्मू, 22 नवंबर । जम्मू एयरपोर्ट पर अलग-अलग सिक्योरिटी और सपोर्ट एजेंसियों की ऑपरेशनल तैयारी और इमरजेंसी रिस्पॉन्स क्षमता का आकलन करने के लिए एक कोऑर्डिनेटेड मल्टी-एजेंसी मॉक एक्सरसाइज की गई। इस ड्रिल में सीआईएसएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस के स्पेशल ऑपरेशन्स ग्रुप (एसओजी), इंडियन एयर फोर्स, एयरपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एएआई), जम्मू-कश्मीर फायर एंड इमरजेंसी सर्विसेज़, जीएमसी मेडिकल टीम, एएआई फायर सर्विसेज़, और सीआईएसएफ बीडीडीएस और डॉग स्क्वॉड ने मिलकर हिस्सा लिया। एक अधिकारी ने बताया कि इस एक्सरसाइज का मकसद इंटर-एजेंसी कोऑर्डिनेशन को मजबूत करना, स्टैंडर्ड रिस्पॉन्स प्रोसीजर का मूल्यांकन करना और एयरपोर्ट पर रियल-टाइम इमरजेंसी स्थितियों के लिए तैयारी को बढ़ाना था।

बिजली दरों में प्रस्तावित बढ़ोतरी सत्तारूढ़ एनसी का चुनावी धोखा है: सुनील शर्मा

जम्मू, 22 नवंबर । नेशनल कॉन्फ्रेंस पर तीखा हमला करते हुए विपक्ष के नेता भाजपा के सुनील शर्मा ने शनिवार को पार्टी पर चुनाव से पहले फ्री बिजली का वादा करके और अब लोगों पर 20 परसेंट की भारी टैरिफ बढ़ोतरी का बोझ डालकर चुनावी धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया।

सुनील शर्मा ने कहा कि एनसी का 2024 का चुनाव घोषणापत्र अपने ही झूठ आश्वासनों के कारण ढह गया है। उन्होंने कहा कि उमर अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर के हर घर को 200 यूनिट फ्री बिजली देने का वादा किया था। आज एक साल से ज्यादा समय बाद उस वादे को पूरा करने के बजाय उनकी सरकार पीक-आवर

कंजम्पशन चार्ज में 20 परसेंट की भारी बढ़ोतरी करके लोगों को लूटने की तैयारी कर रही है।

मुख्यमंत्री को सीधे चुनौती देते हुए शर्मा ने कहा कि अगर उमर अब्दुल्ला में ज़रा भी ईमानदारी है तो उन्हें बताना चाहिए कि असल में कितने घरों को तथाकथित फ्री 200 यूनिट मिली हैं। लोगों को यह जानने का हक है कि उन्हें कितनी बुरी तरह गुमराह किया गया है। शर्मा ने कहा कि भाजपा आम नागरिकों पर पैसे का बोझ बढ़ाने वाले किसी भी कदम का कड़ा विरोध करेगी। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित टैरिफ बढ़ोतरी से पहले ही राजनीतिक पार्टियों, व्यापारियों और आम ग्राहकों में बहुत गुस्सा है जो सभी इसे गलत, शोषण करने वाला और जनविरोधी फैसला मानते हैं।उन्होंने दोहराया कि एनसी सरकार को तुरंत यह प्रस्ताव वापस ले लेना चाहिए और चुनावों के दौरान किए गए वादे पूरे करने चाहिए, न कि उन्हीं लोगों को सज़ा देनी चाहिए जिनका उसने समर्थन करने का वादा किया था।

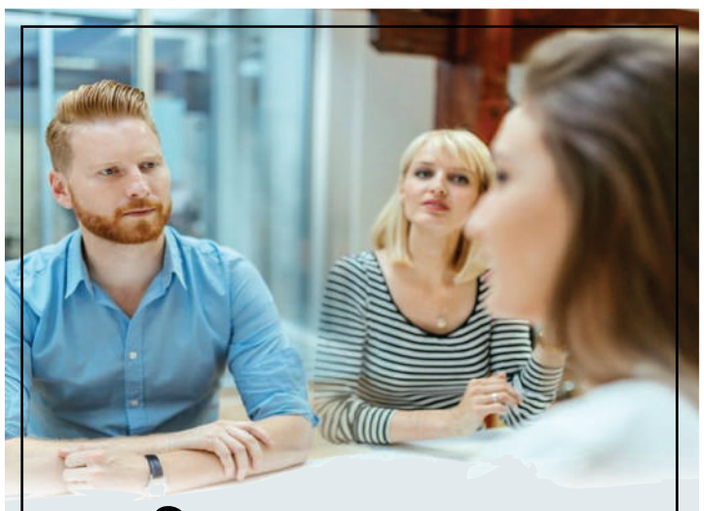

नहीं आया इंटरव्यू के लिए कॉल, आपने की होंगी ये 5 गलतियां

शायद आप कुछ समय से जॉब तलाश रहे हों और आपने अलग-अलग कंपनियों, अलग-अलग पदों पर आवेदन दिया हो। हर दिन आप यह काम करते हो लेकिन आपके पास अभी तक कोई रिस्पॉन्स नहीं आया हो, ना कोई कॉल, ना ई-मेल। आपके हताश होने से पहले, यहां कुछ जरूरी बातें दी जा रही है जो कि आप आवदेनों को भेजने के पहले एक बार फरि चेक कर लें।

हर आवेदन में एक ही सीवी और कवर लेटर तो नहीं यूज किया

हर जॉब अलग है और उस जॉब की जरूरत के हिसाब से सीवी में बदलाव की जरूरत होती है। आपको अपना सीवी कस्टमाइज करने के लिए समय निकालना चाहि और यह सोचना चाहिए कि ऐसा क्या बदलाव किया जाए कि आपको इंटरव्यू के लिए एचआर से कॉल आ जाए। अगर आपका सीवी हर जॉब के हिसाब से पर्सनलाइज्ड नहीं हुआ तो यह इग्नोर हो सकता है। एम्प्लॉयर्स यह बात नोटिस करते है कि आपके सीवी और कवर लेटर में एक ही बातें तो नहीं है। भीड़ से अलग दिखने के लिए आपको यह साबित करना होगा कि आप एक अच्छे एम्प्लॉई बन सकते हैं। ऐसी चीजें शामिल करें जिससे कंपनी ज्यादा आकर्षित हो।

आवेदन गलत जगह तो भेज नहीं दिया

जिस व्यक्ति को आवदेन भेजना है उसके नाम में कई आवेदक गलती से या मूर्खतावश गलती कर देते हैं। वशिष रूप से जब आप अलग-अलग जगहों पर अप्लाई कर रहे हैं तो एड्रेसी और कंपनी का नाम अपडेट करना आसानी से भूल सकते हैं। इतना ही नहीं नाम की स्पेलिंग में गलती भी भारी पड़ सकती है।

आप न्यूनतम योग्यता पर खरे नहीं उतरे हैं

आपको इंटरव्यू कॉल नहीं आएगा अगर आप अंडरक्वॉलिफाइड हैं। अगर आपके पास आवश्यकतानुसार अनुभव, शैक्षणिक योग्यता नहीं है या आपने उसी माहौल या इंडस्ट्री में काम नहीं किया है तो आपका सीवी बाहर कर दिया जाएगा।

याद रखें, आपको यह पता होना चाहिए कि आप योग्य है लेकिन आप रिक्रूटर के लिए केवल एक कागज का टुकड़ा हैं। वे आपके बारे में उतना ही जानते हैं जो आपका पिछला अनुभव कहता है। उन्हें कई सारे सीवी देखने होते हैं और वे कभी भी अपना समय ऐसे में व्यर्थ नहीं करेंगे या आपके बारे में ज्यादा जानने की कोशिश नहीं करेंगे।

क्या आप न्यूनतम योग्यता को पार कर गए हैं

अगर आप ओवरक्वॉलिफाइड हैं तो भी आपके पास कॉल नहीं आएगा। कोई भी कंपनी ऐसे व्यक्ति को हायर नहीं करेगी। ऐसे में आपका सीवी भी रिजेक्ट हो जाएगा और वे सीवी के ढेर में नए आवेदन पर नजर घुमाएंगे।

कॉन्टेक्ट डिटेल्स अपडेट किया

भेजने से पहले आपको सीवी आपको बार-बार चेक करना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लें कि आपने आपका वर्तमान ई-मेल एड्रेस, मोबाइल नंबर और लैंडलाइन नंबर डॉक्यूमेंट्स में अपडेट कर लिया है। अगर आपने आपका पुराना सोशल मीडिया अकाउंट्स डिलीट कर दिया है तो यह सुनिश्चित कर लें कि आपने उसे सीवी से भी हटा दिया है। अगर आपने सोशल मीडयिा अकाउंट्स में प्राइवेसी सेंटिंग कर रखी है तो एचआर को इसके जरिए संपर्क करने का मत कहिए।

भारत में मैनेजमेंट में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं के बीच एमबीए इन मार्केटिंग हमेशा से एक लोकप्रिय स्पेशलाइजेशन रहा है। मगर अब डिजिटल युग के आने से मार्केटिंग के क्षेत्र में जबरदस्त बदलाव आया है और अब इसमें डिजिटल मार्केटिंग भी शामिल हो गई है।

अब डिजिटल मार्केटिंग में पा सकते हैं एमबीए डिग्री

पढ़ाई के क्षेत्र के रूप में डिजिटल मार्केटिंग का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा है कि अब मार्केटिंग और डिजिटल मार्केटिंग को एक ही माना जाने लगा है। यूं तो दोनों ही क्षेत्रों में मूल काम उत्पादों व सेवाओं का प्रमोशन तथा सेल्स है मगर डिजिटल मार्केटिंग में अपनाई जाने वाली रणनीतियां परंपरागत मार्केटिंग से बहुत अलग और कहीं अधिक प्रभावी होती हैं। डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र की बढ़ती लोकप्रियता और इसके लगातार विस्तार को देखते हुए मैनेजमेंट गुरुओं ने एमबीए कोर्स के लिए डिजिटल मार्केटिंग में स्पेशलाइजेशन की अलग ब्रांच की जरूरत महसूस की। आज डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए का विकल्प तो उपलब्ध है मगर कई विद्यार्थियों में इस बात को लेकर भ्रम की स्थिति है कि मार्केटिंग और डिजिटल मार्केटिंग में क्या अंतर है और वे इन दोनों में से किस स्पेशलाइजेशन का चयन करें। तो चलिए, डिजिटल मार्केटिंग के बारे में थोड़ा और विस्तार से जानते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग से कैसे अलग

जहां 'मार्केटिंग'' में सभी प्रकार की मार्केटिंग आती है, वहीं 'डिजिटल मार्केटिंग'' में केवल डिजिटल माध्यमों द्वारा की गई मार्केटिंग शामिल है। इनमें वेबसाइट, सोशल नेटवर्क, बैनर ऐड, गूगल ऐड, सर्च रिजल्ट, यूट्यूब वीडियो आदि आते हैं। परंपरागत मार्केटिंग में विज्ञापनदाता से उपभोक्ता की ओर सूचना का एकतरफा प्रवाह होता है। वहीं डिजिटल माकेटिंग में दोतरफा संवाद संभव है। परंपरागत मार्केटिंग में जहां विज्ञापन की लागत बहुत अधक आती है, वहीं डिजिटल मार्केटिंग में यह कम रहती है। परंपरागत मार्केटिंग कैंपेन काफी पहले से प्लान किए जाते हैं मगर डिजिटल कैंपेन तात्कालिक भी हो सकते हैं।

एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग

कई युवाओं का तर्क होता है कि केवल डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए कर अपनी पढ़ाई का स्कोप सीमित करने के बजाय मार्केटिंग में एमबीए करना बेहतर है। यह बात अपनी जगह सही हो सकती है मगर आप जरा डिजिटल मार्केटिंग को भविष्य के नजरिये से भी देखें। पिछले एक दशक में सारे बिजनेस घरानों ने अपना ध्यान मार्केटिंग के परंपरागत माध्यमों से हटाकर डिजिटल माध्यमों पर केंद्रित कर दिया है। डिजिटल मार्केटिंग की लोकप्रियता के कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं कम लागत, तत्काल प्रतिसाद, लचीलापन, सुविधा और प्रभावशीलता। कई जानकार तो यह भी कहते हैं कि आज के दौर में अगर आपने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मार्केटिंग नहीं की, तो ग्राहक आपसे दूर ही रहेंगे। इसमें कोई शक नहीं कि आने वाले समय में सारी मार्केटिंग डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर ही जाएगी। इस प्लेटफॉर्म पर खास तरह की मैनेजमेंट स्किल की जरूरत होती है। इसीलिए एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग एक बेहतर तथा आकर्षक करियर ऑप्शन बन गया है।

क्या है स्कोप

हमारे यहां अब भी यह फील्ड अपने शुरूआती दौर में है और इसके बड़ी तेजी से विस्तार लेने की उम्मीद है। डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए के विद्यार्थियों को तकनीकी बुनियाद तथा डिजिटल लैंग्वेज के कॉन्सेप्ट्स से रूबरू कराया जाता है। इसमें ये विषय भी शामिल होते हैं : वेब एनालिटिक्स, एडवर्टाइजिंग कम्युनिकेशन, बायर बिहेवियर, मार्केटिंग मैनेजमेंट, बी2बी ई-मार्केटिंग, इंटरनेट मार्केटिंग स्ट्रैटेजी आदि। भविष्य में इनमें सोशल मीडिया मार्केटिंग, कंटेंट मार्केटिंग, सर्च इंजिन मार्केटिंग आदि के भी शामिल किए जाने की संभावना है।

पे-पैकेज

काफी नई फील्ड होने के बावजूद डिजिटल मार्केटिंग वेतन के लिहाज से बेहद आकर्षक है। एक नया डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर 4 से 5 लाख रुपए का वार्षिक पैकेज पा सकता है। अनुभव के साथ इसमें तीव्रता से वृद्धि होती है। 5 से 7 साल का अनुभवी डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर 10-12 लाख का वार्षिक पैकेज पा सकता है।

करियर ऑप्शन

डिजिटल मार्केटिंग में डिग्री लेने के बाद करियर के कई ऑप्शन खुले होते हैं। फिलहाल हम इनमें से 3 सबसे बेहतर ऑप्शंस की चर्चा करेंगे।

डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर

इन्हें मार्केटिंग की भाषा में 'बज क्रिएटर'' भी कहा जाता है। ये कस्टमर बिहेवियर डेटा पर काम करते हुए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मार्केटिंग की ऐसी रणनीति तैयार करते हैं, जिससे उस उत्पाद या सेवा के प्रति उपभोक्ता की जिज्ञासा जागे। ईमेल मार्केटिंग, ईकॉमर्स, सोशल मीडिया कैंपेन आदि इनके काम का हिस्सा हैं। डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर के रूप में जॉब के अवसर अकेले इस साल ही 12 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। अगर आप डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर के रूप में करियर बनाना चाहते हैं, तो बेहतर होगा कि आप कोडिंग, वेब डिजाइन, एप्लिकेशन डेवलपमेंट, मार्केटिंग इकोनॉमिक्स तथा जनरल मैनेजेरियल एप्टिट्यूड में पारंगत हो जाएं।

इंटरनेट मार्केटिंग मैनेजर

अगर आपमें डेटा कलेक्शन और प्रोसेसिंग का हुनर है, तो आप इस फील्ड में करियर बना सकते हैं। इंटरनेट मार्केटिंग मैनेजर को मुख्य रूप से मार्केट रिसर्च एनालिस्ट के रूप में काम करना होता है। वे कस्टमर बिहेवियर डेटा का अध्ययन कर यह तय करते हैं कि उत्पाद या सेवा की बिक्री की कितना संभावना है। इसमें एमबीए की डिग्री के अलावा मार्केट रिसर्च एंड एनालिसिस में सर्टिफिकेशन आपके काम आएगा।

डिजिटल सेल्स मैनेजर

मार्केटिंग व सेल्स एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सो कई कंपनियां डिजिटल सेल्स की जिम्मेदारी डिजिटल मार्केटिंग मैनेजमेंट प्रोफेशनल को सौंपती हैं। यदि आपको डिजिटल मीडिया व निजता कानूनों, ब्राण्ड मैनेजमेंट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स आदि का ज्ञान है, तो डिजिटल सेल्स मैनेजर के रूप में यह आपको बहुत काम आएगा।

साइंस स्टूडेंट्स के लिए इस क्षेत्र में ढेरों हैं संभावनाएं

विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आए दिन नई-नई शाखाएं जुड़ रही हैं। नैनो टेक्नोलॉजी भी तुलनात्मक रूप से एक नया क्षेत्र है। नैनो टेक्नोलॉजी के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर देश-विदेश में छलांगें लगाकर बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। नैनो टेक्नोलॉजी को 'साइंस ऑफ मिनिएचर' अर्थात लघुतर का विज्ञान भी कहा जाता है। जब कोई वस्तु या सामग्री नैनो डाइमेंशन (10-9 मीटर = 1 नैनोमीटर) में बदल जाती है, तो उसके भौतिक, रासायनिक, चुंबकीय, प्रकाशीय, यांत्रिक और इलेक्ट्रिक गुणों में बड़ा भारी परिवर्तन आ जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो नैनो टेक्नोलॉजी एक ऐसा विषय क्षेत्र है, जिसमें नए अवसरों की भरमार है। नैनो टेक्नोलॉजी वैज्ञानिकों को व्यावहारिक सीमाओं से परे जाकर आणविक स्तर पर प्रयोग करने की सुविधा प्रदान करती है।

हर क्षेत्र में पैठ

नैनो टेक्नोलॉजी वर्तमान में मानवीय जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी है। यह तकनीक बायोसाइंस, मेडिकल साइंस, पर्यावरण विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, कॉस्मेटिक्स, सिक्योरिटी, फैब्रिक्स और विविध क्षेत्रों में चमत्कार कर रही है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि नैनो टेक्नोलॉजी प्रत्येक क्षेत्र जैसे मेडिसिन, एयरोस्पेस, इंजीनियरिंग, विभिन्न उद्योगों और तकनीकी क्षेत्रों, स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी। कुल मिलाकर ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होगा, जो नैनो टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल नहीं करेगा।

आर एंड डी पर आधारित

आने वाले समय में नैनो टेक्नोलॉजी के फायदों को देखते हुए पूरे विश्व में अकादमिक स्तर पर इसे एक विषय के रूप में अपनाया जा रहा है। नैनो टेक्नोलॉजी के पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स हमारे देश में उपलब्ध हैं। एमटेक और एमएससी कोर्स में प्रवेश के लिए फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, बायोइंफॉर्मेटिक्स, इंस्ट्रूमेंटेशन आदि विषयों से ग्रेजुएशन कर चुके विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं। एडमिशन प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिया जाता है।

नैनो टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम का स्वरूप मूलत : रिसर्च एवं डेवलपमेंट (आर एंड डी) पर आधारित होता है। इसके पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को पहले संबंधति विषय के आधारभूत सिद्धांतों से परिचित कराया जाता है। इसके बाद इस तकनीक के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग के अनुरूप अप्लाइड रूप देकर अन्य विषयों की जानकारी दी जाती है, ताकि पाठ्यक्रम रोचक, वस्तुनिष्ठ व ज्ञान पर आधारित बन सके। इसमें पदार्थ के भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणों का सूक्ष्मतम अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु में क्वांटम थ्योरी, लिथोग्राफी, कार्बनिक और अकार्बनिक नैनो मटेरियल, स्पेक्ट्रोग्राफी, ऑप्टिकल माइक्रोस्कोपी, एक्स-रे डिफ्रैक्शन, रमन प्रभाव, नैनो बायोसाइंस, जीन स्ट्रक्चर आदि शामिल हैं।

करियर के कई विकल्प

नैनो टेक्नोलॉजी का अध्ययन करने वालों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में करियर के अच्छे विकल्प उपलब्ध हैं। यह तकनीक रक्षा, सैन्य सामग्री निर्माण, फॉरेंसिक साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी, ऊर्जा आदि क्षेत्रों में रोजगार के अच्छे अवसर प्रदान करती है। नैनो टेक्नोलॉजी पर्यावरण, कृषि, टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में भी रोजगार प्रदान करती है। इस तकनीक का प्रयोग कैंसर के इलाज में भी किया जा रहा है। इसलिए स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में यह तकनीक अच्छी करियर की संभावनाएं रखती है। नैनो टेक्नोलॉजी के अध्यापन के क्षेत्र में भी करियर बनाया जा सकता है।

खुल रहे हैं नए द्वार

नैनो टेक्नोलॉजी के द्वारा विभिन्न तत्वों की बॉण्ड संरचना में परिवर्तन करने पर या उनका आपस में संयोग करने पर एकदम नए तत्व का निर्माण भी किया जा सकता है। इस विषय में अभी बहुत-से नए आयाम खोजे जाने बाकी हैं तथा इसके प्रयोग से भौतिकी के लगभग सभी सिद्धांतों को यथार्थ रूप दे पाना संभव हो सकता है। इसलिए यह विषय शोधर्थियों के लिए कार्यक्षेत्रों के नए द्वार खोलता है। इस टेक्नोलॉजी को और भी उन्नात बनाने तथा भविष्य में इस क्षेत्र में नई संभावनाओं की तलाश करने के लिए भारत सरकार भी पहल कर रही है। अमेरिका का नेशनल साइंस फाउंडेशन 'नेशनल नैनो टेक्नोलॉजी इनिशिएटिव' नामक योजना चला रहा है। इसके साथ ही विश्व के तमाम उन्नत देश भी इस पर अलग-अलग नामों से योजनाएं चला रहे हैं। अनेक देश इस विषय में शोध के लिए प्रतिवर्ष अरबों रुपए खर्च कर रहे हैं। स्पष्ट है कि इसके चलते इस क्षेत्र में जॉब्स के भरपूर अवसर निर्मित होने जा रहे हैं। नैनो टेक्नोलॉजी को आज जिन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, वे हैं शिक्षित, प्रशिक्षित तथा कुशल कर्मचारियों की कमी। नैनो टेक्नोलॉजी विभिन्न प्रमुख नवाचारों के विकास में संलग्न है और इस क्षेत्र में नित नए प्रयोग हो रहे हैं, जिससे कुशल मानवशक्ति को रोजगार के उजले अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

प्रमुख संस्थान

- आईआईटी, दिल्ली
- आईआईटी, गुवाहाटी
- आईआईटी, कानपुर
- जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस साइंटिफिक रिसर्च, बेंगलुरू
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरू
- नेशनल केमिकल लैबोरेट्री, पुणे
- एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा
- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - नीलम सिंह गिल द्वारा देहात संदेश, गुरूद्वारा सुंदर सिंह रोड, जम्मू से प्रकाशित एवं नार्थलाईनस पबलिशर्स, 18-B, Phase- II, Industrial Estate, Gangyal, Jammu से मुद्रित। संपादक- नीलम सिंह गिल। फोन नंबरः- (95)191- 2574109 2548103 RNI Regd. No.: JKBIL/2004/13144 *Email: dehatsandesh@gmail.com, dehatsandesh@yahoo.com, dehatsandesh@rediffmail.com*

एआई के माध्यम से कृषि क्षेत्र में बड़ी क्रांति की ओर उत्तर प्रदेश

योगी सरकार की प्रभावी नीतियां खेती में डिजिटल तकनीकों को बढ़ावा देकर किसानों की आमदनी बढ़ाने का बन रही हैं जरिया

लखनऊ, 22 नवंबर। उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्र को तकनीकी दृष्टि से अत्याधुनिक बनाने की दिशा में लगातार सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में प्रदेश खेती के क्षेत्र में तकनीक आधारित अभिनव प्रयोगों के क्रियान्वयन एक अनुकरणीय मॉडल के तौर पर प्रस्तुत हो रहा है। राज्य में योगी सरकार ने पारंपरिक खेती को आधुनिक स्वरूप देने के उद्देश्य से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित समाधानों का विस्तार किया है, जिससे न केवल उत्पादन बढ़ा है, बल्कि किसानों की आय में भी बड़ा सुधार देखने को मिल रहा है। एआई के इस्तेमाल से मौसम, मिट्टी और फसल के अनुसार वैज्ञानिक परामर्श, कीट और रोग नियंत्रण, सिंचाई प्रबंधन तथा मार्केट एक्सेस के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय सफलता हासिल की गई है। प्रदेश में एआई-संचालित ड्रोन, स्मार्ट सिंचाई प्रणाली तथा डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म्स के कुशल क्रियान्वयन से कृषि कार्यों की पूर्ति और गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ है। डिजिटल कृषि मिशन के तहत लगभग 300 कृषि विशेषज्ञ, वैज्ञानिक और प्रगतिशील किसान खेती को स्मार्ट बनाने के अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। एआई आधारित कीट एवं रोग निगरानी व्यवस्था के जरिए फसलों को होने वाले नुकसान में भारी कमी आई है, जिससे किसानों को राहत मिली है। मक्का की उपज 29 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पहुंचाने तथा धान की उपज 45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से अधिक करने की दिशा में भी प्रगति हो रही है। इससे प्रदेश तेजी से राष्ट्रीय स्तर पर उच्च उत्पादकता वाले राज्यों की श्रेणी में शामिल हो रहा है। विश्व बैंक और गूगल साझेदारी के माध्यम से उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य बन चुका है जिसने एआई आधारित कृषि और शासन प्रणाली को बड़े पैमाने पर अपनाया है। यह प्रणाली किसानों को वास्तविक समय में मिट्टी, मौसम और फसल के अनुसार डिजिटल सलाह उपलब्ध करा रही है। ई-नाम जैसे प्लेटफॉर्मों ने किसानों को मार्केट एक्सेस आसान बनाया है, जबकि एआई ने ऋण, बीमा और सब्सिडी जैसी सेवाओं का लाभ भी तीव्र गति से उपलब्ध कराया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का फोकस कृषि से जुड़े हर किसान को तकनीक से जोड़ने और गांव की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों की आय दोगुनी करने के प्रयास अब बड़े पैमाने पर सफल होते दिखाई दे रहे हैं। इन प्रयासों के जरिए उत्तर प्रदेश की एआई आधारित कृषि क्रांति न केवल राज्य के भविष्य को बदल रही है, बल्कि देश के लिए भी एक नए आदर्श मॉडल के रूप में उभर रही है।

मुख्यमंत्री का निर्देश, अवैध घुसपैठ पर होगी सख्त कार्रवाई

लखनऊ, 22 नवम्बर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को अवैध घुसपैठ पर त्वरित और सख्त कार्रवाई के स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की कानून व्यवस्था, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक समरसता सर्वोच्च प्राथमिकता है और किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि प्रत्येक जिला प्रशासन अपने क्षेत्र में रहने वाले अवैध घुसपैठियों की पहचान सुनिश्चित करे और नियमानुसार कार्रवाई शुरू करे। मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिया है कि घुसपैठियों को रखने के लिए प्रत्येक जनपद में अस्थायी डिटेंशन सेंटर बनाए जाएं। इन केंद्रों में विदेशी नागरिकता के अवैध व्यक्तियों को रखा जाएगा और आवश्यक सत्यापन की प्रक्रिया पूरी होने तक वहीं आवास सुनिश्चित किया जाएगा।

जीडीसी बसोहली ने देशभक्ति के साथ एनसीसी दिवस 2025 मनाया

कठुआ, 22 नवंबर (हि.स.)। गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज बसोहली के एनसीसी कैडेटों ने एनसीसी दिवस 2025 बड़े उत्साह और देशभक्ति के जोश के साथ मनाया। इस समारोह में अनुशासन, एकता और राष्ट्र सेवा के उन मूल मूल्यों पर प्रकाश डाला गया जिन्हें राष्ट्रीय कैडेट कोर देश के युवाओं में निरंतर स्थापित करता आ रहा है।

इस अवसर पर वीर समागम, प्रेरणा, पूर्व छात्र संवाद और वृक्षारोपण अभियान सहित गतिविधियों की एक सप्ताह भर की श्रृंखला आयोजित की गई। प्रत्येक कार्यक्रम का उद्देश्य कैडेटों को प्रेरित करना और समाज एवं देश के प्रति उनकी जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करना था।

सप्ताह की शुरुआत वीर समागम के साथ हुई, जिसके दौरान कैडेटों ने वीर माता बिंदु कुमारी के घर का दौरा किया, जोकि बसोहली के बहादुर शहीद राइफलमैन निहाल गुरुंग की मां थीं, जिन्होंने 24 अगस्त 2018 को जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। कैडेटों ने सम्मान स्वरूप एक स्मृति चिन्ह भेंट किया और राष्ट्र के लिए उनके सर्वोच्च बलिदान का सम्मान करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की। इस यात्रा ने युवा कैडेटों पर गहरा प्रभाव डाला और उनमें कृतज्ञता, साहस और देशभक्ति की भावना का संचार किया।

दूसरे कार्यक्रम प्रेरणा में कैडेटों ने एनसीसी के पूर्व छात्र पूर्व कैडेट राहुल अंडोत्रा से बातचीत की, जिन्होंने एनसीसी स्वयंसेवक के रूप में अपने अनुभव और यात्रा साझा की। उनकी प्रेरक बातचीत ने कैडेटों को अनुशासन बनाए रखने, उत्कृष्टता प्राप्त करने और एनसीसी द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। सेवा की भावना को जारी रखते हुए कैडेटों ने कॉलेज परिसर में वृक्षारोपण अभियान चलाया।

गुरु तेग बहादुर साहिब जी की 350वीं शहीदी वर्षगांठ पर होगा समागम का आयोजन

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। गुरु तेग बहादुर साहिब जी की 350वीं शहीदी वर्षगांठ पर समागम का आयोजन किया जाएगा। एस बलविंदर सिंह उपाध्यक्ष डीजीपीसी जम्मू, एस सुरजीत सिंह महासचिव डीजीपीसी और एस तेजिंदर सिंह सदस्य डीजीपीसी जम्मू, एस अजीत सिंह और स्थानीय संगत के सदस्य जिसमें एस संतोख सिंह, एस बलदेव सिंह, एस जोगिंदर सिंह, एस बलबीर सिंह, रमीत कौर, हरजीत कौर एवं एसडीएन. गुरमीत कौर ने मीडिया के साथ विवरण साझा किया कि समिति श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की सर्वोच्च शहादत के 350वें वर्ष को धूमधाम से मना रही है। इस पवित्र कार्यक्रम का आयोजन गुरु साहिब के अद्वितीय बलिदान को श्रद्धांजलि देने के लिए किया गया है जिन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता, सम्मान और पीड़ितों के मानवाधिकारों की रक्षा के लिए शहादत दी। उनकी विरासत पीढ़ियों को न्याय, सच्चाई और मानवता को बनाए रखने के लिए प्रेरित करती रहेगी। समागम में भाई साहिब भाई दविंदर सिंह जी और भाई तरविंदर सिंह जी सहित डीजीपीसी जम्मू के हजूरी रागी जत्थों द्वारा भावपूर्ण गुरबानी कीर्तन पेश किया जाएगा, जो गुरु तेग बहादुर साहिब जी की शिक्षाओं और आध्यात्मिक महानता को दर्शाते हुए शबद प्रस्तुत करेंगे।

मादक द्रव्य विरोधी अभियान के तहत मादक पदार्थ तस्कर गिरफ्तार, हेरोइन बरामद की

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। क्षेत्र में नशीले पदार्थों के बढ़ते खतरे पर नकेल कसने के लिए एक दृढ़ और रणनीतिक कदम में मीरान साहिब पुलिस स्टेशन ने एक ज्ञात ड्रग तस्कर को पकड़कर और बड़ी मात्रा में प्रतिबंधित सामग्री जब्त और सफलता हासिल की है। यह गिरफ्तारी नशीली दवाओं के व्यापार को जड़ से खत्म करने और समुदाय को इसके हानिकारक प्रभाव से बचाने के लिए पुलिस विभाग के निरंतर प्रयासों को रेखांकित करती है। पुलिस स्टेशन मीरान साहिब की एक सतर्क टीम के नेतृत्व में चलाए गए ऑपरेशन के परिणामस्वरूप राशिद अली पुत्र मोहम्मद शफी निवासी इंद्रा नगर, मीरान साहिब को गिरफ्तार किया गया। पकड़े जाने पर पुलिस ने उसके कब्जे से 9 ग्राम हेरोइन जैसा पदार्थ बरामद किया। यह क्षेत्र में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी पर चल रही कार्रवाई में एक उल्लेखनीय जब्ती है। एनडीपीएस अधिनियम की धारा 8, 21 और 22 के अनुसार एफआईआर संख्या 148/2025 के तहत मामला दर्ज किया गया है और विस्तृत जांच शुरू की गई है

पुलिस ने ड्रग तस्कर को गिरफ्तार किया

श्रीनगर, 22 नवंबर (हि.स.)। प्रतिबंधित पदार्थ बरामद नशीली दवाओं के खतरे के खिलाफ अपनी कड़ी कार्रवाई जारी रखते हुए पुलिस ने अनंतनाग में एक ड्रग तस्कर को गिरफ्तार किया है और उसके कब्जे से प्रतिबंधित पदार्थ बरामद किया है। पुलिस चौकी संगम की एक पुलिस टीम ने नियमित चेकिंग के दौरान एक संदिग्ध ड्रग तस्कर को पकड़ा। तलाशी के दौरान उसके कब्जे से 1.3 किलोग्राम चरस जैसा पदार्थ बरामद हुआ। उसकी पहचान ओवैस हसन अल्ली पुत्र जीएच के रूप में की गई है। नैना निवासी हसन अल्ली जी.बी. खलील. तस्करी का सामान जब्त कर लिया गया है और आरोपी को हिरासत में ले लिया गया है।

बिलावर टाउन में 500 मीटर लंबा पक्का नाला 4.50 करोड़ की लागत से शुरू

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। आज बिलावर विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत बिलावर टाउन में एक महत्वपूर्ण विकासकार्य का विधिवत उद्घाटन किया गया। शहर के भीतर बनाए जाने वाले इस पक्के नाले को यू-शेप डिज़ाइन में आयरन स्ट्रक्चर के साथ निर्मित किया जाएगा। करीब 500 मीटर लंबाई के इस नाले पर लगभग 4.50 करोड़ की लागत आएगी। उद्घाटन समारोह में बिलावर शहर के कई प्रमुख बुद्धिजीवी और गणमान्य लोग उपस्थित रहे जिनमें रोमी खजूरिया, जगमोहन गुप्ता, रिटायर्ड लेक्चरर रमेश खजूरिया, रिटायर्ड लेक्चरर यशपाल मल्होत्रा, भाजपा वरिष्ठ नेता अमरीक सिंह, राजू वसोतरा सहित विभाग के अधिकारी और कर्मचारी शामिल थे। कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने इस कार्य की सराहना की और इसे बिलावर में विकास का एक नया आयाम बताया। स्थानीय नागरिकों ने खुशी जताते हुए अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों का धन्यवाद व्यक्त किया।

यातायात की भीड़ को कम करने की परियोजना

श्रीनगर, 22 नवंबर (हि.स.)। श्रीनगर के उपायुक्त (डीसी) अक्षय लाबरू ने शनिवार को कहा कि बहुप्रतीक्षित सनतनगर फ्लाईओवर परियोजना अपने अंतिम चरण में पहुंच गई है जिसमें एक ट्यूब सफलतापूर्वक लोड परीक्षण पूरा कर रही है और दूसरी ट्यूब कल तक समाप्त होने की उम्मीद है। डीसी श्रीनगर ने साइट पर पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि यह परियोजना शहर के यात्रियों और निवासियों के लिए बहुत महत्व रखती है जो लंबे समय से इसके पूरा होने का इंतजार कर रहे हैं। यह श्रीनगर के लिए एक महत्वपूर्ण परियोजना है। हम इसके बारे में काफी समय से सुन रहे हैं और आज एक ट्यूब को पूर्ण लोड परीक्षण और दूसरे को पूरा होने के करीब देखकर हमें संतुष्टि का एहसास होता है।

पूर्व मंत्री प्रिया सेठी ने जनरल बिक्रम सिंह को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। जनरल बिक्रम सिंह यादगार कमेटी जम्मू ने शनिवार को देश के लिए उनकी असाधारण सेवा और बलिदान के लिए याद किए जाने वाले एक सम्मानित सेना अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल बिक्रम सिंह की पुण्य तिथि के अवसर पर बिक्रम चौक पर एक स्मृति समारोह का आयोजन किया। समारोह में पूर्व मंत्री एवं भाजपा उपाध्यक्ष प्रिया सेठी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। अपने संबोधन में उन्होंने लेफ्टिनेंट जनरल बिक्रम सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और देश की सुरक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले राष्ट्रीय नायकों को सम्मानित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने दिवंगत जनरल की विरासत को संरक्षित करने और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करने के निरंतर प्रयासों के लिए समिति की सराहना की। प्रिया सेठी ने मांग की कि जम्मू-कश्मीर शिक्षा बोर्ड को किताबों में जनरल बिक्रम सिंह पर एक अध्याय शामिल करना चाहिए ताकि स्कूली पाठ्यपुस्तकों में ऐसी शख्सियतें यह सुनिश्चित कर सकें कि असली नायकों को आने वाली पीढ़ियां याद रखें। पार्टी के अनुसार, स्थानीय नायकों के योगदान और बलिदान को उजागर करने से छात्रों को प्रेरित करने और क्षेत्रीय इतिहास और संस्कृति के बारे में उनकी समझ मजबूत करने में मदद मिलेगी। समिति के सदस्यों ने मुख्य अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत किया और इस अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर बोलते हुए एस. कंचन सिंह ने जनरल के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करते हुए कहा कि घातक दुर्घटना से कुछ क्षण पहले, जनरल बिक्रम सिंह महत्वपूर्ण राष्ट्रीय जानकारी को क्षतिग्रस्त या समझौता होने से बचाने के लिए सेना की महत्वपूर्ण फाइलों को विमान से बाहर फेंकने में कामयाब रहे। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी अतिथियों, सदस्यों और प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

विधायक नज़ीर गुरेज़ी ने कंजलवान ग्रिड स्टेशन का उद्घाटन किया

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। गुरेज़ घाटी के लिए एक ऐतिहासिक कदम के तहत विधायक नज़ीर गुरेज़ी ने आज बहुप्रतीक्षित कंजलवान ग्रिड स्टेशन का उद्घाटन किया। इस परियोजना के शुरू होने के साथ ही पहली बार स्थानीय आबादी को यहां से नियमित बिजली आपूर्ति उपलब्ध कराई जा रही है जिसे क्षेत्र के लोगों ने बड़ी राहत और खुशी के साथ स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान विधायक गुरेज़ी ने पावर विभाग की सेवाओं में सुधार के लिए अपने निर्वाचन क्षेत्र विकास कोष से 10 लाख रुपये जारी करने की घोषणा की। यह राशि विभाग के लिए एक वाहन खरीदने में खर्च की जाएगी जिससे दूरदराज़ इलाकों में पहुंच आसान होगी और जनता की जरूरतों का समय पर समाधान किया जा सकेगा। उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे और वर्षों से लंबित इस मांग के पूरा होने पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि सरकार मूलभूत सुविधाओं में सुधार और जरूरी सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। गुरेज़ी ने विश्वास जताया कि ऐसे विकास कार्य क्षेत्र की प्रगति की नींव को और मजबूत करेंगे।

बिश्नाह के पंडोरिया गांव में नहर से 19 वर्षीय युवक का शव बरामद

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। जम्मू के बिश्नाह इलाके के पंडोरिया गांव में एक दर्दनाक हादसा सामने आया जहां नहर से 19 वर्षीय युवक बीरू पुत्र धनी राम का शव बरामद हुआ। मृतक के पिता ने बताया कि बीरू रात को रिश्तेदारों के घर गया था लेकिन सुबह स्थानीय लोगों ने उसे साइकिल समेत नहर में गिरा हुआ देखा। घटना की सूचना मिलते ही बिश्नाह पुलिस मौके पर पहुंची और शव को नहर से बाहर निकालकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

भूस्थानिक डेटा प्रसंस्करण विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

कठुआ, 22 नवंबर (हि.स.)। राजकीय महाविद्यालय कठुआ के भूगोल स्नातकोत्तर विभाग ने 22 नवंबर 2025 को भूस्थानिक डेटा प्रसंस्करण और एकीकृत स्थानिक विश्लेषण विषय पर एक दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला का आयोजन किया।

यह कार्यक्रम प्राचार्य डॉ. सावी बहल के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. नीलम भगत ने किया जिन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित किया और तकनीकी रूप से उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए भूगोल विभाग को बधाई दी। अपने संबोधन में उन्होंने भूगोल विभाग को महाविद्यालय की सबसे प्रतिष्ठित और शैक्षणिक रूप से जीवंत इकाइयों में से एक बताया, जो कौशल-आधारित शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रो. पवन कुमार ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने विभाग की शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और गर्व के साथ कहा कि कई पूर्व छात्र सरकारी और निजी क्षेत्रों में विविध पदों पर कार्यरत हैं।

कार्यशाला का शुभारंभ पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन सेमेस्टर 3 की पीजी भूगोल की छात्रा तानिया और साजस्वी ने किया, जिन्होंने कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक समन्वयन किया। तकनीकी सत्रों का संचालन जीडीसी बिलावर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अमरीक सिंह और जीडीसी कठुआ के सहायक प्रोफेसर डॉ. रोहित सिंह ने किया। दोनों वक्ताओं ने भू-स्थानिक डेटा पूर्व-प्रसंस्करण, एकीकरण तकनीकों और स्थानिक विश्लेषणात्मक उपकरणों पर गहन प्रदर्शन प्रस्तुत किए, जिससे प्रतिभागियों को जीआईएस और सुदूर संवेदन कार्यप्रवाह का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। विभाग के लगभग 50-60 स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और व्यावहारिक अभ्यासों के माध्यम से अपनी तकनीकी दक्षता को बढ़ाया। अंत में भूगोल विभाग के सहायक प्रोफेसर प्रोफेसर जगदीश लाल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत 29,733 परीक्षण किए, रोगियों के बैंक खातों में 4,25,200 रुपये की वित्तीय सहायता भेजी

कठुआ, 22 नवंबर (हि.स.)। डीसी कठुआ राजेश शर्मा ने डीसी कार्यालय परिसर के कॉन्फ्रेंस हॉल में टीबी मुक्त भारत अभियान की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की जिसमें कार्यक्रम के अंतर्गत ब्लॉकवार प्रदर्शन और चल रहे हस्तक्षेपों का आकलन किया गया।

शुरुआत में मुख्य चिकित्सा अधिकारी कठुआ ने जिले में टीबी की वर्तमान स्थिति से बैठक को अवगत कराया। बताया गया कि 21,450 संभावित टीबी परीक्षणों के वार्षिक लक्ष्य के मुकाबले अब तक 29,733 परीक्षण किए जा चुके हैं। बैठक में यह भी बताया गया कि कार्यक्रम के तहत जांच की गई 55 प्रतिशत संवेदनशील आबादी की एक्स-रे जाँच की जा चुकी है। इसके अलावा, यह भी बताया गया कि निक्षय पोषण योजना के अंतर्गत पात्र टीबी रोगियों के बैंक खातों में 4,25,200 रुपये की वित्तीय सहायता हस्तांतरित की जा चुकी है।

समीक्षा के दौरान जिला क्षय रोग अधिकारी ने उपायुक्त को कई प्रखंड चिकित्सा कार्यालयों में जाँच कर्मचारियों की कमी के बारे में जानकारी दी। इस मुद्दे पर ध्यान देते हुए डीसी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को कर्मचारियों की कमी पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया ताकि समय पर समाधान के लिए मामले को उच्च अधिकारियों के समक्ष उठाया जा सके।

उपायुक्त ने सभी प्रखंड चिकित्सा अधिकारियों को अपने क्षेत्रीय कर्मचारियों को सक्रिय करने और प्रदर्शन संकेतकों में, विशेष रूप से कम प्रदर्शन करने वाले प्रखंडों में, मापनीय सुधार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने हीरानगर और बसोहली के बीएमओ को एक्स-रे जाँच के आंकड़ों को बढ़ाने और संबंधित निदान प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के निर्देश दिए। टीबी उन्मूलन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए उपायुक्त ने सभी बीएमओ से प्रयासों को तेज करने और एनटीईपी के प्रमुख मापदंडों में अपनी प्रगति में सुधार करने का आह्वान किया। बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला क्षय रोग अधिकारी और जिला कार्यक्रम समन्वयक उपस्थित थे। बनी, बसोहली, बिलावर, हीरानगर और नगरी के बीएमओ ने वर्चुअल माध्यम से बैठक में भाग लिया।

आईआईएम जम्मू में 'परफॉर्मिंग आर्ट्स फॉर मैनेजमेंट एक्सीलेंस' कोर्स की शुरुआत

जम्मू, 22 नवंबर (हि.स.)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट (आईआईएम) जम्मू में मैनेजमेंट शिक्षा में क्रिएटिविटी को जोड़ने की एक अनोखी पहल की गई। मशहूर थिएटर पर्सनैलिटी और पद्मश्री सम्मानित बलवंत ठाकुर ने आईपीएम कोर्स के नए बैच के लिए 'परफॉर्मिंग आर्ट्स फॉर मैनेजमेंट एक्सीलेंस' नामक नए कोर्स की शुरुआत की। यह कोर्स छात्रों में पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, लीडरशिप और इमोशनल इंटेलिजेंस को मजबूत बनाने पर केंद्रित है। लगभग 150 छात्रों को संबोधित करते हुए ठाकुर ने कहा कि बदलते प्रोफेशनल माहौल में अब सिर्फ़ दिमागी क्षमता काफी नहीं, बल्कि भावनात्मक फुर्ती, रचनात्मक सोच और आत्मविश्वास भी उतने ही जरूरी हैं। उन्होंने बताया कि थिएटर, स्टोरीटेलिंग, मूवमेंट और इम्प्रोवाइजेशन जैसी परफॉर्मिंग आर्ट्स तकनीकें छात्रों में उपस्थिति, संतुलन, आत्मविश्वास और संवाद क्षमता को निखारती हैं। उन्होंने कहा कि इन कलाओं के ज़रिए छात्र अपनी झिझक दूर करते हैं, मानसिक बाधाओं को तोड़ते हैं और अपनी वास्तविक अभिव्यक्ति को पहचानते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें बेहतर लीडर बनने में मदद करती है। परफॉर्मिंग आर्ट्स छात्रों को टीमवर्क, सहानुभूति, अनुकूलनशीलता और मानवीय व्यवहार की बारीक समझ प्रदान करते हैं, जो किसी भी प्रभावी मैनेजर के मूल गुण हैं। ठाकुर ने यह भी बताया कि ये कलाएं दबाव में काम करने की क्षमता बढ़ाती हैं और नई तरह से सोचने की आदत विकसित करती हैं।

डीसी ने एचएडीपी, केकेजी और जेकेसीआईपी के अंतर्गत परियोजनाओं की समीक्षा की

कठुआ, 22 नवंबर (हि.स.)। डीसी कठुआ राजेश शर्मा ने समग्र कृषि विकास कार्यक्रम, किसान खुशहाल गारंटी और जम्मू-कश्मीर सामुदायिक सिंचाई परियोजना के अंतर्गत परियोजनावार प्रगति की समीक्षा हेतु संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ एक बैठक की।

बैठक के दौरान उपायुक्त ने इन कार्यक्रमों के अंतर्गत कार्यान्वित की जा रही विभिन्न पहलों का विस्तृत मूल्यांकन किया। किसान साथी, दक्ष किसान, एचएडीपी ऋण, बीज एवं बीज गुणन श्रृंखलाओं के विकास, विशिष्ट फसलों, सब्जियों और विदेशी सब्जियों के संवर्धन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, एकीकृत कृषि प्रणाली, वाणिज्यिक पुष्प उत्पादन, वर्षा आधारित क्षेत्र विकास और मृदा एवं भूमि संसाधन सूचना प्रणाली के अंतर्गत प्रगति की समीक्षा की गई।

उपायुक्त ने मटन उत्पादन में आत्मनिर्भरता और मछली एवं ट्राउट उत्पादन में तकनीकी उन्नयन के उद्देश्य से किए जा रहे हस्तक्षेपों की स्थिति का भी मूल्यांकन किया। विभागवार प्रगति की समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को अपने प्रयासों में तेजी लाने और सभी चल रही परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। बैठक में कठुआ के मुख्य पुलिस अधिकारी रंजीत ठाकुर और कृषि, बागवानी, पशुपालन, भेड़पालन, मत्स्य पालन, सहकारिता और अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी शामिल हुए।

Union Territory Of Jammu & Kashmir
OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD(R&B) DIVISION KATRA
(Tele- Fax No. 01991-232043)
SHORT e-tenderNotice
(6TH CALL)

Name of work: Road from Kalika Nagar to Latori road for premix link to house of Manoranjan (L= 0.15 Km) under UT capex Road sector (New work) for the year 2025-26

Reference :-This office e-NIT No. 14 of 2025-26 Dated 29-09-2025, Corrigendum issued vide No. 2408-13 dated 29-09-2025, Corrigendum issued vide No. 2535-40 dated 08-10-2025, Re-tender issued vide No. 2624-29 dated 10-10-2025, Date Extension Notice issued vide No. 2765-70 dated 17-10-2025, Re-tender issued vide No. 3097-3102 dated 07-11-2025 & Re-tender issued vide No. 3224-29 dated 14-11-2025

Due to poor response, the tender invited vide above cited reference is hereby re-tendered as per below dates:-

1	Date of Publishing of Tender Notice	21-11-2025
2	Period of downloading of bidding documents	From 21-11-2025 to 27-11-2025, 1700 Hrs
3	Bid submission Start Date	21-11-2025
4	Clarification start date	21-11-2025
5	Clarification end date	25-11-2025 up to 1600 Hrs
6	Pre-bid meeting date	26-11-2025 at 1200 Hrs
7	Bid Submission End Date	27-11-2025 up to 1700 Hrs
8	Date & time of opening of Technical Bids (Online)	28-11-2025 on or after 1200 Hrs in the Office of Executive Engineer PWD (R&B) Division, Katra
9	Date & time of opening of Financial Bids (Online)	To be notified after technical bid evaluation is complet

No:-3402-07 Dated:-21-11-2025

DIP/J-8232/25
Dtd: 22-11-2025

sd/
(Er. Neeraj Gupta)
Executive Engineer
PWD (R&B) Division,
Katra

संपादकीय

कूरियर सर्विस ऑपरेटर पर नज़र रखें

यह दुख की बात है कि अधिकारियों की बार-बार सलाह और चेतावनी के बावजूद, अभी भी कुछ बेईमान कूरियर ऑपरेटर ऐसे पार्सल डिलीवर कर रहे हैं जिनमें ऐसी दवाएं होती हैं जिन्हें बिना ऑथराइज़्ड मेडिकल प्रोफेशनल के सही प्रिस्क्रिप्शन के बेचना मना है। ये चीज़ें नशीली होती हैं, और नशा करने वाले इनका गलत इस्तेमाल करते रहते हैं, जिससे ड्रग्स का खतरा और बढ़ जाता है, जो पहले ही समाज, खासकर युवा पीढ़ी की सेहत और पैसे को नुकसान पहुंचा चुका है।

इस मामले में, खबर है कि पुलिस ने हाल ही में बनिहाल में डेल्हीवरी कूरियर सर्विस सेंटर से प्रेगाबालिन वाले कैप्सूल का एक बड़ा कंसाइनमेंट ज़ब्त किया है, जिससे एक बार फिर गैर-कानूनी ड्रग्स की खेप ले जाने के लिए कूरियर नेटवर्क के गलत इस्तेमाल का डर सामने आया है।

अधिकारियों के मुताबिक, खास और भरोसेमंद इनपुट पर कार्रवाई करते हुए, SHO बनिहाल ने पुलिस वालों के साथ ड्रग इंस्पेक्टर रामबन की मौजूदगी में एक अच्छी तरह से कोऑर्डिनेटेड ऑपरेशन किया। ज़ब्त किए गए सामान में 915 प्रेगाबालिन कैप्सूल थे, जिनकी कीमत लगभग 27,613.40 रुपये थी, और माना जा रहा है कि इस कंसाइनमेंट को अलग-अलग लोगों के नाम पर बुक किया गया था ताकि पता न चले।

इसमें कोई शक नहीं कि पुलिस ने इस मामले पर तुरंत संज्ञान लिया, यह तारीफ़ के काबिल है। हालांकि, जिस बात पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है, वह यह है कि कूरियर बिज़नेस में अभी भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो जानबूझकर या लापरवाही से रेगुलर पार्सल मूवमेंट की आड़ में गैर-कानूनी ड्रग्स के धंधे को फलने-फूलने दे रहे हैं।

इसलिए, बनिहाल मामले की जांच बहुत ही प्रोफेशनल, सावधानी से और समय पर की जानी चाहिए ताकि ज़ब्त किए गए कंसाइनमेंट के सोर्स, सप्लायर, हैंडलर और जिन्हें चाहिए था, उनकी पहचान की जा सके। सिर्फ़ पूरी जांच ही नेटवर्क को खत्म करने और उन असली दोषियों पर शिकंजा कसने में मदद कर सकती है जो इस धीमे ज़हर को फैलाने के लिए कूरियर चैनलों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

कूरियर सर्विस आज मॉडर्न लॉजिस्टिक्स चेन का एक ज़रूरी हिस्सा हैं, जो शहरों, बिज़नेस और लोगों को जोड़ती हैं। यह ज़रूरी भूमिका कूरियर ऑपरेटरों के लिए कम्प्लायंस, वेरिफिकेशन, एम्प्लॉई वेटिंग और पार्सल स्क्रूटनी के सबसे ऊँचे स्टैंडर्ड बनाए रखना ज़रूरी बनाती है, ताकि उनके प्लेटफॉर्म का गलत इस्तेमाल गैर-कानूनी कामों में लगे लोग न कर सकें।

कुल मिलाकर, अब समय आ गया है कि संबंधित सरकारी एजेंसियां कूरियर सर्विस के कामों पर बहुत सख्ती से नज़र रखें, ताकि ड्रग्स के ट्रांसपोर्टेशन से जुड़े नियमों का गलत इस्तेमाल या पालन न करने की कोई गुंजाइश न रहे। कोई भी गलती होने पर बिना किसी ढिलाई के सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। आसान शब्दों में कहें तो, कड़ी निगरानी, ज़रूरी वेरिफिकेशन प्रोटोकॉल, टेक्नोलॉजिकल सुरक्षा उपाय और नियम तोड़ने वालों को कड़ी सज़ा इस खतरे को रोकने में बहुत मदद कर सकती है। आज ज़रूरत है कि गलत तरीके से आज़ादी लेने वाली संस्थाओं पर लगातार कार्रवाई हो, ताकि युवाओं को ऐसे गैर-कानूनी कंसाइनमेंट के ज़रिए फैलाए जा रहे नुकसानदायक पदार्थों का शिकार होने से बचाया जा सके।

व्हाइट कॉलर टेरर- लैब कोट में छिपा आतंक

- योगेश कुमार गोयल

भारत को अब जिस नए तरह के आतंक का सामना करना पड़ रहा है, वह सीमा-पार से नहीं बल्कि क्लासरूम, लैब और अस्पतालों के भीतर से जन्म ले रहा है। आतंकवाद का रूप अब बदल चुका है। वह अब सीमापार की घुसपैठ, जंगलों में छिपे गिरोहों या हथियारबंद टुकड़ियों तक सीमित नहीं है बल्कि इसकी जड़ें उन सफेदपोश और शिक्षित लोगों तक पहुंच चुकी हैं, जिन्हें समाज सम्मान की दृष्टि से देखता था।

आतंक का नया चेहरा वह है, जो लैब कोट पहनता है, रिसर्च पेपर लिखता है, अस्पताल में ड्यूटी करता है, मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है और आईटी कंपनियों में काम करता है। यही है 'व्हाइट कॉलर टेरर', जो भारत की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी और सबसे खतरनाक चुनौती बन गया है। 'व्हाइट कॉलर टेरर' यानी शिक्षित, तकनीकी दक्ष और समाज में सम्मानित वे लोग, जो कट्टरपंथ की डिजिटल फैक्ट्रियों में वाहक बनते जा रहे हैं।

दिल्ली के लाल किले के पास विस्फोट और डॉक्टरों के बड़े मॉड्यूल का पकड़ा जाना इस नई साजिश का सबसे भयानक संकेत है। ये न आतंकी दिखते हैं, न किसी पर संदेह होता है। लाल किले के पास कार में हुए विस्फोट में 11 लोग मारे गए और कई घायल हुए। विस्फोटक कार के चालक की पहचान जब सामने आई तो देश स्तब्ध रह गया क्योंकि वह कोई अपराधी, कोई पुराना संदिग्ध या किसी गिरोह का सदस्य नहीं बल्कि डॉक्टर था। पुलवामा का रहने वाला युवक उमर मोहम्मद उन तीन डॉक्टरों का साथी निकला, जिनके पास से फरीदाबाद में लगभग 3000 किलो विस्फोटक और हथियार बरामद हुए थे। यह कोई साधारण संयोग नहीं बल्कि एक बेहद गहरी और सुनियोजित आतंकवादी साजिश की परतें खोलने वाला तथ्य है।

डॉक्टर मुजम्मिल, डॉक्टर आदिल और डॉक्टर शाहीन, ये तीनों उस गिरोह के केंद्र में थे, जो देश की राजधानी में बड़े पैमाने पर जनसंहार की योजना बना रहा था। इन सभी की प्रोफैशनल पहचान ने इतना मजबूत आवरण तैयार कर दिया था कि कोई इन्हें शक की निगाह से देख ही नहीं सकता था। इसी मॉडल का चौथा सदस्य डॉक्टर मोहिउद्दीन गुजरात पुलिस के आतंकवाद-निरोधक दस्ते की गिरफ्त में आया।

चीन से मेडिसिन की पढ़ाई कर लौटे इस युवक को राइसिन जैसा घातक जहर तैयार करते हुए पकड़ा गया, जो एक ही बार में सैंकड़ों लोगों की जान ले सकता था। यह घटनाएं पहली नहीं हैं लेकिन निश्चित रूप से सबसे खतरनाक हैं। पुणे का डॉक्टर अदनान अली सरकार हो या बेंगलुरु की बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत इंजीनियर अथवा आईटी प्रोफेशनल्स, पिछले एक दशक में कई उच्च शिक्षित लोग आतंकी संगठनों के लिए काम करते हुए पकड़े जा चुके हैं। ऑनलाइन पहचान छिपाने के लिए फर्जी नाम, छद्म प्रोफाइल, एन्क्रिप्टेड चैट और डार्क वेब समूहों का इस्तेमाल अब इनका सामान्य हथियार बन चुका है। आइएस, अल-कायदा या छोटे स्थानीय मॉड्यूल, ये सभी इस नए वर्ग को अपनी 'बौद्धिक सेना' बनाने में सक्रिय हो चुके हैं।

यह धारणा अब पूरी तरह मिथ्या साबित हो चुकी है कि केवल गरीब, वंचित या अशिक्षित लोग ही मजहबी उन्माद या सामाजिक उत्पीड़न के कारण कट्टरपंथी बनते हैं। हाल के वर्षों में आतंक के रास्ते पर चलने वाले लोगों की सूची देखें तो स्पष्ट होता है कि उनमें बड़ी संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर, तकनीकी विशेषज्ञ और डिग्रीधारी युवा शामिल हैं। उनकी समस्या न तो आर्थिक है, न सामाजिक बल्कि वैचारिक है। वे इंटरनेट पर उपलब्ध कट्टरपंथी सामग्री, डार्क वेब चैट रूम, टेलीग्राम चैनलों और गहरे धार्मिक उन्माद से प्रेरित वीडियो के माध्यम से धीरे-धीरे विचलित होते हैं और फिर एक ऐसे जाल में फंस जाते हैं, जिसे वे खुद भी कभी समझ नहीं पाते। भारत में केरल, कश्मीर, दिल्ली, महाराष्ट्र और तमिलनाडु से ऐसे अनेक मामले सामने आए हैं, जहां प्रोफैशनल डिग्री वाले व्यक्ति आइएस, जैश, लश्कर या अल-कायदा के लिए काम करते हुए पकड़े गए। कुछ ने तो खुद के 'जिहादी मॉड्यूल' भी बना लिए, जिनके नाम मजहबी संदर्भों से प्रेरित थे, जैसे गजवा-ए-हिंद के नाम पर सक्रिय कई छोटे समूह। ये संगठन मजहबी मान्यताओं की मनचाही व्याख्याएं करके, उसे 'धर्मयुद्ध' का रूप देकर अत्याचार, जनसंहार और हिंसा को जायज ठहराते हैं। समय-समय पर इन पर फतवे भी जारी हुए, लेकिन कट्टरपंथियों पर उनका कोई असर नहीं पड़ा।जिहादी आतंक कोई आत्मस्फूर्त हिंसा नहीं बल्कि एक घिनौनी विचारधारा का परिणाम है। यह विचारधारा मजहबी ग्रंथों की विकृत व्याख्याओं पर आधारित है। अब जब डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक भी इस विचारधारा का शिकार होने लगें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या कहीं गहरे छिपी है। सरकार, पुलिस और एजेंसियां अकेले इस विचारधारात्मक युद्ध को नहीं जीत सकती, यह समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। परिवारों, शिक्षण संस्थानों, धार्मिक समूहों और सामाजिक नेतृत्व को मिलकर यह समझना होगा कि कट्टरपंथ कैसे जन्म लेता है और कैसे फैलता है।

व्हाइट कॉलर टेरर की सबसे बड़ी ताकत यही है कि यह संदेह के दायरे से बाहर रहता है। समाज में सम्मानित होने के कारण डॉक्टर, इंजीनियर या आईटी विशेषज्ञ कोई हथियार लेकर नहीं घूमते। वे किसी सूची में नहीं होते। उनका कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं होता। वे तकनीक, बैंकिंग, डिजिटल कम्युनिकेशन, एन्क्रिप्शन और साइबर सुरक्षा के विशेषज्ञ होते हैं। यही कारण है कि वे निगरानी तंत्र को चकमा देने में सफल हो जाते हैं। वे वीपीएन, क्रिप्टो ट्रांजैक्शन, डार्क वेब चैट, प्रोटॉन मेल और ऑटो-डिलीट चैट का इस्तेमाल करते हैं। वे विस्फोटकों की खरीद-फरोख्त के लिए फर्जी पहचान बनाते हैं। उनके खाते, उनके लेन-देन और उनकी यात्राएं सामान्य नागरिक जैसे दिखते हैं। यही कारण है कि एजेंसियों के लिए इनके व्यवहार का पैटर्न पहचानना ही सबसे कठिन चुनौती बन जाता है।

आज आतंकवादी संगठनों की रणनीति बदल चुकी है। वे अब जंगलों या सीमाओं पर नहीं बल्कि विश्वविद्यालयों, अस्पतालों, लैब्स और तकनीकी संस्थानों में नए सदस्य खोजते हैं। टेलीग्राम और सिग्नल पर 'भाईजान', 'शहीद', 'मुजाहिद', 'काफिरों के खिलाफ जंग' जैसे भावनात्मक शब्दों में संदेश भेजे जाते हैं। ऐसे संदेश धार्मिक, सामाजिक या न्याय के नाम पर 'कथित अन्याय' का चित्र बनाते हैं और युवा धीरे-धीरे कट्टरपंथी बन जाते हैं। यह 'ब्रेन वॉशिंग' चुपचाप होती है, किसी को पता तक नहीं चलता। डॉक्टर और इंजीनियर आखिर आतंकी क्यों बन रहे हैं और आतंकवादी कौनसे नैरेटिव से प्रेरित हैं, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। हर जिहादी संगठन अपने हिंसक कृत्यों को मजहबी मान्यताओं की आड़ में सही ठहराता है। यही कारण है कि आतंक के खिलाफ होने वाले फतवों का कोई असर नहीं होता क्योंकि समस्या धार्मिक आस्थाओं की राजनीतिक और हिंसक व्याख्याओं में है। व्हाइट कॉलर आतंकी सबसे खतरनाक इसलिए हैं क्योंकि उन्हें रोकना सबसे मुश्किल है। इन पर समाज भरोसा करता है और ये विश्वास को ही हथियार बनाकर आतंक फैलाते हैं। यही कारण है कि अब भारत को सुरक्षा का एक ऐसा नया फ्रेमवर्क तैयार करना होगा, जो केवल निगरानी पर आधारित न हो बल्कि रैडिकलाइजेशन को रोकने के लिए शिक्षा, समाज और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में व्यापक सुधार भी करे।

बहरहाल, एजेंसियों को अब व्यवहार आधारित एआई निगरानी, डिजिटल फुटप्रिंट विश्लेषण, क्रिप्टो-ट्रैकिंग और इंटरनेशनल डेटा-शेयरिंग की दिशा में और मजबूत कदम उठाने होंगे। शिक्षण संस्थानों में साइबर-रेडिकलाइजेशन पर जागरूकता अभियान चलाने होंगे। धार्मिक नेतृत्व को कट्टरपंथी व्याख्याओं के खिलाफ स्पष्ट और ठोस संदेश देने होंगे। लाल किले का धमाका और उससे जुड़ा व्हाइट कॉलर मॉड्यूल स्पष्ट चेतावनी है कि अगली लड़ाई जंगलों या सीमा पर नहीं होगी बल्कि क्लासरूम, लैब, अस्पताल, ऑफिस और वर्चुअल दुनिया में लड़ी जाएगी। यदि हमने इस खतरे को अभी नहीं समझा तो आतंक का यह नया चेहरा उतना ही विनाशकारी होगा, जितना हमने पहले कभी नहीं देखा। ऐसे में भारत की सुरक्षा केवल हथियारों पर नहीं बल्कि समाज के नैतिक ढ़ांचे, शिक्षण संस्थानों की जागरूकता और नागरिकों की सतर्कता पर निर्भर है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

रेलवे की सबसे बड़ी आवश्यकता है सुरक्षा का वास्तविक आधुनिकीकरण

- योगेश कुमार गोयल

भारत की रेल पटरियां देश की धमनियां कही जाती हैं, जो प्रतिदिन करोड़ों लोगों को उनके गंतव्य तक पहुंचाती हैं, जो अर्थव्यवस्था का इंजन चलाती हैं, जो इस विशाल देश की सामाजिक-सांस्कृतिक एकता का प्रतीक हैं लेकिन जब इन्हीं पटरियों पर बार-बार मौत की चीखें गूंजती हैं तो सवाल केवल हादसों का नहीं रहता बल्कि उस पूरे तंत्र की आत्मा पर उठता है। बिलासपुर के लाल खदान में हुआ हालिया रेल हादसा इसी गहरी लापरवाही का ताजा उदाहरण है, जहां एक मेमू ट्रेन मालगाड़ी से टकरा गई, 11 यात्रियों की मौत हो गई और 25 से ज्यादा घायल हो गए। इंजन मालगाड़ी के गार्ड केबिन पर चढ़ गया और वह मंजर किसी युद्धस्थल से कम नहीं था।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर की यह दुर्घटना देश के लिए महज एक और संख्या नहीं है बल्कि इस बात की प्रतीक है कि भारत के रेल तंत्र में तकनीक, सतर्कता और जवाबदेही का घोर अभाव है। बिलासपुर कलेक्टर के अनुसार, ट्रेन कोरबा से बिलासपुर के लिए रवाना हुई थी और गतौरा-बिलासपुर के बीच मालगाड़ी से टकरा गई। इस टक्कर ने एक बार फिर यह उजागर कर दिया कि देश में रेलवे की सुरक्षा व्यवस्था आज भी 'कागज पर कवच' से ज्यादा कुछ नहीं है। हादसे की भयावहता के साथ जब हम इसी साल के कुछ अन्य रेल हादसों पर नजर डालते हैं तो सिहरन-सी उठती है।

महाराष्ट्र के ठाणे में जून 2025 में चार यात्रियों की मौत केवल इसलिए हुई थी क्योंकि भीड़भाड़ वाली दो लोकल ट्रेनों में पायदान पर लटकते यात्रियों के बैग आपस में टकरा गए थे। बिहार के कटिहार में जून 2025 में अवध असम एक्सप्रेस रेलवे ट्रॉली से टकरा गई, जिससे एक ट्रॉलीमैन की मौत और चार कर्मचारी गंभीर घायल हुए। मार्च में ओडिशा के कटक जिले में बेंगलुरू-कामाख्या सुपरफास्ट एक्सप्रेस के 11 डिब्बे पटरी से उतर गए थे। अप्रैल 2025 में झारखंड के साहेबगंज में दो मालगाड़ियों की टक्कर में दो लोगों की मौत हुई। जुलाई 2025 में उसी जिले के बरहड़वा में बिना लोको पायलट की 14 बोगियां तेज रफ्तार से दौड़ती हुई दूसरी मालगाड़ी से जा टकराईं।

बिलासपुर का हादसा इस साल का सबसे बड़ी रेल दुर्घटना बन चुका है। यह स्पष्ट संकेत है कि हादसे अब अपवाद नहीं बल्कि एक भयानक पैटर्न बन चुके हैं। हर बार रेल मंत्रालय बयान देता है, 'दोषियों पर कार्रवाई होगी', 'मुआवजा दिया जाएगा', 'जांच समिति गठित की गई है' और फिर कुछ ही दिनों में सब भुला दिया जाता है। सवाल है कि क्या रेलवे अब केवल 'प्रतिक्रिया देने वाला तंत्र' बन गया है, जहां कार्रवाई केवल तभी होती है, जब हादसा हो चुका होता है? भारत में रेल हादसों का इतिहास उतना ही पुराना है, जितनी रेल सेवा स्वयं। भारत में हर साल बहुत बड़ी संख्या में होने वाले रेल हादसों में से करीब 70 प्रतिशत हादसे मानव त्रुटि के कारण होते हैं यानी या तो सिग्नलिंग सिस्टम में गलती या ट्रैक निरीक्षण में लापरवाही या फिर ट्रेन संचालन में मानवीय भूल। शेष हादसे तकनीकी खराबी, पुरानी पटरियों, रखरखाव की कमी और ओवरलोडिंग के कारण होते हैं।

इन तथ्यों से यह साफ हो जाता है कि भारत की रेल प्रणाली में सुरक्षा संस्कृति का अभाव है। यहां तकनीक पर निवेश से अधिक जोर घोषणाओं पर है। बीते वर्षों से 'कवच' सिस्टम को लेकर खूब प्रचार किया गया, कहा गया कि यह एक ऐसा स्वदेशी एंटी-कोलिजन सिस्टम है, जो दो ट्रेनों को टकराने से बचाएगा लेकिन आज की हकीकत यह है कि देश के केवल 4 प्रतिशत रेल नेटवर्क पर ही कवच लागू हुआ है, बाकी 96 प्रतिशत ट्रैक आज भी मानव सतर्कता पर निर्भर हैं और यही सबसे बड़ा खतरा है।यह दुर्भाग्य है कि जिस भारतीय रेलवे को 'विश्व की चौथी सबसे बड़ी रेल व्यवस्था' कहा जाता है, वहां अब भी अधिकांश ट्रैक ब्रिटिश कालीन तकनीक पर चल रहे हैं। ट्रेन ड्राइवरों को 8 से 12 घंटे तक बिना विश्राम रेल चलाने की मजबूरी, सिग्नलिंग उपकरणों की खराबी और निरीक्षण प्रणाली की औपचारिकता, ये सब मिलकर दुर्घटना की जमीन तैयार करते हैं।

ऐसी किसी भी घटना के बाद हर बार राजनीतिक बयानबाजी शुरू होती है, रेल मंत्री हादसे की उच्चस्तरीय जांच का ऐलान करते हैं और कुछ हफ्तों बाद कोई नई परियोजना या उद्घाटन के बीच वह घटना जनता की स्मृति से मिट जाती है लेकिन जो परिवार अपनों को खो चुके होते हैं, उनके लिए वह हादसा जीवनभर की सजा बन जाता है।

भारत में आज रेलवे की सबसे बड़ी आवश्यकता है सुरक्षा का वास्तविक आधुनिकीकरण। केवल कवच सिस्टम ही नहीं बल्कि ट्रैक मॉनिटरिंग के लिए ड्रोन सर्वे, स्वचालित सिग्नलिंग, लोको पायलट के थकान-निगरानी उपकरण और रीयल-टाइम संचार प्रणाली की अनिवार्यता। 2024 में रेलवे ने दावा किया था कि 2027 तक 50,000 किलोमीटर नेटवर्क कवच से लैस होगा लेकिन आज की प्रगति देखकर यह लक्ष्य किसी दिवास्वप्न जैसा लगता है। नवंबर 2024 तक कवच सिस्टम लगभग 1,548 किलोमीटर ट्रैक पर लागू हो चुका था और उसके बाद से धीमी गति से इसका विस्तार जारी है। ऐसे में 2027 तक 50,000 किलोमीटर कवच से लैस करने का लक्ष्य प्राप्त करना अभी बहुत चुनौतीपूर्ण दिख रहा है और लक्ष्य से काफी पीछे है। विस्तृत कवच नेटवर्क के लिए काफी संसाधन और समय की आवश्यकता है। सवाल यह भी है कि जब देश अंतरिक्ष में चंद्रयान उतार सकता है तो पटरियों पर सुरक्षित यात्रा क्यों नहीं सुनिश्चित कर सकता? यह केवल तकनीक का नहीं, प्राथमिकता का प्रश्न है। जब तक सुरक्षा को मुनाफे से ऊपर नहीं रखा जाएगा, जब तक रेल बजट में सुरक्षा खंड को लागत नहीं बल्कि निवेश नहीं माना जाएगा, तब तक यह रक्तरंजित यात्रा जारी रहेगी।

बहरहाल, समय आ गया है, जब रेल हादसों को मात्र दुर्घटनाएं कहकर टाला नहीं जा सकता क्योंकि ये घटनाएं अब प्रशासनिक अपराधों का रूप ले चुकी हैं। हर साल निर्दोष नागरिकों की जानें जाती हैं और जिम्मेदारी जांच रिपोर्टों की धूल में दबी रह जाती है। देश को अब उस मानसिकता से बाहर निकलना होगा, जहां 'हादसे के बाद कार्रवाई' ही नीति बन चुकी है। आवश्यकता है ऐसी व्यवस्था की, जो दुर्घटनाओं से पहले सतर्कता और रोकथाम सुनिश्चित करे। यात्रियों की सुरक्षा कोई दया नहीं, उनका संवैधानिक अधिकार है, जो केवल कागज पर नहीं, पटरियों पर भी सुरक्षित होना चाहिए। जब तक हर ट्रेन यात्रा भय से नहीं, विश्वास से शुरू और समाप्त नहीं होती, तब तक भारतीय रेल प्रगति की नहीं प्रतीक नहीं बनेगी। सच्चा विकास तभी होगा, जब हर गंतव्य तक पहुंचने वाली ट्रेन हर यात्री को सुरक्षित जीवन की गारंटी दे सके।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

पंच प्रण का महत्वपूर्ण मुद्दा : साम्राज्यवादी मानसिकता से छुटकारा

हृदयनारायण दीक्षित

भारतीय स्वाधीनता को मिले आज 78 वर्ष हो गए। देश ने विकास के नए अंतरिक्ष स्पर्श किए हैं, लेकिन अंग्रेजीराज के और उसके बाद भी साम्राज्यवादी परंपराएं विद्यमान हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि अगले 20 वर्षों में गुलामी के प्रतीक समाप्त करेंगे। भारत का मन बदल रहा है। आत्मनिर्भरता बढ़ी है। संप्रभु राष्ट्र राज्य किसी दूसरे देश की सभ्यता का अनुकरण नहीं करते। साम्राज्यवादी मानसिकता से छुटकारा पाना पंच प्रण में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। प्रधानमंत्री ने उचित ही इस मामले को फिर से दोहराया है।

स्वाधीनता संग्राम के समय गांधीजी का जोर भी इस बात पर था।

ब्रिटिश संसद में लॉर्ड मैकाले ने भी भारतीय संस्कृति को नष्ट करने वाले विचार व्यक्त किए थे। कहा था, उच्चतर जीवन मूल्य और उत्कृष्ट क्षमताओं को देखते हुए भारतवासियों पर तब तक विजय नहीं प्राप्त हो सकती जब तक भारत की सांस्कृतिक परंपरा की सशक्त रीढ़ नहीं तोड़ी जाती। मैकाले जानता था कि सांस्कृतिक परंपरा में ही राष्ट्र का वैभव अंतर्निहित है। गांधीजी अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध आंदोलन कर रहे थे। यह आंदोलन राष्ट्रव्यापी था। राष्ट्रीय आन्दोलनकारी अंग्रेजी सरकार के साथ ही अंग्रेजी सभ्यता से भी टकरा रहे थे। गांधीजी ने मैकाले के ज्ञान को अधम बताकर सत्याग्रही आक्रामकता का मार्ग चुना था। उन्होंने 'हिन्द स्वराज' में लिखा था, मैकाले हिन्दुस्तानियों को कमजोर मानता है। वह उसकी अज्ञान दशा है। गाँधीजी ने कहा, हिन्दुस्तानी कभी कमजोर नहीं रहे। खेतों में हमारे किसान आज भी निर्भय होकर सोते हैं, जबकि अंग्रेज और आप वहां सोने के लिए आनाकानी करेंगे।

भारतीय इतिहास का विरूपण किया गया। यूरोपीय विद्वानों ने इतिहास के साथ छल किया। आर्य भारत के मूल निवासी हैं। उन्हें योजनाबद्ध तरीके से विदेशी हमलावर बताया गया।

कहा गया कि आर्य बाहर से आए और उन्होंने यहां की सभ्यता नष्ट कर दी। साम्राज्यवादी शक्तियों का तर्क था कि भारत में शक और हूण आए थे। सातवीं शताब्दी में इस्लाम आया। हमलावरों ने देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में लूटपाट की। उन्होंने देश पर कब्जा कर लिया, फिर यहां मुगलों का शासन हो गया। उन्होंने भारतीय संस्कृति और परंपरा के अनुसार जीवन यापन को कष्टप्रद बनाया। उसके बाद ईस्ट इंडिया कंपनी आई। कंपनी यहां व्यापार करने आई थी और सत्ताधीश हो गई। लगभग 200 साल तक ब्रिटिश सत्ता ने भारत की धन संपदा को लूटने का काम किया। उन्होंने स्कूली पाठ्यक्रम को भी विदेशी रंग में रंग दिया। साम्राज्यवादी शक्तियों का तर्क था कि वह भारत के लोगों को शिक्षित कर रहे हैं। अंग्रेजीराज का विरोध करने वाले लोगों का तर्क था कि भारत विदेशी सत्ता के अधीन ही रहता है। कभी इस्लामी शासको के रूप में और कभी अंग्रेजों के रूप में। उनकी माने तो भारत एक होटल जैसा है। यहां विदेशी आते हैं। लूटपाट करते हैं। आर्यों को हमलावर बताना भी इसी रणनीति का हिस्सा था।

अंग्रेजों द्वारा प्रचारित आर्य आक्रमण का कोई साक्ष्य इतिहास में नहीं मिलता। डॉक्टर अम्बेडकर ने भी 'हू वेयर शूद्राज' में आर्यों आक्रमण की बात को गलत बताया है। उन्होंने कहा कि आर्यों का सबसे बड़ा ग्रंथ ऋग्वेद है। ऋग्वेद में कहीं भी आर्य आक्रमण नहीं मिलता। डॉ. अम्बेडकर ने भारत में बहने वाली नदियों का उल्लेख किया है। ऋग्वेद के ऋषि यहां की नदियों के गीत गाते हैं। अगर आर्य दूसरे देश से आए थे, तो उनके साहित्य में वहां की नदियों के उल्लेख क्यों नहीं है? ऋग्वेद की सबसे प्रिय दो नदियां हैं। सरस्वती और सिन्धु। सिन्धु प्रत्यक्ष हैं और सरस्वती किसी प्राकृतिक घटना के कारण विलुप्त हो गईं थीं। सरस्वती की शोध जारी है। वैदिक संस्कृति को इतिहास से बाहर करना, साम्राज्यवादी साजिश का ही हिस्सा है। इस मनोग्रंथि से शीघ्रातिशीघ्र छुटकारा पाने की आवश्यकता है।

लगभग 200 वर्ष के लंबे शासन में भारत पर अंग्रेजी सभ्यता के प्रभाव पड़ रहे थे। कुछ लोग अंग्रेजों को प्रशंसा की दृष्टि से देखते थे। कुछ लोग अंग्रेजों को भारतीय राष्ट्र निर्माण का श्रेय दे रहे थे। गांधीजी ने इस बात को गलत बताया और कहा कि भारत एक प्राचीन राष्ट्र है, पूरी अंग्रेजी सभ्यता मानवता विरोधी है। उन्होंने ब्रिटिश सभ्यता को भारत के लिए खतरनाक बताया।

दरअसल, अंग्रेजों का ज्ञान उधार का है। प्राचीन रोम और यूनान यूरोप के प्रेरणास्रोत रहे हैं। भारत का दर्शन जब धरती आकाश नाप रहा था, तब तक अंग्रेजों की अपनी कोई दार्शनिक परंपरा विकसित नहीं हो पाई थी। आखिरकार भारत के लोग कालवाह्य सभ्यताओं के चक्कर में क्यों फंसे हुए हैं? उन्होंने लिखा, जो रोम और ग्रीस गिर चुके हैं, उनकी किताबों से यूरोप के लोग सीखते हैं। उन्होंने लिखा, सभ्यता वह आचरण है, जिससे व्यक्ति अपना फर्ज अदा करता है। भारत आदिकाल से ही सामूहिक जीवन में है, इसीलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। पूर्वजों ने परस्पर मेल मिलाप का आचार शास्त्र विकसित किया था। सामाजिक संगठन की मजबूती के लिए अनेक स्तर पर प्रयास करने होते हैं। भारतीय ऋषियों ने, सबके साथ-साथ चलने, परस्पर संवाद करने और सभा समितियों के माध्यम से कर्तव्य निर्धारित करने की व्यवस्था की है।

ऋग्वेद के आखिरी सूक्त में ऋषि कहते हैं, हम साथ-साथ चलें-संगच्छध्वं-संवदध्वं-हम साथ-साथ वार्तालाप करें। हमारी समितियां समान हों। मन समान हों। पूर्वज भी ऐसी ही उपासना करते रहे हैं, लेकिन ब्रिटिश सत्ता अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहती थी। गांधी जी ने लिखा, अंग्रेज हिंदुस्तानी बनकर रहे तो हम उनको यहां समावेश कर लेंगे। भारत की सभ्यता की क्षति राष्ट्रवादियों के बर्दाश्त के बाहर थी। गांधीजी ने लिखा, अंग्रेज अगर अपनी सभ्यता के साथ रहना चाहें, तो उनके लिए हिंदुस्तान में जगह नहीं है। यह गांधीजी ने बहुत बड़ी बात कह दी है। उन्हें अपना भारतीयकरण करना चाहिए। ईसाईकरण भारतीय सभ्यता पर खतरा है। ईसाई मिशनरियां राष्ट्रीय चरित्र बिगाड़ रही हैं। अन्य भी कई वर्ग भारत में ऐसा ही कर रहे हैं।

स्वाधीनता आन्दोलन भारतीय संस्कृति, दर्शन और सभ्यता का ही प्रतिनिधि था। ब्रिटिश सत्ता व सभ्यता से सीधा संघर्ष करने के लिए गांधीजी ने अनेक विदेशी विद्वानों का उल्लेख किया। उन्होंने 'इंडियन एम्पायर' पुस्तक से तमाम उद्धरण दिए। उन्होंने मैक्समूलर के लेखन से भारतीय दर्शन की श्रेष्ठता सिद्ध करने वाले अनेक उदाहरण दिए। उन्होंने एच. एस. मेन की पुस्तकों से पाणिनि के व्याकरण और भारतीय भाषा विज्ञान की प्राचीनता वाले हिस्से उद्धरत किए। यूरोप के पास विश्व मानवता को देने के लिए कुछ नहीं था। दर्शन यूनान की उधारी है। चिकित्सा विज्ञान भारत से अरब गया था और अरब से यूरोप। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार गणित के अंक भारत में खोजे गए। ऐसे अनेक उल्लेख संभव हैं। नाट्य शास्त्र का उद्भव भारत में हुआ। दुनिया का पहला अर्थशास्त्र कौटिल्य ने भारत में लिखा। प्राचीन भारत की बड़ी उपलब्धियां हैं। उन पर गर्व करना चाहिए। लेकिन साथ में यह भी देखना है कि जिस प्राचीन भारत की उपलब्धियां गौरवशाली हैं, यहां पिछले 500 वर्षों में वैज्ञानिक आविष्कार कम क्यों हुए हैं?

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

IPL 2026 के लिए 8 टीमों के कप्तान कनफर्म, 2 फ्रेंचाइजी के लीडर साफ नहीं, देखें लिस्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। आईपीएल 2026 के लिए हाल ही में सभी फ्रेंचाइजियों ने अपनी रिटेन और रिलीज खिलाड़ियों की लिस्ट जारी की थी। बता दें कि 2026 का मिनी ऑक्शन अगले महीने 16 दिसंबर को अबू धाबी में होने वाला है। ऑक्शन में कोलकाता के पास सबसे बड़ा पर्स होगा। ऑक्शन से पहले टीमों ने अपने कई प्लेयर्स रिलीज किए हैं। हालांकि, ऑक्शन से पहले आईपीएल 2026 के लिए 10 में से 8 फ्रेंचाइजियों के कप्तान कनफर्म हो गए हैं। आइये जानते हैं उनके बारे में।

चेन्नई सुपर किंग्स (रुतुराज गायकवाड़)

चेन्नई सुपर किंग्स के लिए आईपीएल 2026 में कप्तानी रुतुराज गायकवाड़ करने वाले हैं। फ्रेंचाइजी ने इसकी पुष्टि भी कर दी है। संजू सैमसन के आने के बाद भी गायकवाड़ ही टीम के कप्तान रहेंगे।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (रजत पाटीदार)

आईपीएल 2026 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान रजत पाटीदार होंगे। पाटीदार को फ्रेंचाइजी ने रिटेन किया है। उन्होंने अपनी कप्तानी में आरसीबी को आईपीएल 2025 का खिताब जिताया था।

मुंबई इंडियंस (हार्दिक पंड्या)

मुंबई इंडियंस के लिए कप्तानी आईपीएल 2026 में हार्दिक पंड्या करने वाले हैं। पंड्या आईपीएल 2024 में वापस मुंबई इंडियंस आए थे। उन्होंने आने के बाद रोहित से कप्तानी टेक ओवर की थी।

सनराइजर्स हैदराबाद (पैट कमिंस)

सनराइजर्स हैदराबाद के लिए आईपीएल 2026 में कप्तानी पैट कमिंस ही करने वाले हैं। फ्रेंचाइजी ने इसकी पुष्टि कर दी है।

पंजाब किंग्स (श्रेयस अय्यर)

पंजाब किंग्स के लिए आईपीएल 2026 में कप्तानी श्रेयस अय्यर ही करते हुए नजर आएंगे। अय्यर ने आईपीएल 2025 में पंजाब को अपनी कप्तानी में फाइनल तक पहुंचाया था।

लखनऊ सुपर जायंट्स (ऋषभ पंत)

इंडियन प्रीमियप लीग 2026 में ऋषभ पंत लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए कप्तानी करते हुए नजर आएंगे।

कप्तान बदला, भाग्य वही रहा, ऋषभ पंत भी नहीं तोड़ सके टीम इंडिया के टॉस हारने का सिलसिला

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और साउथ अफ्रीका के बीच सीरीज के दूसरे टेस्ट मैच के साथ ही भारतीय टेस्ट वेन्यू में गुवाहाटी का नाम 30वें नंबर पर जुड़ गया है। नए टेस्ट सेंटर के साथ ही इस मैच का टॉस उछलते ही टीम इंडिया को नया कप्तान भी मिल गया।

शुभमन गिल के गर्दन में लगी चोट के कारण इस टेस्ट की टीम से बाहर होने के बाद विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को नया कप्तान बनाया गया है, जो भारत के 95 साल से ज्यादा के टेस्ट इतिहास में टीम के 38वें टेस्ट कप्तान बन गए हैं। हालांकि नया कप्तान भी टीम इंडिया के लिए कम से कम टॉस के मामले में नया भाग्य लेकर नहीं आ पाया है। सिक्के की उछाल शनिवार (22 नवंबर) को गुवाहाटी के बरसापारा स्टेडियम में पंत के पक्ष में ना आकर साउथ अफ्रीका के कप्तान टेम्बा बावुमा के इशारे पर गिरता हुआ दिखाई दिया। इसके साथ ही साउथ अफ्रीका ने पहले से ही जताई जा रही उम्मीद के अनुसार लाल मिट्टी वाली इस पिच पर पहले बल्लेबाजी ली है।

पिछले 9 में से बार टॉस हार चुका है अब भारत

भारतीय क्रिकेट टीम के लिए टेस्ट मैच की टॉस पिछले 9 मैच से फेवर में नहीं आई है। पिछले 9 टेस्ट मैच में महज एक बार टीम इंडिया टॉस जीत पाई है, जबकि 8 बार विपक्षी कप्तान ही सिक्के की उछाल को सही परखने में सफल रहे हैं। इसी साल इंग्लैंड में पांच टेस्ट मैच की सीरीज में शुभमन गिल कप्तान के तौर पर एक बार भी टॉस नहीं जीत पाए थे।

हालांकि यह सीरीज 2-2 से बराबर रखकर टीम इंडिया ने टॉस की हार को सीरीज गंवाने के दर्द में बदलने से रोक दिया था। इसके बाद गिल ने दिल्ली टेस्ट में वेस्टइंडीज के खिलाफ टॉस जीता था, लेकिन उसके खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में और पिछले सप्ताह कोलकाता टेस्ट में साउथ अफ्रीका के खिलाफ भी वे टॉस गंवा बैठे थे।

कोलकाता में इसका बड़ा नुकसान टीम इंडिया को भुगतना पड़ा था, जहां उसे बेहद टर्निंग पिच पर चौथी पारी खेलनी पड़ी थी। इसके चलते टीम 124 रन के टारगेट का भी पीछा नहीं कर सकी और ऊंचे-नीचे बाउंस के सामने 97 रन पर आउट होकर टेस्ट मैच बुरी तरह हार गई थी। हालांकि पंत ने टॉस हारने का ज्यादा अहमियत नहीं दी है। उन्होंने कहा है कि पिच बल्लेबाजी के लिए अच्छा लग रहा है, लेकिन इस पर पहले गेंदबाजी करना भी बुरा विकल्प नहीं है।

भारत के दूसरे विकेटकीपर-बल्लेबाज कप्तान

ऋषभ पंत ने इस टेस्ट मैच में कप्तान के तौर पर शुरुआत करके एक और इतिहास रचा है। पंत भारत के 38वें कप्तान बन गए हैं, लेकिन वे विकेटकीपर-बल्लेबाज के तौर पर कप्तान बनने वाले भारत के महज दूसरे प्लेयर हैं। उनसे पहले महेंद्र सिंह धोनी देश के पहले विकेटकीपर-बल्लेबाज कप्तान बने थे।

श्रेयस अय्यर की अभी नहीं होगी वापसी, 2 महीने बाद होगा अगला स्कैन, फिर...

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को ऑस्ट्रेलिया दौरे पर चोट का सामना करना पड़ा था. सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए तीसरे वनडे मैच में उनकी स्पिलिन में चोट आ गई थी. ये घटना कैच पकड़ते समय घटी थी. जिसके बाद उन्हें हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था. इंटरनल ब्लीडिंग के चलते उनका ऑपरेशन भी करना पड़ा था. अब वह अपनी चोट से उभर रहे हैं. लेकिन क्रिकेट के मैदान पर उनकी वापसी के लिए फैंस को लंबा इंतजार करना पड़ेगा.

श्रेयस अय्यर की वापसी पर बड़ा अपडेट

टीम इंडिया को 30 नवंबर से साउथ अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलनी है. लेकिन इस सीरीज में श्रेयस अय्यर की वापसी ना के बराबर मानी जा रही है. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अय्यर अभी भी कम से कम तीन महीने और मैदान से बाहर रहेंगे. हालांकि, श्रेयस अय्यर की सेहत में सुधार हो रहा है. अय्यर ने हाल ही में अपने घर के पास अल्ट्रासोनोग्राफी स्कैन करवाया था. जिसके मुताबिक, उनकी हीलिंग सही दिशा में है. लेकिन उन्हें अभी कोई भी ट्रेनिंग या एक्सरसाइज से दूर रहना होगा.

रिपोर्ट्स के मुताबिक, दो महीने पूरे होने पर श्रेयस अय्यर को एक और स्त स्कैन करवाना होगा, जिसके बाद उनकी वापसी पर फैसला लिया जाएगा.

स्कैन के बाद सब कुछ सही रहता है तो श्रेयस बेंगलुरु स्थित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (COE) में अपनी रिहैब शुरू कर पाएंगे. यानी अय्यर न्यूजीलैंड के खिलाफ अगले साल जनवरी में होने वाली सीरीज से भी चूक सकते हैं. वहीं, कुछ रिपोर्ट्स में ये भी दावा किया जा रहा है कि अय्यर की आईपीएल 2026 से पहले वापसी की संभावना नहीं है.

कैसे लगी थी चोट?

दरअसल, सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज एलेक्स कैरी का कैच लपकने के दौरान श्रेयस जमीन पर गिर गए थे. इस दौरान वह जोर से जमीन से टकराए थे और खड़े भी नहीं हो सके थे. दर्द से कराहते देख बीसीसीआई की मेडिकल टीम तुरंत उन्हें मैदान से बाहर ले गई थी और चोट की पहचान कर ली गई थी. फिर बीसीसीआई की मेडिकल टीम ने सिडनी और भारत के विशेषज्ञों के साथ मिलकर श्रेयस का इलाज किया. वह हाल ही में भारत लौटे हैं. चोट के चलते उन्हें टीम के लिए वापस भारत के लिए उड़ान नहीं भरी थी.

भारत और पाकिस्तान टी20 विश्व कप के एक ही ग्रुप में

एजेंसी

नई दिल्ली। दुबई, 22 नवम्बर (वार्ता) भारत और श्रीलंका, जो अगले साल की शुरुआत में ट्वेंटी20 वर्ल्ड कप के संयुक्त मेजबान हैं, उन्हें अलग-अलग ड्रॉ मिले हैं। टॉप रैंक वाली भारत को, यकीनन, एक आसान क्लस्टर में रखा गया है - कुछ ऐसा जो पाकिस्तान भी क्लेम कर सकता है - लेकिन श्रीलंका शायद उतना लकी महसूस न करे। आइलैंड देश (आईसीसी रैंकिंग में नंबर 8) को तीन और फुल-मेंबर टेस्ट खेलने वाली टीमों - ऑस्ट्रेलिया (नंबर 2), ज़िम्बाब्वे (नंबर 11) और आयरलैंड (नंबर 12) - के साथ ओमान (नंबर 20) के साथ ग्रुप में रखा गया है। यह ग्रुप ऑफ डेथ हो सकता है।

दूसरी ओर, भारत और पाकिस्तान (नंबर 7) ही अपने ब्रैकेट में टेस्ट खेलने वाले देश हैं, जबकि नीदरलैंड्स (नंबर 13), नामीबिया (नंबर 15) और अमेरिका (नंबर 18) पांच टीमों की लाइनअप को पूरा करते हैं। हर पूल से दो टीमें सुपर आठ स्टेज के लिए क्वालीफाई कर रही हैं, इसलिए चैंपियनशिप के दूसरे वीकेंड - 15 फरवरी को होने वाले अपने ब्लॉकबस्टर मुकाबले में नतीजे चाहे जो भी हों, कट्टर दुश्मनों के लिए अगले राउंड में पहुंचना आसान होना चाहिए।

वैभव सूर्यवंशी ने 32 गेंदों पर ठोका था शतक, क्या साउथ अफ्रीका के खिलाफ टी20 टीम में मिलेगी जगह

एजेंसी

सीतापुर। राइजिंग एशिया कप 2025 में इंडिया ए की टीम सेमीफाइनल में बांग्लादेश ए से हारकर भले ही टूर्नामेंट से बाहर हो गई हो, लेकिन 14 साल के युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने अपने असाधारण प्रदर्शन से क्रिकेट जगत का ध्यान अपनी ओर फिर से खींच लिया है। वैभव सूर्यवंशी इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे। उन्होंने सिर्फ 4 मुकाबलों में 239 रन बनाए, जिससे उनकी प्रतिभा और फॉर्म का पता चलता है। टीम में कई सीनियर खिलाड़ियों की मौजूदगी के बावजूद, एक 14 साल के लड़के का इस लिस्ट में टॉप पर रहना कोई मामूली बात नहीं है।

सिर्फ 32 गेंदों पर ठोका था शतक

वैभव ने इसी टूर्नामेंट में यूएई ए के खिलाफ खेले गए मुकाबले में तो हद ही कर दी। उन्होंने सिर्फ 32 गेंदों पर अपना शतक पूरा किया और कुल 143 रनों की तूफानी पारी खेली। इस धमाकेदार प्रदर्शन के बाद से ही क्रिकेट विशेषज्ञों और फैंस द्वारा यह सवाल उठने लगे हैं कि वैभव को जल्द से जल्द भारत की सीनियर टीम में शामिल किया जाए।

टी20 टीम में फिट करने की चुनौती

फिलहाल, वैभव सूर्यवंशी को टी20 फॉर्मेट के लिए एक बेहतरीन खिलाड़ी माना जा रहा है। हालांकि, उन्हें सीनियर टी20 टीम में कैसे फिट किया जाए, यह सबसे बड़ा सवाल है। मौजूदा समय में भारत की टी20 टीम लगभग पूरी तरह से सेट है।

हर खिलाड़ी को अपना रोल और अपनी पोजीशन पता है। ऐसे में टी20 वर्ल्ड कप 2026 से पहले टीम के कॉम्बिनेशन के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ करना नुकसानदायक हो सकता है।

ऋषभ पंत के सामने कप्तानी वाला पहला बड़ा सवाल, नंबर-4 पर खुद उतरें या तलाश करेंगे कोई और

एजेंसी

गुवाहाटी। भारतीय क्रिकेट टीम गुवाहाटी में साउथ अफ्रीका के खिलाफ सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच खेल रही है। इस टेस्ट मैच में गर्दन की चोट के कारण शुभमन गिल नहीं खेल रहे हैं, जिनकी जगह ऋषभ पंत टीम इंडिया के 38वें टेस्ट कप्तान बने हैं। इस टेस्ट मैच से पहले जहां टीम इंडिया को नंबर-3 पोजीशन के लिए सही बल्लेबाज चुनने के सवाल से जूझना पड़ रहा था, वहीं कप्तान बनते ही पंत को इससे भी बड़ी दुविधा को हल करना होगा। दरअसल शुभमन गिल के टीम में नहीं होने से नंबर-4 बैटिंग पोजीशन भी खाली हो गई है, जिसे टीम की एंकर पोजीशन माना जाता है। इस पोजीशन पर टीम के सबसे बेहतरीन बल्लेबाज को उतारा जाता है। इसी कारण विराट कोहली के रिटायरमेंट के बाद गिल को नंबर-3 पोजीशन छोड़कर इंग्लैंड में खुद को इस पोजीशन पर शिफ्ट करना पड़ा था। गिल ने इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के खिलाफ बल्ले से बेहतरीन खेल दिखाकर साबित किया था कि वे सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली जैसे महान दिग्गजों की इस खास पोजीशन पर उनका उत्तराधिकारी बनने को पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन अब पंत को यह तय करना होगा कि वे इस पोजीशन पर खुद उतरें या किसी दूसरे बल्लेबाज को यहां उतारा जाए।

इससे समझिए कितनी खास होती है ये पोजीशन

किसी भी टीम के लिए टेस्ट मैच में नंबर-4 पोजीशन कितनी खास होती है, इसका अंदाजा कुछ आंकड़ों से लगाया जा सकता है। सचिन तेंदुलकर ने अपने करियर के शुरुआती दौर को छोड़ दें तो 200 में से 179 टेस्ट मैच में नंबर-4 पोजीशन पर ही बल्लेबाजी करते हुए 13492 रन बनाए थे। विराट कोहली ने 99 टेस्ट मैच में 7564 रन इसी पोजीशन पर बनाए, जबकि भारतीय क्रिकेट इतिहास के धुरंधरों में शामिल गुंडप्पा विश्वनाथ ने 67 टेस्ट में 4108 इस पोजीशन पर बनाए हैं। शुभमन गिल ने पिछले 8 टेस्ट इस पोजीशन पर खेले हैं, जिनमें उनके खाते में 939 रन शामिल हैं। इनमें इंग्लैंड में सीरीज बचाने वाली पारियां भी शामिल हैं। इस पोजीशन पर दिलीप वेंगसरकर, सौरव गांगुली और यहां तक कि 16 टेस्ट मैच के लिए राहुल द्रविड़ भी खेल चुके हैं।

0,0,0... 148 साल के टेस्ट इतिहास में पहली बार हुआ ऐसा, ऑस्ट्रेलिया-इंग्लैंड मैच में बना ये रिकॉर्ड

एजेंसी

नई दिल्ली। एशेज सीरीज टेस्ट क्रिकेट की सबसे बड़ी सीरीज में से एक है. इस बार ये सीरीज ऑस्ट्रेलिया में खेली जा रही है. ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की टीमों के बीच सीरीज का पहला मुकाबला पर्थ में खेला जा रहा है. इस मुकाबले में अभी तक गेंदबाजों का दबदबा देखने को मिला है. इस मुकाबले के दूसरे दिन एक ऐसा कारनामा देखने को मिला, जो टेस्ट क्रिकेट के 148 साल के इतिहास में कभी भी देखने को नहीं मिला. इस कारनामे को ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क और इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफरा आर्चर ने मिलकर अंजाम दिया.

148 साल के टेस्ट इतिहास में पहली बार हुआ ऐसा

दरअसल, इस मुकाबले की शुरुआती तीनों पारियों में ओपनर्स की ओर से खराब शुरुआत देखने को मिली. मैच का आगाज इंग्लैंड की बल्लेबाजी के साथ हुआ था. लेकिन मिचेल स्टार्क ने पहले ही ओवर में इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज जैक क्राउली को पवेलियन का रास्ता दिखा गया था. जैक क्राउली बिना खाता खोले अपना विकेट गंवा बैठे थे. यानी इंग्लैंड ने बिना कोई रन बनाए अपना पहला विकेट गंवा दिया था. इसके बाद जोफरा आर्चर ने भी इंग्लैंड की ऐसी ही शुरुआत दिलाई. जोफ्रा आर्चर ने भी पहले ही ओवर में ऑस्ट्रेलिया के ओपनर जेक वेदरल्ड को आउट किया. ऑस्ट्रेलिया ने भी ये विकेट बिना कोई रन बनाए गंवाया.

अब इंग्लैंड की दूसरी पारी का आगाज भी कुछ इसी अंदाज में हुआ. मिचेल स्टार्क ने एक बार फिर पहले ही ओवर में जैक क्राउली को अपना शिकार बना लिया. जैक क्राउली लगातार दूसरी पारी में डक पर आउट हुए. यानी इस टेस्ट मैच की शुरुआती तीनों पारियों में पहला विकेट बिना कोई रन बने गिरा, जो एक बड़ा रिकॉर्ड है. टेस्ट क्रिकेट के 148 साल के इतिहास में पहले कभी भी ऐसी घटना देखने को नहीं मिली थी.

इंग्लैंड ने हासिल की बढ़त

इस मुकाबले में अभी तक गेंदबाज हावी रहे हैं. इंग्लैंड की टीम अपनी पहली पारी में सिर्फ 172 रन बनाकर ऑलआउट हो गई थी. इस दौरान मिचेल स्टार्क ने कुल 7 विकेट चटकाए थे.

लेकिन इंग्लैंड के गेंदबाजों ने भी पलटवार किया और ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 132 रनों पर ढेर कर दी, जिसके चलते वह 40 रनों की बढ़त हासिल करने में भी कामयाब रहे. जिसके चलते ये मैच अब और रोमांचक हो गया है.

बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच खेला जाएगा एशिया कप राइजिंग स्टार्स का फाइनल, भारत हुआ बाहर

एजेंसी

नई दिल्ली। Asia Cup rising stars 2025 के फाइनल में इंडिया ए टीम नहीं पहुंच सकी है, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में श्रीलंका ए को हार का सामना करना पड़ा है। इस तरह फाइनल हो गया है कि इंडिया और पाकिस्तान के बीच इस टूर्नामेंट का फाइनल नहीं होगा, जिसकी उम्मीद की जा रही थी। फाइनल में बांग्लादेश ए और पाकिस्तान ए टीम की भिड़ंत होगी। इंडिया ए को अपने सेमीफाइनल मैच में बांग्लादेश के हाथों शर्मनाक हार मिली, जबकि पाकिस्तान ए टीम ने श्रीलंका ए को करीबी मुकाबले में 5 रनों के अंतर से हराया है।

शुक्रवार 21 नवंबर को एशिया कप राइजिंग स्टार्स 2025 का पहला सेमीफाइनल इंडिया ए और बांग्लादेश ए टीम के बीच खेला गया, जो आखिरी गेंद तक चला तो टाई रहा। इसके बाद सुपर ओवर हुआ, जिसमें इंडिया ए टीम बिना कोई रन बनाए दो विकेट गंवा दी। ऐसे में सिर्फ एक रन का लक्ष्य सुपर ओवर में बांग्लादेश के सामने था, जिसे एक ही गेंद पर बांग्लादेश ने एक विकेट खोकर हासिल कर लिया, क्योंकि विकेट गिरने के बाद अगली गेंद वाइड हो गई थी। दोनों टीमों ने 20-20 ओवर में 6-6 विकेट खोकर 194-194 रन बनाए थे।

वहीं, पाकिस्तान ए और श्रीलंका ए के बीच खेले गए दूसरे सेमीफाइनल की बात करें तो पाकिस्तान ए ने 9 विकेट खोकर 20 ओवर में 153 रनों का स्कोर खड़ा किया था। 154 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की टीम आखिरी गेंद पर 148 रनों पर ढेर हो गई और मुकाबला 5 रनों के अंतर से हार गई।

टीम इंडिया पर मंडरा रहा खतरा, फिर से दांव पर है इज्जत, गुवाहाटी में बदलेगी किस्मत?

एजेंसी

नई दिल्ली। सिर्फ 13-14 महीने पहले की बात है, जब भारत आकर सीरीज तो दूर एक टेस्ट मैच जीतना भी दूसरी टीमों के लिए सपने जैसा था. आज भी दूसरी टीमों के लिए भारतीय जमीन पर टेस्ट मैच या सीरीज जीतना आसान नहीं है. मगर इन 13 महीनों में सब कुछ बदल गया है. अब टीम इंडिया के किले में दरारें पड़ गई हैं और इन्हें छुपाना मुश्किल हो गया है. न्यूजीलैंड ने पिछले साल टीम इंडिया को पहली लेकिन सबसे तगड़ी चोट दी थी. अब साउथ अफ्रीका फिर उस जख्म को कुरेदने के करीब है. गुवाहाटी में 22 नवंबर से शुरू हो रहे दूसरे टेस्ट मैच में टीम इंडिया के सामने साउथ अफ्रीका को ऐसा करने से रोकने की चुनौती है.

न्यूजीलैंड के बाद साउथ अफ्रीका के पास मौका

अक्टूबर-नवंबर 2024 में न्यूजीलैंड ने भारत आकर टीम इंडिया को 3-0 से क्लीन स्वीप कर दिया था. ये भारतीय क्रिकेट के इतिहास की सबसे करारी और शर्मनाक हार थी. भारतीय टीम अपने घर में न्यूजीलैंड से पहली बार टेस्ट सीरीज हारी. टीम इंडिया को 2012 के बाद पहली बार घर में टेस्ट सीरीज में शिकस्त मिली थी. इन सबसे बढ़कर अपने टेस्ट इतिहास में भारतीय टीम को पहली बार घर में किसी टेस्ट सीरीज में क्लीन स्वीप का सामना करना पड़ा था. अब 13 महीने बाद साउथ अफ्रीका भी उसी घटना को दोहराने के करीब है.

कोलकाता में खेले गए पहले टेस्ट मैच में सनसनीखेज जीत दर्ज करते हुए साउथ अफ्रीका ने सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली थी. अब गुवाहाटी में भारतीय टीम को हर हाल में साउथ अफ्रीका को हराना होगा. मगर ये इतना आसान नहीं होने वाला क्योंकि गुवाहाटी की परिस्थितियां और पिच दोनों ही टीम के लिए अनजान हैं. साथ ही टीम इंडिया पहले से ज्यादा कमजोर और मनोवैज्ञानिक तौर पर दबी हुई नजर आ रही है. इसकी एक वजह कोलकाता टेस्ट में ढाई दिन के अंदर मिली हार है और दूसरी वजह कप्तान शुभमन गिल का चोट के कारण मैच से बाहर होना है.

प्लेइंग-11 के सेलेक्शन पर सबसे ज्यादा नजर

ऐसे वक्त में ऋषभ पंत टीम की कमान संभाल रहे हैं और उनके लिए ये आसान नहीं होने वाला. अपने अब तक के टेस्ट करियर में पंत ने कई मुश्किल हालातों से टीम इंडिया को बाहर निकाला है लेकिन ये स्थिति उनके लिए भी एकदम नई है क्योंकि इस बार उन्हें मैदान पर फैसले लेने होंगे, जो मैच की दशा-दिशा तय करेंगे. इसमें सबसे पहला फैसला प्लेइंग-11 को लेकर है, जो कि पिछले टेस्ट मैच में सबसे ज्यादा सवालों के घेरे में रही थी और इसके चलते ही हेड कोच गौतम गंभीर हर किसी के निशाने पर हैं.

माना जा रहा है कि टीम इंडिया दो बदलाव कर सकती है, जिसमें गिल की जगह साई सुदर्शन को और स्पिन ऑलराउंडर अक्षर पटेल की जगह बैटिंग ऑलराउंडर नीतीश कुमार रेड्डी को उतारा जा सकता है. मगर सिर्फ खिलाड़ियों के चयन से काम नहीं चलेगा, बल्कि उनका बैटिंग ऑर्डर कैसा होगा, ये भी अहम है. क्या पिछले मैच में तीसरे नंबर पर बैटिंग करने वाले वॉशिंगटन सुंदर को सुदर्शन के आने के बाद फिर से मिडिल या लोअर ऑर्डर में उतारा जाएगा? क्या गिल की जगह चौथे नंबर पर ध्रुव जुरेल या नीतीश को भेजा जाएगा? ये सवाल सबसे अहम होने वाले हैं.

गुवाहाटी में खत्म होगा साउथ अफ्रीका का इंतजार?

मैच का नतीजा जो भी होगा, वो ऐतिहासिक ही होगा क्योंकि ये मैच अपने आप में खास होने जा रहा है. पहली बार गुवाहाटी में टेस्ट क्रिकेट की एंट्री हो रही है. ये भारत का 30वां टेस्ट वेन्यू होगा, जिसकी शुरुआत 1933 में मुंबई के जिमखाना मैदान से हुई थी. अब इस खास मैच को टीम इंडिया अपने प्रदर्शन और जीत से यादगार बनाती है, इसका फैसला अगले 5 दिनों में हो जाएगा.

साउथ अफ्रीका के पास भी यहां इतिहास रचने का मौका है. एक ड्रॉ से ही वो सीरीज अपने नाम कर लेगी और 25 साल का इंतजार खत्म करेगी. साउथ अफ्रीका ने 1999-2000 में इकलौती बार भारत में टेस्ट सीरीज जीती थी. अब वो इंतजार खत्म हो सकता है.

अंपायर के गलत फैसले ने पाकिस्तान को दिलाई जीत, मिला फाइनल का टिकट

एजेंसी

नई दिल्ली। एशिया कप राइजिंग स्टार्स 2025 का दूसरा सेमीफाइनल मैच पाकिस्तान शाहीन और श्रीलंका ए टीम के बीच खेला गया. पहले सेमीफाइनल मैच की तरह ये मुकाबला भी काफी रोमांचक रहा और अंत में पाकिस्तान की टीम जीत हासिल करने में कामयाब रही. हालांकि, पाकिस्तानी शाहीन टीम की जीत में अंपायर के एक गलत फैसले का भी बड़ा योगदान रहा, जिसने श्रीलंका से जीत छीन ली. आखिरी ओवर में घटी इस घटना ने पूरे मुकाबले को बदलकर रख दिया.

पाकिस्तान शाहीन ने बनाए 153 रन

दोनों टीमों के बीच खेले गए इस रोमांचक मैच में श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 153 रन बनाए. इस दौरान गाजी गोर ने सबसे ज्यादा 39 रनों की पारी खेली. वहीं माज सदाकत ने 23 रनों का योगदान दिया. साद मसूद और अहमद दानियाल ने 22-22 रनों की पारी खेली, बाकी बल्लेबाज फ्लॉप रहे. दूसरी ओर श्रीलंका-ए की टीम के लिए प्रमोद मधुसूदन ने कमाल की गेंदबाजी की और चार ओवर में 29 रन देकर चार विकेट अपने नाम किए. तरवीन मैथ्यू भी 3 बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाने में कामयाब रहे.

आखिरी ओवर में श्रीलंका ने गंवाया मैच

154 रनों के टारगेट का पीछा करने उतरी श्रीलंकाई टीम ने एक दमदार शुरुआत की. टीम ने 3 ओवर में ही 40 रन का आंकड़ा छू लिया. इस दौरान लसिथ क्रोस्पुल्ले ने 7 गेंदों पर 2 चौके और 3 छक्कों की मदद से 27 रन बनाए. वहीं, विशेन हलम्बेज ने भी 27 गेंदों पर 29 रनों का योगदान दिया. लेकिन इस दोनों ओपनर्स के आउट होने के बाद श्रीलंका की पारी लड़खड़ा गई. श्रीलंका टीम आधी टीम 78 रन पर ही पवेलियन लौट गई.

लेकिन मिलन रथनायके ने एक शानदार पारी खेलकर टीम की वापसी करवाई. मिलन रथनायके ने 32 गेंदों पर 40 रन बनाए और टीम को जीत के करीब पहुंचाया. लेकिन आखिरी ओवर में वह अंपायर के एक गलत फैसले के चलते आउट हो गए. दरअसल, श्रीलंका को आखिरी 4 गेंदों पर जीत के लिए 8 रन बनाने थे. तभी अंपायर ने मिलन रथनायके को LBW आउट दे दिया. लेकिन बॉल लेग स्टंप के बाहर जा रही थी. अंपायर का ये फैसला श्रीलंका को काफी भारी पड़ा और वह आखिरी 3 गेंदों पर 2 रन ही बना सकी और 5 रन से मुकाबला गंवा दिया. अब फाइनल मैच 23 नवंबर को पाकिस्तान और बांग्लादेश की टीमों के बीच खेला जाएगा.

टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में पहली बार लंच से पहले होगा टी ब्रेक, मैच की टाइमिंग भी बदली गई

एजेंसी

नई दिल्ली। अगर आप टेस्ट क्रिकेट पसंद करते हैं तो अभी तक देखते आ रहे होंगे कि टेस्ट मैच में पहले सेशन के बाद लंच होता है और अगर पिंक बॉल टेस्ट है तो उसमें पहले सेशन के बाद सफर ब्रेक या टी ब्रेक लिया जाता है और दूसरा ब्रेक डिनर ब्रेक होता है। हालांकि, पारंपरिक टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में पहली बार ऐसा आज यानी 22 नवंबर से देखने को मिलेगा, जब किसी टेस्ट मैच में टी ब्रेक पहले सेशन के बाद लिया जाएगा और लंच ब्रेक दूसरे सेशन के बाद लिया जाएगा।दरअसल, आज यानी शनिवार 22 नवंबर से भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच गुवाहटी के बारसापारा क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाने वाले टेस्ट मैच में लंच ब्रेक से पहले टी ब्रेक लिया गया है।

परंपरा के अनुसार आमतौर पर टेस्ट मैचों में पहले लंच और फिर टी ब्रेक होते हैं, लेकिन इस खास टेस्ट में पहले टी ब्रेक और उसके बाद लंच ब्रेक होने वाला है, जो पूरी तरह से एक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व बदलाव है। इसके पीछे का कारण नियमों में बदलाव नहीं, बल्कि मौसम से जुड़ा हुआ है।दरअसल, गुवाहटी भारत के पूर्वोत्तर में है और पूर्वोत्तर भारत में सूर्योदय और सूर्यास्त जल्दी होता है।

IDBI bank में हिस्सा खरीदना चाह रहा है बैंक, रेस में शामिल!

एजेंसी

नई दिल्ली। आईडीबीआई बैंक (IDBI Bank Share) के प्राइवेटाइजेशन का इंतजार कर रहे निवेशकों को इंतजार लम्बा होता जा रहा है। रिपोर्ट्स के अनुसार कोटक महिंद्रा बैंक (Kotak Mahindra Bank) भी आईडीबीआई बैंक में हिस्सेदारी खरीदने को इच्छुक है। एनडीटीवी प्रॉफिट की रिपोर्ट ओकट्री कैपिटल और फेयरफैक्स के अलावा कोटक महिंद्रा बैंक ने भी हिस्सेदारी खरीदने में दिलचस्पी दिखाई है। हालांकि, इस पूरे मसले पर कोटक महिंद्रा बैंक की तरफ से कोई भी आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

61% हिस्सेदारी बेचने की चर्चा

केंद्र सरकार की तरफ से दिए बयान में कहा गया है कि आईडीबीआई बैंक का प्राइवेटाइजेशन वित्त वर्ष 2026 के अंत तक फाइनल हो जाएगा। मौजूदा समय में आईडीबीआई बैंक में केंद्र की हिस्सेदारी 45.48 प्रतिशत है। वहीं, एलआईसी के पास 49.24 प्रतिशत हिस्सा है। आईडीबीआई बैंक डिपार्टमेंट ऑफ इंवेस्टमेंट एंड पब्लिक एसेट मैनेजमेंट (Department of Investment and Public Asset Management) आईडीबीआई बैंक का 61 प्रतिशत हिस्सा बेचना चाह रहा है।

रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार सरकार की तरफ से हिस्सेदारी बेचने के लिए अक्टूबर से दिसंबर के बीच बोलियां मंगाई जाएंगी, यह बात सरकार के अधिकारी ने पहले कही थी। बता दें, इस बैंक की हिस्सेदारी बेचने की चर्चा सबसे पहले 2022 में शुरू हुई थी। मौजूदा समय में एलआईसी आईडीबीआई बैंक का प्रमोटर शेयरहोल्डर है।

शेयरों का प्रदर्शन IDBI बैंक

शुक्रवार को आईडीबीआई बैंक के शेयर 2.53 प्रतिशत की गिरावट के बाद बीएसई में 100.25 रुपये के लेवल पर बंद हुए थे। पिछले 6 महीने के दौरान बैंक के शेयरों की कीमतों में 6.25 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। वहीं, एक साल में आईडीबीआई बैंक के शेयरों का भाव 31.80 प्रतिशत बढ़ा है। बैंक का 52 वीक हाई 106.99 रुपये और 52 वीक लो लेवल 65.89 रुपये है। आईडीबीआई बैंक का मार्केट कैप 1.07 लाख करोड़ रुपये का है।

RVNL को मिला 180 करोड़ रुपये का काम, सोमवार को शेयर रहेंगे फोकस

नवरत्न कंपनी रेल विकास निगम लिमिटेड (Rail Vikas Nigam Ltd) के शेयर सोमवार को फोकस में रहेंगे। कंपनी को 180 करोड़ रुपये का काम मिला है। रेल विकास निगम लिमिटेड ने दी जानकारी में बताया है कि नॉर्थ ईस्टर्न रेलवे ने यह वर्क ऑर्डर दिया है।

एजेंसी

नई दिल्ली। नवरत्न कंपनी रेल विकास निगम लिमिटेड (Rail Vikas Nigam Ltd) के शेयर सोमवार को फोकस में रहेंगे। कंपनी को 180 करोड़ रुपये का काम मिला है। रेल विकास निगम लिमिटेड ने दी जानकारी में बताया है कि नॉर्थ ईस्टर्न रेलवे ने यह वर्क ऑर्डर दिया है। इस कंपनी को 24 महीने में यह काम पूरा करना है। शुक्रवार को ऋक्ष्ठ्ठरु के शेयर बीएसई में 1.58 प्रतिशत की गिरावट के बाद 314.05 रुपये के लेवल पर बंद हुआ था।

क्या है वर्क ऑर्डर

यह पीएसयू कंस्ट्रक्शन कंपनी को 2×25 च्1 ट्रैक्शन सिस्टम की डिजाइन, सप्लाई, इलेक्शन, टेस्टिंग और कमिशनिंग का काम मिला है। बता दें, यह ऑर्डर लखनऊ डिविजन के मिले प्रोजेक्ट को अपग्रेड करने से जुड़ा है।

पिछले एक साल में RVNL के शेयरों का बुरा हाल

बीते 6 महीने के दौरान रेल विकास निगम लिमिटेड के शेयरों की कीमतों में 23 प्रतिशत की गिरावट आई है। वहीं, एक साल में कंपनी के शेयरों का भाव 25 प्रतिशत गिरा है। इस दौरान सेंसेक्स इंडेक्स में 10.47 प्रतिशत की तेजी आई है। बता दें, कंपनी का 52 वीक हाई 501.55 रुपये और 52 वीक लो लेवल 295.25 रुपये है। कंपनी का मार्केट कैप 65 हजार करोड़ रुपये का है।

5 साल में 1535% का बढ़ा भाव

भले ही रेल विकास निगम लिमिटेड के शेयरों में इस साल भारी गिरावट आई है। लेकिन 2 साल में इस कंपनी के शेयरों का भाव 88 प्रतिशत की तेजी आई है। वहीं, 3 साल में रेल विकास निगम के शेयरों में 408 प्रतिशत बढ़ा है। बता दें, 5 साल में RVNL के शेयरों का भाव 1535 प्रतिशत चढ़ा है। इस दौरान सेंसेक्स इंडेक्स में 94 प्रतिशत की तेजी आई है।

लगातार डिविडेंड दे रही है कंपनी

अगस्त के महीने में कंपनी के शेयर एक्स-डिविडेंड ट्रेड किए थे। तब कंपनी ने एक शेयर पर 1.72 रुपये का डिविडेंड दिया था।

2024 में रेल विकास निगम लिमिटेड ने 2.11 रुपये का डिविडेंड दिया था। (यह निवेश की सलाह नहीं है। शेयर बाजार जोखिमों के अधीन है। किसी भी निवेश से पहले एक्सपर्ट्स की सलाह जरूर लें।)

टाटा ग्रुप की यह कंपनी कर रही विस्तार, 910 करोड़ की मंजूरी, फोकस में शेयर

एजेंसी

नई दिल्र्ली। टाटा केमिकल्स ने शुक्रवार को कहा कि उसके बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने गुजरात के मीठापुर और तमिलनाडु के कुड्डालोर में अपने प्लांट की मैन्युफैक्क्रिंग क्षमता को बढ़ाने के लिए 910 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दे दी है। टाटा केमिकल्स ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि कंपनी के निदेशक मंडल (बोर्ड) ने शुक्रवार को हुई बैठक में मीठापुर में अपने संयंत्र में डेंस सोडा ऐश मैन्युफैक्क्रिंग क्षमता को बढ़ाने के लिए 135 करोड़ रुपये के निवेश को मंजूरी दी है। इसके अलावा, कंपनी ने बताया कि बोर्ड ने तमिलनाडु के कुड्डालोर में अपने संयंत्र में 'प्रेसिपिटेटेड सिलिका' मैन्युफैक्क्रिंग क्षमता बढ़ाने के लिए 775 करोड़ रुपये के निवेश को भी मंजूरी दी है।

शेयर बाजार में कैसा है कंपनी का प्रदर्शन

शुक्रवार को कंपनी के शेयर एक प्रतिशत से अधिक की गिरावट के बाद बीएसई में 809.95 रुपये के लेवल पर बंद हुआ है। इस साल अबतक कंपनी के शेयरों की कीमतों में 22 प्रतिशत की गिरावट आई है। वहीं, एक साल में कंपनी के शेयरों का भाव 22.45 प्रतिशत टूटा है। टाटा केमिकल्स का 52 वीक हाई 1145.70 रुपये और 52 वीक लो लेवल 756.45 रुपये है। कंपनी का मार्केट कैप 20633.98 करोड़ रुपये का है।टाटा केमिकल्स के शेयरों की कीमतों में पिछले दो साल में 15 प्रतिशत की गिरावट आई है। वहीं, 3 साल में टाटा ग्रुप की इस कंपनी का शेयर 21 प्रतिशत गिरा है। हालांकि, इसके बाद भी 5 साल में कंपनी के शेयरों की कीमतों में 127 प्रतिशत की तेजी आई है। वहीं, इस दौरान सेंसेक्स इंडेक्स में 94 प्रतिशत की तेजी आई है। बता दें, 10 साल में टाटा केमिकल्स के शेयरों की कीमतों में 338 प्रतिशत की उछाल देखने को मिली है।

5000 करोड़ जुटाने की तैयारी में दिग्गज बैंक, शेयर पर ब्रोकरेज फिदा, कहा-खरीदो

एजेंसी

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के एक्सिस बैंक ने अपने कारोबार को लेकर एक बड़ी जानकारी दी है। बैक ने बताया कि वह कारोबार बढ़ाने के लिए नॉन कन्वर्टिबल डिबेंचर (एनसीडी) के जरिए 5,000 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रहा है। यह बैंक के निदेशक मंडल द्वारा मंजूर 35,000 करोड़ रुपये के फंड जुटाने की योजना का हिस्सा है। इसे निजी नियोजन के आधार पर डेब्ट सिक्योरिटीज जारी कर जुटाया जाएगा। बैंक ने कहा कि निजी नियोजन के आधार पर 5,000 करोड़ रुपये तक के पूरी तरह से भुगतान वाले, सीनियर, रेटेड, सूचीबद्ध, अनसिक्योर्ड, करयोग्य, लॉन्गटर्म डिबेंचर जारी करके फंड जुटाने का प्रस्ताव है।

शेयर का परफॉर्मेंस

एक्सिस बैंक के शेयर की बात करें तो शुक्रवार को 0.77त्न गिरकर 1275.35 रुपये पर आ गया। 20 नवंबर 2025 को शेयर की कीमत 1287 रुपये पर थी। यह शेयर के 52 हफ्ते का हाई है। इस लिहाज से शेयर शुक्रवार को थोड़ा बिकवाली मोड में आ गया। जनवरी 2025 में शेयर 934 रुपये पर था। यह शेयर के 52 हफ्ते का लो है।

शेयर का टारगेट प्राइस

ब्रोकरेज फर्म यूबीएस सिक्योरिटीज ने एक्सिस बैंक के शेयर की रेटिंग 'न्यूट्रल' से 'खरीदें' में अपग्रेड कर दी है। एक्सिस बैंक अपने 12 महीने के टारगेट प्राइस को भी ?1300 से संशोधित कर ?1500 कर दिया। यह वर्तमान कीमत से 15त्न के ग्रोथ को दिखाता है। बता दें कि पिछले छह महीनों में एक्सिस बैंक का शेयर 7त्न, 3 महीनों में 19त्न और एक महीने में 5त्न बढ़ा है। यूबीएस ने कहा कि परिचालन वातावरण अधिक अनुकूल होते जाने के साथ, एक्सिस बैंक ऋ़ण लागत, परिसंपत्ति गुणवत्ता और ऋ़ण वृद्धि में सुधार के रुझान दिखा रहा है। वैश्विक ब्रोकरेज ने यह भी पाया कि एक्सिस बैंक अपने कई समकक्षों की तुलना में बेहतर स्थिति में है।

कैसे रहे तिमाही नतीजे

चालू वित्त वर्ष की दूसरी (जुलाई-सितंबर) तिमाही में एक्सिस बैंक का प्रॉफिट 26 प्रतिशत घटकर 5,089.64 करोड़ रुपये रह गया। इससे पिछले साल की इसी तिमाही में बैंक का मुनाफा 6,917.57 करोड़ रुपये रहा था।

तिमाही में बैंक की शुद्ध ब्याज आय (एनआईआई) 13,745 करोड़ रुपये रही जो पिछले साल की इसी तिमाही की तुलना में दो प्रतिशत अधिक है।

नए लेबर कोड में किस तरह के कर्मचारियों के लिए क्या है खास, जानें सभी प्रश्नों के जवाब

एजेंसी

नई दिल्ली ।नए श्रम कानून की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि सभी क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर और सुरक्षा मिलेगी। इससे महिलाओं की आय और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। अब महिलाएं अपनी सहमति से रात में भी काम कर सकेंगी।नए कानून के मुख्य प्रावधान में समान कार्य के लिए समान वेतन, महिलाओं के लिए रात की शिफ्ट में काम की अनुमति, 26 सप्ताह का सवेतन मातृत्व अवकाश, शिशुगृह सुविधाओं तक अनिवार्य पहुंच, घर से काम करने के कुछ विकल्प भी शामिल किए गए हैं।

गिग और प्लेटफॉर्म कर्मचारियों को पहचान- पहली बार गिग वर्क यानी अस्थाई कर्मी, प्लेटफॉर्म वर्क और एग्रीगेटर कंपनियों को कानूनी रूप से परिभाषित किया गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर काम करने वालों को अब कल्याणकारी योजनाओं में शामिल किया जाएगा।

एग्रीगेटर्स को अपने सालाना कारोबार का 12 एक विशेष कल्याण कोष में जमा करना होगा। यह राशि अधिकतम कुल भुगतान के 5त्न तक सीमित होगी। यह कोष गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा को मजबूती देगा।

एमएसएमई को बड़ी राहत

सरकार ने आधार से जुड़ा यूनिवर्सल अकाउंट नंबर शुरू किया है। डिलीवरी, कैब, लॉजिस्टिक्स और मोबिलिटी सेक्टर में काम करने वालों की घर और कार्यस्थल के बीच की यात्रा के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं को अब रोजगार से जुड़ी दुर्घटना माना जाएगा।

पहले दिन ही भर गया यह IPO, ग्रे मार्केट में 100 पार प्रीमियम, दांव लगाने के अभी मौके

एजेंसी

नई दिल्ली । सुदीप फार्मा आईपीओ को पहले दिन रिटेल निवेशकों की तरफ से अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। पहले दिन यह आईपीओ पूरी तरह से भर गया है। पहले दिन यह आईपीओ 1.43 गुना सब्सक्राइब किया गया है। रिटेल कैटगरी में आईपीओ को पहले दिन 1.53 गुना, क्यूआईबी में 0.09 गुना और एनआईआई में 3.01 गुना सब्सक्रिप्शन मिला था। बता दें, कल यानी 21 नवंबर को आईपीओ के सब्सक्रिप्शन का पहला दिन था। यह आईपीओ 25 नवंबर तक खुला रहेगा।

जीएमपी 100 के पार

ग्रे मार्केट में भी स्थिति आज भी अच्छी है। इंवेस्टर्स गेन की रिपोर्ट के अनुसार ग्रे मार्केट में कंपनी का आईपीओ 115 रुपये के प्रीमियम पर आज ट्रेड कर रहा है। आज का जीएमपी करीब 20 प्रतिशत के लिस्टिंग गेन की ओर इशारा कर रहा है।

बीते कुछ दिनों के दौरान कंपनी के जीएमपी में गिरावट आई है। कंपनी के आईपीओ का सबसे अधिक जीएमपी 130 रुपये रहा है।

क्या है आईपीओ का साइज

सुदीप फार्मा आईपीओ का साइज 895 करोड़ रुपये का है। कंपनी आईपीओ के जरिए 16 करोड़ फ्रेश शेयर जारी करेगी। वहीं, ऑफर फार सेल के जरिए कंपनी 1.35 करोड़ शेयर जारी करेगी।

क्या है प्राइस बैंड

सुदीप फार्मा आईपीओ का प्राइस बैंड 563 रुपये से 593 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। कंपनी का लॉट साइज 25 शेयरों का बनाया गया है। जिसकी वजह से निवेशकों को कम से कम 14825 रुपये का इंवेस्टमेंट करना होगा। बता दें, एंकर निवेशकों के लिए यह आईपीओ 20 नवंबर को खुला था। एंकर निवेशकों से कंपनी ने 268.50 करोड़ रुपये जुटाए हैं।

सुदीप फार्मा ने आईपीओ के लिए आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज बुक रनिंग लीड मैनेजर नियुक्त किया है।

वहीं, एमयूएफजी इंटाइम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को रजिस्ट्रार नियुक्त किया गया है। बता दें, यह एक मेनबोर्ड आईपीओ आईपीओ है। जिसकी वजह से कंपनी की लिस्टिंग बीएसई और एनएसई में होगी।

वंतारा देख गदगद हुए जूनियर ट्रंप, अनंत अंबानी की खूब तारीफ

एजेंसी

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बेटे डोनाल्ड ट्रंप जूनियर इन दिनों भारत यात्रा पर हैं. वह देश घूम रहे हैं. पर्यटन स्थलों का दौरा कर रहे हैं. इसी बीच वह देश के सबसे अमीर बिजनेसमैन मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी से मिले. अनंत के साथ उन्होंने गुजरात के जामनगर स्थित वन्यजीव बचाव एवं पुनर्वास केंद्र, वंतारा का दौरा कियाय इस दौरान, उन्हें एक मंदिर में भगवान गणेश की पूजा करते हुए भी देखा गया. जूनियर ट्रंप वंतार देखकर काफी खुश हुए और उन्होंने अनंत अंबानी की उनके पशुओं के लिए किए जाने वाले काम की काफी तारीफ की.जूनियर ट्रंप ने कहा कि मैंने यहां क्या शानदार अनुभव किया. इन सभी जानवरों को ले जाने, उन्हें बचाने और उन्हें यह जिंदगी देने का नजरिया बेहतरीन है. यह मेरी जिंदगी से भी बेहतर है. यह बहुत अद्भुत है. उन्होंने अनंत से बात करते हुए कहा कि जानवरों को यहां उस हैबिटैट में देखना जो आपने बनाया है जो उनके नेचुरल हैबिटैट जैसा है एक शानदार अनुभव रहा है.

भारतीय रिजर्व बैंक की बड़ी पहल, भारत-यूरोप के बीच आसान होगी डिजिटल पेमेंट

एजेंसी

नई दिल्ली।भारत के लिए डिजिटल पेमेंट्स के मोर्चे पर एक और बड़ी उपलब्धि जुड़ गई है. भारतीय रिजर्व बैंक ने घोषणा की है कि भारत का यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस जल्द ही यूरोपियन सेंट्रल बैंक की टारगेट इंस्टेंट पेमेंट सेटेलमेंट प्रणाली से जुड़ जाएगा. इस कदम से भारत और यूरोपीय देशों के बीच पैसा भेजना और पाना पहले से कहीं ज्यादा आसान, तेज और सस्ता हो जाएगा. यूरोप में रहने वाले लाखों भारतीयों, छात्रों और कामगारों को इसका सीधा फायदा मिलेगा.

क्या है TIPS?

TIPS यूरोपियन सेंट्रल बैंक का एक रियल-टाइम पेमेंट सिस्टम है, जिससे यूरोप के 30 से अधिक देशों के बैंक जुड़े हैं. यह यूरोप का UPI जैसा तेज पेमेंट नेटवर्क माना जाता है. RBI और NPCI International पिछले कई महीनों से यूरोपियन सेंट्रल बैंक UPI को TIPS से जोड़ने पर बातचीत कर रहे थे. अब दोनों पक्षों ने मिलकर UPI-TIPS लिंक के इम्प्लीमेंटेशन फेज की शुरुआत करने पर सहमति दी है.UPI अब सिंगापुर, UAE, फ्रांस, मॉरीशस, भूटान, नेपाल समेत कई देशों में स्वीकार किया जा रहा है. यूरोप के सबसे बड़े भुगतान सिस्टम TIPS से जुड़ना इस डिजिटल नेटवर्क को और बड़ा बना देगा.

G20 एजेंडा का हिस्सा

RBI ने कहा कि यह पहल त्र20 के उस रोडमैप से जुड़ी है, जिसमें दुनिया भर में सस्ते, तेज़ और सुरक्षित क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट्स को बढ़ावा देना लक्ष्य है.

भारत ने त्र20 अध्यक्षता के दौरान UPI को वैश्विक बनाने पर जोर दिया था. अब उसका परिणाम दिख रहा है. RBI, NIPL और यूरोपियन सेंट्रल बैंक अब तकनीकी इंटीग्रेशन, जोखिम प्रबंधन और सेटलमेंट सिस्टम पर काम करेंगे ताकि UPI-TIPS इंटरलिंकिंग को जल्द शुरू किया जा सके.

देश की इकोनॉमी को लगेगे पंखा! GDP सिस्टम में शामिल होंगी नई माइनिंग और फाइनेंशियल सेवाएं

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत सरकार देश की इकोनॉमिक ग्रोथ बढ़ाने के लिए कई सारे कदम उठाती रहती है. चाहे वह जीसएटी रेट कट करके खपत को बढ़ाने का फैसला हो या फिर अब जीडीपी में सुधार का फैसला करना हो. देश में नई ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट (GDP) सीरीज में बड़ा बदलाव होने वाला है.

इसमें सरकार की ओर से दिए गए घरों की कीमत का नया तरीका, लिमिटेड लायबिलिटी पार्टनरशिप (LLP) कंपनियों को ऐड करना और माइनिंग, फाइनेंशियल सेवाओं के साथ-साथ रियल एस्टेट जैसे सेक्टरों के लिए नए डिफ्लेटर शामिल होंगे.

स्टैटिस्टिक्स मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि नॉन-फाइनेंशियल प्राइवेट कॉर्पोरेट सेक्टर यानी निजी कंपनियों का अनुमान लगाने के लिए अब मल्टी-एक्टिविटी कंपनियों का पूरा कामकाज किसी एक कारोबार से नहीं जोड़ा जाएगा. इसके बजाय, कंपनी फाइलिंग में किस काम से कितनी कमाई हुई है, इस जानकारी का इस्तेमाल हर हिस्से में आउटपुट और वैल्यू एडेड बांटने के लिए किया जाएगा.

ऐसे मापी जाएगी अनरजिस्टर्ड सेक्टर की ग्रोथ

अनरजिस्टर्ड या अनइनकॉरपोरेटेड सेक्टर को मापने के लिए नई .

बिना रिलायंस के कैसे रह पाएंगे अनिल अंबानी? खुद को कर रहे हैं कंपनी से दूर!

एजेंसी

नई दिल्ली। कभी दुनिया के छठे सबसे अमीर शख्स रहे अनिल अंबानी आज अपनी ही बनाई कंपनियों से दूरी बना रहे हैं. रिलायंस साम्राज्य के बंटवारे के बाद जिस अनिल धीरूभाई अंबानी ग्रुप (ADAG) की नींव उन्होंने रखी थी, आज उसी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनियों से उनका नाम अलग होता दिख रहा है. यह महज संयोग नहीं है, बल्कि इसके पीछे जांच एजेंसियों का कसता शिकंजा और डूबते साम्राज्य को बचाने की एक आखिरी कोशिश नजर आती है.

प्रवर्तन निदेशालय (ED) और सेबी (SEBI) की लगातार चल रही जांच के बीच, अनिल अंबानी का अपनी कंपनियों के बोर्ड और प्रबंधन से दूर होना बाजार और निवेशकों के लिए एक बड़ा संकेत है. आइए समझते हैं कि आखिर पर्दे के पीछे क्या खेल चल रहा है और इसका आम निवेशकों पर क्या असर पड़ सकता है.

जांच की आंच का डर

हाल ही में जब प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने अनिल अंबानी को पूछताछ के लिए बुलाया, तो यह खबर आग की तरह फैल गई. मामला मनी लॉन्ड्रिंग और फेमा (FEMA) के तहत विदेशी मुद्रा नियमों के उल्लंघन से जुड़ा है. अगस्त में पेश होने के बाद, जब नवंबर में उन्हें दोबारा बुलाया गया, तो अंबानी ने खराब.

सरकार के एक फैसले से देश में बढ़ सकती हैं दवाओं की कीमत, MSME सेक्टर को लगेगा डेंट!

एजेंसी

नई दिल्ली। देश में त्तस्ञ्ज रेट कम करने के बाद अब सरकार ने फार्मा सेक्टर में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल यानी फार्मास्यूटिकल इनपुट के लिए मिनिमम इंपोर्ट प्राइस (MIP) तय करने का फैसला लिया है. इसके कारण देश में दवाओं की कीमतें बढ़ सकती हैं. फार्मा इंडस्ट्री के कई विशेषज्ञों ने सरकार के इस फैसले पर चिंता जताई है. उनका कहना है कि कुछ जरूरी कच्चे माल पर MIP लगाने से API (एक्टिव फार्मास्यूटिकल इंग्रेडिएंट) और दवा बनाने वाली कंपनियों की लागत बढ़ जाएगी. जब लागत बढ़ेगी, तो इसका असर सीधे मरीजों तक पहुंचेगा और दवाएं महंगी होंगी

.ईटी की रिपोर्ट के अनुसार, इस प्रस्ताव का मकसद चीन जैसे देशों से होने वाले बड़े पैमाने पर कच्चे माल के आयात को कम करना है, क्योंकि इससे भारत के घरेलू उत्पादकों की टिकाऊ क्षमता पर असर पड़ सकता है. हालांकि कई मेडिकल एक्सपर्ट इस कदम को भारतीय फार्मा सेक्टर के लिए नुकसानदायक बता रहे हैं. सरकार इस समय पेनिसिलिन-G, ६APA और एमोक्सिसिलिन के लिए MIP तय करने पर विचार कर रही है. इंडस्ट्री के अधिकारियों का कहना है कि एंटीबायोटिक दवाओं में इस्तेमाल होने वाले इन जरूरी तत्वों पर MIP लगाने से MSME पर बड़ा असर पड़ेगा.

रिपोर्ट के मुताबिक, इससे 10,000 से ज्यादा स्स्स्ध्र यूनिट्स प्रभावित हो सकती हैं और कई को बंद होना पड़ सकता है. इससे करीब 2 लाख लोगों की नौकरी जा सकती है. सितंबर में सरकार ने,ञ्जस्-8 के आयात के लिए 30 सितंबर 2026 तक कम से कम कीमत 111 डॉलर प्रति किलोग्राम तय की थी. इसके एक महीने बाद, सरकार ने सल्फाडायजीन के लिए भी अगले साल 30 सितंबर तक 1,174 रुपये प्रति किलोग्राम का MIP घोषित किया.

पॉजिटिव साइड

कुछ एक्सपर्ट सरकार के इस कदम को आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक मजबूत संकेत मानते हैं, क्योंकि भारतीय फार्मा इंडस्ट्री कच्चे माल के लिए काफी हद तक चीन पर निर्भर है. 2020 में सरकार ने इस निर्भरता को कम करने के लिए प्रोडक्शन-लिंक्ड इंसेंटिव (PLI) स्कीम शुरू की थी, ताकि घरेलू कंपनियां जरूरी कच्चे माल के उत्पादन में निवेश बढ़ाए.

हालांकि इंडस्ट्री के जानकारों का कहना है कि स्कीम या एमोक्सिसिलिन की कीमतें नियंत्रित करने के लिए नहीं बनाई गई थी.

अगर अब का इस्तेमाल किया जाता है, तो यह संदेश जा सकता है कि PLI पाने वाली कंपनियां स्कीम के दायरे से बाहर भी अतिरिक्त सुरक्षा या फायदे चाहती हैं.

सिर्फ हादसा या कोई तकनीकी खराबी, आखिर कैसे कैसे क्रैश हो गया भारत का तेजस फाइटर जेट?

एजेंसी

दुबई। दुबई एयरशो के अंतिम दिन वह क्षण किसी सदमे से कम नहीं था, जब भारतीय वायुसेना का स्वदेशी लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस अपनी उड़ान के दौरान अचानक नीचे गिर गया. पलक झपकते ही आसमान में मंडराता गर्व का प्रतीक धरती पर मलबे में बदल गया. हादसे में अनुभवी पायलट विंग कमांडर नमंश स्याल की मौत ने पूरे देश को झकझोर दिया. यह घटना केवल एक त्रासदी भर नहीं, बल्कि उस बहस की शुरुआत भी बन गई है जिसमें पूछा जा रहा है कि क्या यह महज एक एक्सीडेंट था या कहीं कोई तकनीकी खामी इसका कारण बनी.

16 से 21 नवंबर तक चल रहे दुबई एयरशो में तेजस ने कई शानदार उड़ानें भरीं थीं. लेकिन आखिरी दिन जब यह लो-फ्लाइंग मोड में शानदार करतब दिखा रहा था, तभी अचानक विमान का संतुलन बिगड़ गया. वीडियो फुटेज आरंभ से अंत तक एक ही बात दर्शाता है–पायलट आखिरी सेकंड तक विमान को संभालने की हर कोशिश करता रहा. शायद इसी वजह से इजेक्शन का विकल्प चुनना भी उसके लिए संभव नहीं हुआ, क्योंकि इजेक्ट करते ही विमान दर्शक दीर्घा या अन्य विमानों की ओर मुड़ सकता था और नुकसान कहीं अधिक बड़ा हो सकता था.

वायुसेना ने उच्च स्तरीय जांच शुरू की

घटना के तुरंत बाद भारतीय वायुसेना ने कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी के आदेश जारी कर दिए हैं. यह जांच तय करेगी कि तेजस के गिरने के पीछे किस कारक का हाथ था. पायलट की क्षमताओं पर सवाल खड़े करना अनुचित माना जा रहा है, क्योंकि नमंश स्याल अपने अनुभव और शांत स्वभाव के लिए जाने जाते थे. ऐसे में अब पूरी निगाहें उस तकनीकी रिपोर्ट पर हैं, जो आने वाले दिनों में इस दुर्घटना का वास्तविक कारण सामने लाएगी.

सोशल मीडिया पर तेजस को लेकर फैला भ्रम

हादसे के साथ ही सोशल मीडिया पर तेजस को लेकर कई तरह की पुरानी तस्वीरें फिर वायरल होने लगीं. खास तौर पर वह क्लिप जिसमें विमान के नीचे से पानी जैसा द्रव गिरता दिख रहा है. कुछ अकाउंट्स जो अक्सर भारत-विरोधी कंटेंट चलाते रहे हैं ने इसे ÷ऑयल लीक÷ बताना शुरू कर दिया. लेकिन भारत सरकार की क्क्क्कफैक्ट चेक टीम ने इन दावों को पूरी तरह खारिज किया.

टीम के अनुसार यह द्रव किसी तकनीकी खराबी की वजह से नहीं, बल्कि तेजस के एनवायरमेंटल कंट्रोल सिस्टम और ऑन-बोर्ड ऑक्सीजन जनरेटिंग सिस्टम की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा था. क्क्क्कका साफ कहना है कि यह ÷लीक÷ नहीं, बल्कि कंडेन्सेशन से बनने वाली पानी की बूंदें थीं, जो आधुनिक लड़ाकू विमानों में हवा के तापमान और प्रेशर नियंत्रण के दौरान सामान्य रूप से बाहर आती हैं. यह दावा कि तेजस में तकनीकी खामियां हैं, एक संगठित गलत सूचना का हिस्सा है.

चीन ने तोड़ा सब्र का बाण! जापान ने ऐसा क्या किया? गुस्से में लाल हुआ ड्रैगन का देश

एजेंसी

जापान.एशिया की राजनीतिक फिज़ाओं में अचानक तेज़ गर्मी बढ़ गई है. वजह है जापान का वह ऐतिहासिक कदम, जिसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी–द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार जापान ने एक पूरा हथियार सिस्टम किसी देश को निर्यात किया है, और वो भी सीधे अमेरिका को. इस कदम ने बीजिंग को गुस्से से भर दिया है, और चीन खुलकर जापान को उसके इतिहास, संविधान और युद्धोत्तर शांति समझौते की याद दिला रहा है.जापान की यह नई आक्रामक रणनीति एशिया-प्रशांत में शक्ति समीकरणों में बड़ा बदलाव लाने वाली दिख रही है.

पुराने घाव फिर ताज़ा: जापान-चीन रिश्तों में बढ़ी तल्खी

चीन और जापान के रिश्ते दशकों से तनावों से भरे रहे हैं. पूर्वी चीन सागर में द्वीपों को लेकर विवाद लगातार दोनों देशों को आमने-सामने खड़ा करता है. कई मौकों पर नौसैनिक टकराव तक हो चुके हैं.इसके साथ ही जापानी प्रधानमंत्री सनाए ताकाइची के हालिया ताइवान वाले बयान ने चीन की नाराज़गी को और बढ़ा दिया था. अब मिसाइल निर्यात का यह कदम चीन के लिए एक सीधा संदेश माना जा रहा है–जापान अब पहले वाला शांतिपसंद देश नहीं रहा.

अमेरिका को क्यों चाहिए जापान की पैट्रियट मिसाइलें

क्योडो न्यूज के अनुसार, अमेरिका इन मिसाइलों का उपयोग अपने घटते सैन्य भंडार को भरने के लिए करेगा.यूक्रेन युद्ध ने अमेरिकी हथियारों के स्टॉक को काफी खाली कर दिया है. इस कारण वॉशिंगटन ऐसे देशों की तलाश में है जो जल्दी उत्पादन कर सकें और डिलीवरी भी तेज़ी से दे सकें. जापान की तकनीकी क्षमता और अमेरिका-जापान की साझेदारी इस ज़रूरत को पूरा करती है.यही वजह है कि वॉशिंगटन ने टोक्यो की ओर हाथ बढ़ाया और जापान ने ऐतिहासिक रूप से पहली बार एक पूरा हथियार सिस्टम निर्यात करने की मंज़ूरी दी.

जापान की शांति नीति में बड़े बदलाव

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान ने हथियार निर्यात को लेकर बेहद सख्त नियम बनाए थे. उसके तीन मूल सिद्धांत (Three Principles on Defense Equipment Transfer) हथियार एक्सपोर्ट को लगभग असंभव बना देते थे.

बांग्लादेश में भूकंप से मरने वालों की संख्या बढ़कर 10 हुई

एजेंसी

ढाका। । बांग्लादेश में शुक्रवार को आए 5.7 तीव्रता के भूकंप के बाद 10 लोगों की मौत हो गई और 200 से ज्यादा लोग घायल हो गए। भूकंप से बड़े पैमाने पर दहशत फैल गई और इमारतों को नुकसान पहुंचा। लोकल मीडिया ने शनिवार को यह जानकारी दी।

मरने वालों में ढाका के चार, नरसिंगडी के पांच और नारायणगंज के एक लोग शामिल हैं। द ढाका ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक, ढाका में अरमानीटोला में एक बिल्डिंग की छत की रेलिंग गिरने से तीन लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए।

इसी तरह, नरसिंगडी में भूकंप के झटके से पांच लोगों की मौत की खबर है। बांग्लादेश मौसम विभाग के अनुसार, शुक्रवार सुबह 10:38 बजे आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 5.7 मापी गई। विभाग ने इसका केंद्र नरसिंगडी के माधबडी में बताया और इसे मध्यम तीव्रता का भूकंप बताया। ढाका, नरसिंगडी और गाजीपुर में 200 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। डायरेक्टरेट जनरल ऑफ हेल्थ सर्विसेज ने पुष्टि की है कि 10 घायल लोगों को डीएमसीएच और 10 दूसरे लोगों को शहीद ताजुद्दीन अहमद मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

भूकंप के दौरान ढाका यूनिवर्सिटी के कई स्टूडेंट्स घबराहट में बिल्डिंग से कूदने के बाद बुरी तरह घायल हो गए, जिनमें से कुछ को हॉस्पिटल में भर्ती कराना पड़ा। नरसिंगडी में 45 लोगों का जिला अस्पताल में इलाज हुआ, जिनमें से तीन को गंभीर हालत में डीएमसीएच में भेजा गया, जबकि अन्य 10 का इलाज नरसिंगडी के 100 बेड वाले अस्पताल में किया गया।

गाजीपुर के श्रीपुर इलाके में भूकंप आने पर मल्टी-स्टोरी डेनिमेक्स गारमेंट फैक्ट्री से बाहर निकलते समय मची भगदड़ में 150 से ज्यादा मजदूर घायल हो गए। ढाका से मिली रिपोर्ट्स से पता चला है कि राजधानी की सभी इमारतों में छोटी-छोटी दरारें आ गई हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि यह अनुभव पहले कभी महसूस किए गए किसी भी झटके जैसा नहीं था।

कई लोगों ने सोशल मीडिया पर तस्वीरें और वीडियो शेयर किए, जिनमें उनके घरों में टूटी दीवारें, खराब फर्श और फर्नीचर बिखरे हुए दिख रहे थे।

क्या टूट गया है जेडी वेंस और उषा का रिश्ता? बिना वेडिंग रिंग के हुई स्पॉट; सोशल मीडिया पर होने लगी चर्चा

अमेरिका की सेकेंड लेडी उषा वेंस एक बार फिर चर्चा के केंद्र में हैं, लेकिन इस बार वजह उनके किसी बयान की नहीं, बल्कि एक ऐसी तस्वीर की है जिसने सोशल मीडिया पर सवालों की झड़ी लगा दी है.

एजेंसी

अमेरिका। अमेरिका की सेकेंड लेडी उषा वेंस एक बार फिर चर्चा के केंद्र में हैं, लेकिन इस बार वजह उनके किसी बयान की नहीं, बल्कि एक ऐसी तस्वीर की है जिसने सोशल मीडिया पर सवालों की झड़ी लगा दी है. हाल ही में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में उनकी मौजूदगी ने कई अटकलों को जन्म दे दिया है, खासकर तब जब लोगों ने ध्यान दिया कि उन्होंने अपनी वेडिंग रिंग नहीं पहनी थी.

अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की पत्नी उषा वेंस बुधवार को फर्स्ट लेडी मेलानिया ट्रंप के साथ एक आधिकारिक दौरे पर नज़र आईं. दोनों ने मिलकर नॉर्थ कैरोलाइना के कैम्प लेजून और नौसैनिक दल के एयर स्टेशन न्यू रिवर का दौरा किया. इस दौरान उन्होंने छात्रों, शिक्षकों, सैनिकों और उनके परिवारों से मुलाकात की.

इसी कार्यक्रम की तस्वीरें जब सोशल मीडिया पर पहुंचीं, तो यूज़र्स की नज़र सीधे एक चीज़ पर टिक गई–उषा वेंस का बिना वेडिंग रिंग दिखना.

सोशल मीडिया पर उठे सवाल

तस्वीरें सामने आते ही

राजनीतिक विश्लेषकों और आम यूज़र्स ने इस पर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दीं. रणनीतिकार ऐडम पार्कहोमेंको ने तो यहां तक कह दिया कि उषा वेंस का बिना रिंग दिखना दिलचस्प है.

वहीं एक अन्य यूज़र ने लिखा, ÷यह उम्मीद से भी जल्दी हो रहा है.÷ इन प्रतिक्रियाओं ने अचानक से वेंस कपल के निजी रिश्तों पर चर्चाओं को गर्म कर दिया है.

पिछले विवादों से जुड़ गया नया मामला

हाल ही में जेडी वेंस और उषा वेंस पहले भी सुर्खियों में रहे थे, जब उपराष्ट्रपति ने एक कार्यक्रम में अपनी पत्नी के 'ईसाई धर्म अपनाने' को लेकर एक टिप्पणी की थी.

हालांकि उन्होंने बाद में कहा कि उनके बयान का गलत अर्थ निकाला गया और उनका उद्देश्य किसी भी तरह का धार्मिक दबाव डालना नहीं था.

उषा वेंस हिंदू धर्म का पालन करती हैं और इस मुद्दे पर खूब चर्चा होने के बाद जेडी वेंस ने स्पष्ट किया था कि वह अपनी पत्नी के विश्वास का सम्मान करते हैं.

नए यूक्रेन पीस प्लान पर विस्तार से चर्चा करने के लिए तैयार है रूस : राष्ट्रपति पुतिन

एजेंसी

मॉस्को। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध पर पूर्णविराम लगाने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सरकार

ने 28 सूत्रीय पीस प्लान पेश किया। इसे लेकर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की प्रतिक्रिया सामने आई है। पुतिन ने कहा कि रूस यूक्रेन पर अमेरिका के प्रस्तावित 28 सूत्रीय शांति योजना के डिटेल्स पर ठोस चर्चा के लिए तैयार है।

राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि रूस को अमेरिकी सरकार के साथ कम्युनिकेशन के मौजूदा चैनलों के जरिए यह प्लान मिला है। उन्होंने आगे कहा कि यह अंतिम शांति समझौते का आधार बन सकता है।

सिन्हुआ न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, पुतिन ने कहा कि मॉस्को शांति वार्ता और समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान के साथ-साथ प्रस्तावित प्लान के सभी डिटेल्स पर एक ठोस चर्चा के लिए तैयार है।

बता दें, इस साल अगस्त में अमेरिका के अलास्का में पुतिन और ट्रंप की मुलाकात हुई थी। इस दौरान दोनों नेताओं ने रूस-यूक्रेन मुद्दे पर बातचीत की। हालांकि, बातचीत का कोई हल नहीं निकला और तब से यह मुद्दा वहीं अटका हुआ है।

दूसरी ओर राष्ट्रपति जेलेंस्की ने अपने लोगों से कहा था कि यूक्रेन अपने इतिहास के कुछ सबसे मुश्किल फैसलों का सामना कर रहा है। अमेरिका द्वारा तैयार किए गए नए 28-पॉइंट शांति प्लान पर सहमत होने के लिए उनके देश पर दबाव यूक्रेन के इतिहास के सबसे मुश्किल पलों में से एक बन रहा है।

उनका कहना है कि यूक्रेन अब अपनी साख या एक अहम पार्टनर में किसी एक को खोने के बीच जैसी स्थिति का सामना कर रहा है। यूक्रेनी राष्ट्रपति ने अमेरिका की ओर इशारा करते हुए यह कहा।

सूडान में युद्धविराम के लिए यूएई और यूएस के विदेश मंत्रियों में चर्चा, प्रभावितों के लिए निर्बाध मानवीय सहायता पर जोर

एजेंसी

अबू धाबी। संयुक्त अरब अमीरात के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री अब्दुल्ला बिन जायद अल नहयान ने अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो से फोन पर बातचीत की। डब्ल्यूएएम समाचार एजेंसी के अनुसार, दोनों नेताओं ने सूडान संकट और आपसी रिश्तों पर चर्चा की। न्यूज एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, शुक्रवार को हुई इस बातचीत में दोनों ने सूडान में चल रहे गृहयुद्ध की ताजा स्थिति का रिव्यू किया। उन्होंने बिना किसी शर्त के तुरंत युद्धविराम की आवश्यकता और प्रभावित लोगों तक राहत पहुंचाने में आने वाली रुकावटें दूर करने पर ज़ोर दिया। अमेरिका के विदेश विभाग ने भी कहा कि दोनों देश मानवीय युद्ध विराम के लिए अपने साझा प्रयासों पर बातचीत जारी रखे हुए हैं।

इससे पहले, इसी हफ्ते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि उन्होंने सूडान में युद्ध खत्म कराने के लिए कोशिशें शुरू कर दी हैं। उन्होंने बताया कि यह पहल सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के अनुरोध पर व्हाइट हाउस में हुई मुलाकात के दौरान शुरू की गई।

अप्रैल 2023 में गृहयुद्ध शुरू होने के बाद से ही यूएई और सूडान के रिश्ते तनावपूर्ण रहे हैं। सूडान का आरोप है कि यूएई रैपिड सपोर्ट फोर्सेज (आरएसएफ) नामक सशस्त्र समूह का साथ दे रहा है, हालांकि यूएई इन आरोपों को बार-बार नकारता रहा है।

सूडान की सेना और आरएसएफ के बीच यह हिंसक संघर्ष अब तक लाखों लोगों को घर छोड़ने पर मजबूर कर चुका है और हजारों लोगों की जान ले चुका है। संयुक्त राष्ट्र इसे इस सदी का सबसे भयानक मानवीय संकटों में से एक बता रहा है।

फोन कॉल के दौरान दोनों देशों के शीर्ष अधिकारियों ने आपसी संबंधों और भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर भी बात की। अब्दुल्ला ने हाल ही में व्हाइट हाउस द्वारा लिए गए उस फ़ैसले के लिए आभार जताया, जिसमें यूएई की जी-42 कंपनी को एडवांस आर्टिफिशियल-इंटेलिजेंस सेमीकंडक्टर के निर्यात की अनुमति दी गई है। उन्होंने इसे दोनों देशों की गहरी और लगातार मजबूत होती रणनीतिक साझेदारी का संकेत बताया।

पाकिस्तान में भीख मांगना बना 42 अरब डॉलर का कारोबार, बना भिखारियों का सबसे बड़ा सप्लायर

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में भीख मांगने की गतिविधियां अब एक बड़ी आर्थिक इंडस्ट्री में बदल चुकी हैं. हालिया रिपोर्टों के अनुसार, पाकिस्तान में भीख मांगने से जुड़ी कुल आमदनी लगभग 42 अरब डॉलर आंकी गई है, और इसमें शामिल लोगों की संख्या 3 करोड़ 80 लाख से अधिक है.

यह आंकड़े यह दर्शाते हैं कि पाकिस्तान में भीख मांगना अब केवल गरीबी का परिणाम नहीं बल्कि एक व्यवस्थित और बड़े पैमाने पर चलने वाला उद्योग बन गया है.

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि पाकिस्तान दुनिया में भीख मांगने वाले लोगों का एक बड़ा सप्लायर बनकर उभरा है.

सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और अन्य खाड़ी देशों में रहने वाले भिखारियों में 90 प्रतिशत से अधिक पाकिस्तानी पाए जाते हैं.

पाकिस्तान में भिखारियों की संख्या

पाकिस्तानी मीडिया और सामाजिक सर्वेक्षणों के अनुसार, पाकिस्तान की 23 करोड़ से अधिक आबादी में से लगभग 3.8 करोड़ लोग नियमित रूप से भिखारी हैं. इनमें से एक बड़ी संख्या देश के बाहर रहती है और खाड़ी देशों में वीजा लेकर भीख मांगने जाती है.

भिखारी आमतौर पर धार्मिक स्थलों, सड़कों, बाजारों और ट्रैफिक सिग्नलों पर काम करते हैं. खाड़ी देशों में मक्का, मदीना, दुबई, शारजाह और अबू धाबी जैसे बड़े शहरों में पाकिस्तानी भिखारियों की सबसे अधिक संख्या देखी जाती है.

इन देशों में सरकारें अक्सर बड़े पैमाने पर भिखारियों को पकड़कर डिपोर्ट भी करती हैं, लेकिन इसके बावजूद संख्या अधिक बनी रहती है.

दक्षिण अफ्रीका में पीएम मोदी की भारतीय मूल के टेक उद्यमियों से मुलाकात, 'जुड़ाव और सहयोग' पर जोर

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी-20 लीडर्स समिट में शामिल होने के लिए साउथ अफ्रीका के तीन दिवसीय दौरे पर हैं। यात्रा के दौरान उन्होंने भारतीय मूल के टेक उद्यमियों से मुलाकात की।

इस मुलाकात में नई तकनीक, उभरते क्षेत्रों में सहयोग और भारत व प्रवासी भारतीयों के बीच संबंध मजबूत करने जैसे मुद्दों पर बातचीत हुई।

प्रधानमंत्री ने %एक्स% पर लिखा, ÷जोहान्सबर्ग में भारतीय मूल के टेक उद्यमियों के साथ उपयोगी चर्चा की। उद्यमियों ने फिनटेक, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, एग्रीकल्चर, एजुकेशन, हेल्थकेयर, मेडिकल डिवाइस और दूसरे सेक्टर्स में अपने काम के बारे में बात की। उनसे भारत के साथ अपने जुड़ाव को गहरा करने और हमारे लोगों के साथ मिलकर काम करने की अपील की।÷

मुलाकात में कई उद्यमियों ने प्रधानमंत्री से हुई अपनी बातचीत के बारे में बताया।

एक उद्यमी ने आईएएनएस से अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म के बारे में बात की। उन्होंने कहा, ÷हमारा हेल्थकेयर-फोकस्ड डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों को स्वास्थ्य विशेषज्ञों से जोड़ता है। यह ऑनलाइन अपॉइंटमेंट, टेलीहेल्थ और दवाई पहुंचाने की सुविधा देता है। हम

साउथ अफ्रीका और पड़ोसी देशों में ज्यादातर प्राइवेट सेक्टर को सपोर्ट करते हैं।

एक अन्य उद्यमी ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे पूछा कि वे भारतीयों के लिए क्या कर रहे हैं और पर्यटन कैसे बढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि यूपीआई दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल भुगतान मंच है और भारत इस क्षेत्र में नेतृत्व दिखा रहा है। प्रधानमंत्री हमेशा भारत के लिए सुविधाएं बढ़ाने की बात करते हैं।

कृषि क्षेत्र में काम कर रहे एक टेक विशेषज्ञ ने कहा कि उन्होंने शिक्षा, कृषि और कार्बन फुटप्रिंट पर चर्चा की। हम एग्रीकल्चर के लिए एक क्वांटम सॉल्यूशन बना रहे हैं। बातचीत इस बात पर हुई कि भारत और दक्षिण अफ्रीका किस तरह विकास को गति दे रहे हैं, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं और तकनीक को दोनों देशों में कैसे उपयोग किया जा सकता है। एक अन्य प्रतिभागी ने बताया कि उन्होंने मीडिया, तकनीक, कृषि और शिक्षा क्षेत्र में चल रहे अपने काम के बारे में प्रधानमंत्री को जानकारी दी।

एक उद्यमी ने कहा कि प्रधानमंत्री के बारे में उन्होंने जितना पढ़ा था, वैसा ही अनुभव उन्हें मुलाकात में मिला। कई विषयों पर गहराई से चर्चा हुई।

एक और उद्यमी ने बताया कि प्रधानमंत्री ने उन टेक इनिशिएटिव पर चर्चा की जिन पर हम काम कर रहे हैं और लेटेस्ट ट्रेंड्स पर विस्तार से बातचीत की। इन सभी विषयों पर पीएम मोदी की जानकारी इतनी व्यापक और गहरी है कि वे हर विषय पर बहुत सूझबूझ से चर्चा करते हैं।

जोहांसबर्ग पहुंचने पर प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय समुदाय द्वारा दिए गए शानदार स्वागत की भी सराहना की।

सांस्कृतिक कार्यक्रम 'रिद्म्स ऑफ ए यूनाइटेड इंडिया' में भारत के 11 राज्यों के लोकनृत्य प्रस्तुत किए गए, जिसने दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीय समुदाय की सांस्कृतिक विविधता को दिखाया गया।

जी-20 नेताओं का शिखर सम्मेलन के इतर प्रधानमंत्री मोदी कई देशों के नेताओं से द्विपक्षीय मुलाकात भी करेंगे।

ट्रंप ने की ममदानी से मुलाकात

'अच्छे काम' के लिए न्यूयॉर्क के नवनिर्वाचित मेयर पर जताया पूरा 'भरोसा'

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने न्यूयॉर्क के नवनिर्वाचित मेयर जोहरान ममदानी से व्हाइट हाउस में मुलाकात की। मुलाकात के बाद ट्रंप ने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि ममदानी अच्छा काम करेंगे।

मीडिया से बात करते हुए ट्रंप ने कहा कि बैठक बहुत अच्छी रही। उन्होंने कहा कि जितना अच्छा ममदानी काम करेंगे, उतना ही उन्हें खुशी होगी। ट्रंप ने यह भी कहा कि उनका प्रशासन न्यूयॉर्क को मजबूत और सुरक्षित बनाने में पूरी मदद करेगी।

ममदानी ने भी इस 'उपयोगी बैठक' के लिए ट्रंप का धन्यवाद किया और कहा कि बातचीत में उन मुद्दों पर ध्यान दिया गया जिन पर दोनों की सहमति है, ताकि न्यूयॉर्क की जनता की बेहतर सेवा की जा सके।

ट्रंप ने कहा कि उन्हें लगता है कि ममदानी कुछ ऐसे काम करेंगे, जिनसे कुछ कंजर्वेटिव लोग हैरान हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि वह ममदानी की मदद करना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि यह मेयर कई अच्छे कदम उठा सकते हैं।

इमिग्रेशन से जुड़े सख्त कदमों पर ट्रंप ने कहा कि उनकी ममदानी से इस मुद्दे पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि प्रशासन की प्राथमिकता हत्यारों, नशा बेचने वालों और ÷कुछ बहुत बुरे लोगों÷ लोगों पर होगी। ट्रंप ने कहा कि ऐसी पहचान वाले लोगों को शहर से बाहर करना ज़रूरी है, ताकि न्यूयॉर्क सुरक्षित रह सके। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर ममदानी का रुख शायद उनसे भी कड़ा है।

मुलाकात से कुछ घंटे पहले ही ट्रंप का रुख नरम होता दिखा। उन्होंने कहा कि उन्हें भरोसा है कि उनकी और ममदानी के बीच अच्छा तालमेल रहेगा। शुक्रवार को फॉक्स न्यूज़ के साथ एक इंटरव्यू में, ट्रंप ने कहा कि हालांकि ममदानी की ÷अलग सोच÷ है, लेकिन वे दोनों ÷न्यूयॉर्क को मजबूत बनाना चाहते हैं।

ट्रंप ने ममदानी के उस भाषण पर भी प्रतिक्रिया दी जिसमें ममदानी ने सीधे राष्ट्रपति का नाम लिया था और कहा था कि ÷हममें से किसी तक पहुंचने के लिए आपको हम सबसे होकर गुजरना होगा।÷ इस पर ट्रंप ने माना कि चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने भी ममदानी पर टारगेट किया था, लेकिन अब माहौल बदल चुका है और मुलाकात दोस्ताना रहेगी।

इसी बीच व्हाइट हाउस ने एक बयान में ममदानी को 'कम्युनिस्ट' कहकर निशाना भी बनाया था। यह बैठक ऐसे समय में हो रही है जब न्यूयॉर्क के मेयर चुनाव अभियान के दौरान दोनों के बीच लगातार तीखी बयानबाजी होती रही। ट्रंप कई बार ममदानी को 'कम्युनिस्ट' बताते रहे और कहा कि उनके नेतृत्व में शहर आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर हो जाएगा। उन्होंने तो यह भी कहा था कि अगर ममदानी जीत गए, तो न्यूयॉर्क की संघीय

सहायता रोक दी जाएगी।

ट्रंप ने चुनाव में ममदानी के प्रतिद्वंद्वी, न्यूयॉर्क के पूर्व राज्यपाल एंड्रयू कुओमो का समर्थन भी किया था।

ममदानी ने 4 नवंबर के चुनाव में कुओमो को लगभग नौ परसेंटेज पॉइंट से हराया, और देश के सबसे बड़े शहर के पहले डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट चुने गए मेयर बनकर इतिहास रच दिया।

page 1 and 8_page 1 Mar 25 final ds.qxd 11/22/2025 11:38 PM Page 2

फसल अवशेष प्रबंधन और मृदा कार्बन गतिशीलता

वैश्विक आबादी के विस्तार और बढ़ती खाद्य मांग के बीच, किसानों को मिट्टी के स्वास्थ्य से समझौता किए बिना कृषि उत्पादकता में सुधार करने की आवश्यकता है। इसके मद्देनजर, टिकाऊ फसल अवशेष प्रबंधन तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

फसल अवशेष, कटाई के बाद खेत में छोड़ी गई पौधों की सामग्री, मिट्टी के स्वास्थ्य, कार्बन पृथक्करण और कटाव नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि, सभी अवशेषों को हटाना फसल अवशेष प्रबंधन का अच्छा उदाहरण नहीं है, न ही बहुत अधिक छोड़ना, जो कीटों और बीमारियों को जन्म दे सकता है। हमारा लेख आपको मिट्टी की गुणवत्ता, खेत की उत्पादकता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ाने के लिए फसल अवशेष प्रबंधन को अनुकूलित करने पर विज्ञान-समर्थित अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

फसल अवशेष प्रबंधन क्या है?

फसल अवशेष प्रबंधन (सीआरएम) जुताई कार्यों की आवृत्ति और तीव्रता को कम करने

और पिछली कटाई से बचे हुए मलबे की मात्रा बढ़ाने पर आधारित एक रणनीति है। इस प्रबंधन दृष्टिकोण का लक्ष्य मिट्टी और पानी की गुणवत्ता को संरक्षित करना है जबकि कई अन्य पारिस्थितिक और आर्थिक लाभ प्रदान करना है। उच्च पैदावार और ईंधन, बिजली, और सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों जैसे महंगे इनपुट का कम उपयोग अधिकांश स्थितियों में फसल अवशेष प्रबंधन पर स्विच करने को उचित ठहराता है।

कम अवशेष वाले पौधों के बाद अधिक अवशेष वाले पौधे या कवर फसलें बोना आम तौर पर ष्टत्रूमें पहला कदम होता है। अवशेषों की मात्रा, उनका अभिविन्यास (खड़े हुए ठूंठ से लेकर पड़े हुए तने तक), और सबसे कठिन अवधियों में उनका समान वितरण इस साल भर चलने वाले प्रबंधन के अन्य प्रमुख पहलू हैं, जो कटाई के बाद की अवधि से कहीं आगे तक फैले हुए हैं।

गणना से साइट पर जांच किए बिना ही बचे हुए पौधों के अवशेषों का उचित आकलन किया जा सकता है। हालाँकि, ध्यान रखें कि यह केवल एक मोटा अनुमान है और मौसम और उपकरण सहित कई चर इसे खेत में होने वाली चीज़ों से अलग बना सकते हैं। यहाँ एक गणना का उदाहरण दिया गया है जो दर्शाता है कि कुछ सामान्य फ़ील्ड ऑपरेशन के बाद आपके पास कितना मक्का और सोयाबीन बचा रह सकता है.

विभिन्न क्षेत्र गतिविधियों के बाद फसल अवशेष कवर का प्रतिशत

गतिविधि	मकई का बचा हुआ हिस्सा, %	सोयाबीन का बचा हुआ भाग, %
कटाई के बाद	90–95	80–90
शीत ऋतु अपघटन	80–90	70–80
जुताई	2–7	0–2
मुड़ी हुई टांग से छेनी चलाना	40–50	10–20
डीप ऑफसेट डिस्किंग	25–40	10–20
पैराप्लोइंग	65–75	35–45
सीधी टांग से छेनी चलाना	50–60	30–40
उथला अग्रानुक्रम डिस्किंग	40–70	25–35
निर्जल अनुप्रयोग	75–85	45–55
खेती	80–90	55–65
रोपण	80–90	80–90
जुताई–रोपण	55–65	55–65

कटाई–रोपण समय–सीमा में कुल अवशेष प्रतिशत निर्धारित करते समय ये आंकड़े आपके फसल अवशेष प्रबंधन में सहायक संदर्भ के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। इसके अलावा, इस प्रतिशत के आधार पर यह अनुमान लगाना संभव है कि किसानों ने कौन सी तकनीक अपनाई।

मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए, रोपण के बाद कम से कम 30त्न अवशेष कवर का लक्ष्य रखें । उपरोक्त गणनाओं के अनुसार, कम जुताई वाला तरीका आसानी से 30–50त्न कवर देता है, जबकि गर्मियों में परती या तीन से अधिक प्राथमिक जुताई प्रक्रियाओं को मिलाकर 30% से कम कवर मिलता है।

कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि उच्च उपज देने वाले खेत जो कम– या बिना–जुताई पद्धतियों का उपयोग करते हैं, उनमें मिट्टी की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डाले बिना 45त्न तक बचे हुए अवशेषों को हटाया जा सकता है। हालाँकि, अन्य अध्ययनों का तात्पर्य है कि अवशेषों को हटाने में 20–30त्न से अधिक का योगदान नहीं होना चाहिए.

उचित फसल अवशेष संरक्षण और प्रबंधन रणनीतियों का उपयोग करने का महत्व निर्विवाद है क्योंकि वे कृषि संबंधी, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ लाते हैं। स्थानीय रूप से अनुकूलित प्रबंधन दृष्टिकोणों में मिट्टी की गुणवत्ता, जल प्रतिधारण और फसल की पैदावार में सुधार करने की क्षमता है।

सुनियोजित फसल अवशेष प्रबंधन से लंबे समय में मिट्टी की उर्वरता और समग्र मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। जुताई के बाद खेत में बची हुई बहुत सारी वनस्पति सामग्री उपज बढ़ाने में योगदान देती है-

- मृदा अपरदन को कम करना या रोकना ;
- पौधों की वृद्धि के लिए मिट्टी को अनुकूल तापमान पर रखना;
- जड़ वृद्धि को बढ़ावा देना;
- मिट्टी के पीएच में सुधार करना और पौधों के लिए अधिक सूक्ष्म पोषक तत्व उपलब्ध कराना;
- पुनः उपयोग के लिए पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण;
- मिट्टी को कार्बनिक पदार्थ, विशेष रूप से कार्बन से समृद्ध करना;
- मिट्टी में रहने वाले सूक्ष्मजीवों को समर्थन देना;
- मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार, भूमि की जल धारण करने और निकास की क्षमता में वृद्धि;
- मृदा संपीडन को कम करना;
- भूमि की उर्वरता को संरक्षित करना।

मृदा उत्पादकता को बनाए रखने तथा आदर्श रूप से बढ़ाने के लिए प्रभावी फसल अवशेष प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो विशेष रूप से कमजोर मृदाओं के लिए महत्वपूर्ण है, जो क्षरण के प्रति प्रवण रहती हैं।

फसल कटाई के बाद बचे कृषि अवशेष निम्नलिखित तरीकों से मिट्टी को अधिक जल धारण करने में मदद करते हैं

- वाष्पीकरण को कम करना । पौधों के अवशेषों से ढकने से मिट्टी में कम सूर्य की रोशनी प्रवेश करती है और मिट्टी के ऊपर हवा का प्रवाह धीमा हो जाता है, जिससे वाष्पीकरण दर को कम करने में मदद मिलती है।
- मिट्टी के कटाव और सतही अपवाह को रोकना। फसल अवशेष गिरती हुई वर्षा की बूंदों से होने वाली गति ऊर्जा को सोखकर मिट्टी के अलग होने से रोकते हैं। इस प्रकार, मिट्टी की सतह कम जमती है, जिससे अधिक पानी सोख पाता है और कम बह पाता है।

फसल अवशेषों की जल–बचत क्षमता और उचित खेत प्रबंधन के साथ, किसान सिंचाई के लिए उपयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा में कटौती कर सकते हैं।

कृषि क्षेत्र को स्थायी फसल अवशेष प्रबंधन से बहुत लाभ होगा, क्योंकि इससे आय के अतिरिक्त स्रोत पैदा होंगे, उपज और लाभ में वृद्धि होगी तथा नए औद्योगिक उपयोग उपलब्ध होंगे।कृषि से बचे हुए खाद्य पदार्थों को बर्बाद करने के बजाय उन्हें उचित तरीके से संभालने से होने वाले कुछ सबसे उल्लेखनीय लाभ निम्नलिखित हैं–

- इनपुट लागत में कमी। उचित अवशेष प्रबंधन से सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों की आवश्यकता कम हो जाती है।
- ईंधन और ऊर्जा की खपत कम करें । कम जुताई या बिना जुताई वाली खेती की तकनीक का उपयोग करके , जिसमें अक्सर खेत में कृषि अवशेष छोड़ना शामिल होता है, मिट्टी की तैयारी से जुड़ी लागत को कम किया जा सकता है।
- बेहतर पैदावार। टिकाऊ फसल अवशेष प्रबंधन के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने से कम संसाधनों के साथ पैदावार में वृद्धि होती है।

पर्यावरणीय लाभ

फसल और मिट्टी का प्रकार, जलवायु और खेती के तरीके सभी इस बात में भूमिका निभाते हैं कि फसल अवशेष प्रबंधन पर्यावरण के लिए कितना फायदेमंद है। उपयुक्त ष्टत्रू रणनीतियों का उपयोग करने के मुख्य लाभ इस प्रकार हैं

- कार्बनिक पदार्थ की मात्रा में वृद्धि। कृषि अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ती है, जिससे मिट्टी की जल और पोषक तत्वों को धारण करने की क्षमता बढ़ती है और वनस्पति विकास को बढ़ावा मिलता है।
- जैव विविधता और आवास संरक्षण। पौधों के अवशेष लाभदायक कीटों और अन्य जीवों के लिए आश्रय प्रदान करते हैं, जिससे जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद मिलती है।
- जलवायु परिवर्तन शमन। खेत में अधिक मात्रा में पौधों की सामग्री छोड़ने से कार्बनिक कार्बन को बढ़ावा मिलता है और मिट्टी में कार्बन अवशोषण में सुधार होता है । किसान अपने कार्बन पदचिह्न को भी कम करते हैं क्योंकि कृषि मशीनरी द्वारा खेतों से गुजरने की आवृत्ति और तीव्रता कम हो जाती है।

फसल अवशेष प्रबंधन और मृदा कार्बन गतिशीलता

मिट्टी में कार्बनिक कार्बन और नाइट्रोजन के भंडार अक्सर अवशेषों को हटाने पर कम हो जाते हैं। यह किस हद तक होता है यह प्रबंधन अवधि, खेती की रणनीति, मिट्टी के प्रकार और जलवायु जैसे क्षेत्र–विशिष्ट कारकों के आधार पर भिन्न होता है।

समग्र लाभ को अधिकतम करने के लिए, किसानों को अवशेष प्रबंधन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिसमें आर्थिक और पर्यावरणीय कारकों के बीच संतुलन स्थापित हो।

ईओएसडीए फसल निगरानी

फील्ड्स मॉनिटरिंग प्लेटफॉर्म, उच्च–रिज़ॉल्यूशन उपग्रह चित्रों का लाभ उठाकर दूर से किसी भी परिवर्तन की पहचान और प्रतिक्रिया करता है!

फसल अवशेष प्रबंधन की विधियां और अभ्यास

फसल अवशेष एक मूल्यवान वस्तु हो सकती है क्योंकि इसका उपयोग फ़ीड, फाइबर और बायोएनर्जी उद्योगों में कई तरह से किया जाता है। इसके बावजूद, पौधों के अवशेषों को जलाना कई दशकों से एक आम बात रही है, भले ही यह कई नकारात्मक परिणामों के साथ एक खराब प्रबंधन विकल्प है। मिट्टी संरक्षण उपायों के साथ संयुक्त कम–जुताई तकनीक ष्टत्रू का सबसे प्रभावी साधन है। आइए कुछ मौजूदा फसल अवशेष प्रबंधन प्रथाओं की अधिक बारीकी से जाँच करें

- बिना जुताई वाली खेती। इस प्रबंधन पद्धति में, अवशेषों को खेत में ही छोड़ दिया जाता है, और मिट्टी को पहले जोते बिना ही बीज बो दिए जाते हैं। भारी मशीनरी को खेत में बार–बार आने से रोककर मिट्टी की गड़बड़ी कम की जाती है। इसके अलावा, अछूते पौधों के अवशेष कार्बन को जोड़कर मिट्टी को बेहतर बनाते हैं, कटाव को रोकते हैं और मिट्टी की नमी को बनाए रखते हैं।
- रिज–टिलेज। किसान ऊँची क्यारियाँ या लकीरें तैयार करते हैं, जिनके बीच पौधों के अवशेष जमा हो सकते हैं। इससे पानी का प्रवेश बेहतर होता है और मिट्टी का कटाव कम होता है।
- मल्चिंग। फसल अवशेष प्रबंधन की इस पद्धति के पीछे विचार यह है कि अवशेषों को खेत में ही छोड़ दिया जाए, जहाँ वे पर्यावरणीय प्रभावों के विरुद्ध अवरोध के रूप में काम कर सकें। यह कटाव को रोकने, पानी को संरक्षित करने और खरपतवार की वृद्धि को सीमित करने में मददगार साबित होता है। कपास के साथ–साथ सोयाबीन और मकई की फसल उगाने के लिए मल्चिंग अत्यधिक लाभकारी है।
- संरक्षण पद्धतियाँ। कवर क्रॉपिंग और फसलों को घुमाना अवशेष प्रबंधन के लिए आवश्यक है क्योंकि वे कार्बनिक पदार्थ और पोषक तत्वों को जोड़ने के साथ–साथ आवश्यक क्षेत्र संरक्षण प्रदान करते हैं, जैसा कि फलियों के मामले में होता है। मिट्टी के कटाव और गिरावट को रोकने के अलावा, ये प्रबंधन पद्धतियाँ खेत में पोषक तत्वों के चक्र को प्रभावित कर सकती हैं।

किसी विशेष CRM रणनीति की सफलता अन्य कारकों के अलावा मिट्टी, जलवायु और पौधों की विशेषताओं पर निर्भर करती है। इसलिए कुछ किसानों के अनुसार, फसल अवशेष प्रबंधन का एक संभावित नुकसान यह है कि जो एक सेटिंग में काम करता है वह दूसरे में विफल हो सकता है। खेत में छोड़े जाने वाले अवशेषों का इष्टतम स्तर भी निर्धारित करना आसान नहीं है। अत्यधिक आवरण मिट्टी–बीज की परस्पर क्रिया को रोक सकता है, पौधों के लिए नाइट्रोजन को दुर्गम बना सकता है, और मिट्टी को ठंडा और नम रख सकता है। दूसरी ओर, अपर्याप्त अवशेष आवरण मिट्टी की गुणवत्ता को खराब कर सकता है, कार्बनिक पदार्थों के नुकसान में योगदान दे सकता है, और कटाव को बढ़ा सकता है।

फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न लाभों को प्राप्त करने के लिए, किसानों और कृषि विशेषज्ञों को अपनी विशेषज्ञता साझा करनी चाहिए, आवश्यक अनुसंधान करना चाहिए और निम्नलिखित क्षेत्रों में आधुनिक तकनीक का उपयोग करना चाहिए।

भूमि के बड़े हिस्से की कटाई के बाद, कृषि अवशेषों का एक पहाड़ होता है, जिसे निपटाया जाना चाहिए। पौधों के वे हिस्से जो धीरे–धीरे सड़ते हैं, जैसे डंठल और जड़ें, खेत में जमा हो सकते हैं और अगले मौसम की मिट्टी की तैयारी और रोपण में बाधा डाल सकते हैं। पौधों को बारी–बारी से उगाने से फसल अवशेष प्रबंधन में जटिलता बढ़ जाती है क्योंकि अवशेषों के अपघटन की मात्रा, दर और विशिष्ट विशेषताओं में अंतर होता है। उदाहरण के लिए, चावल उगाने के बाद बचा हुआ पुआल अक्सर घुले हुए कार्बनिक कार्बन को नष्ट कर देता है, जिससे मिट्टी और भूजल पर और भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

जब बहुत ज़्यादा मात्रा में अवशेष बचे हों, तो फसल अवशेष को कम करने के लिए प्रबंधन रणनीति का उपयोग करना आकर्षक हो सकता है – मान लीजिए, उन्हें जला दें। हालाँकि, जलाने से मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ और पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। ज़्यादातर मामलों में, मल्चिंग और सतह प्रतिधारण, जो कई तरह से मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं, फसल अवशेष प्रबंधन के लिए बेहतर विकल्प हैं, खासकर चावल–गेहूँ प्रणालियों में।

बड़ी मात्रा में अवशेष का प्रबंधन आसान नहीं होता; न ही छोटी मात्रा का। जब कृषि अवशेष अपर्याप्त होते हैं, तो मिट्टी का कटाव और पोषण असंतुलन उत्पन्न होता है। श्वह्रस्ष्ठ फसल निगरानी की मदद से , आप अपनी भूमि में उन खाली स्थानों की पहचान कर सकते हैं जिन्हें अधिक कवर की आवश्यकता है। यह समझ कम जुताई या नो–टिल सिस्टम के भीतर फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विशेष रूप से मूल्यवान होगी, जहां मिट्टी संरक्षण और नो–टिल प्लांटर्स का उपयोग करने की क्षमता के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

खेत में बची हुई पौधों की सामग्री कीटों और रोग वाहकों के लिए प्रजनन भूमि के रूप में काम कर सकती है, साथ ही पोषक तत्वों की आपूर्ति और खरपतवारों के विकास के लिए आश्रय भी हो सकती है। हालाँकि यह फसल अवशेष प्रबंधन का एक धोखा लग सकता है, लेकिन वास्तव में इसका मतलब है कि कीटों, बीमारियों और खरपतवारों का नियंत्रण अवशेष प्रबंधन के साथ–साथ होना चाहिए।

पूरे बढ़ते मौसम के दौरान, आप श्वह्रस्ष्ठ फसल निगरानी के रोग जोखिम उपकरण के साथ अपने खेतों में रोग की संभावना की निगरानी कर सकते हैं और फसल अवशेष प्रबंधन के लिए अपनी योजनाओं में उस जानकारी को ध्यान में रख सकते हैं। पौधों की वृद्धि अवस्था और कृषि मौसम डेटा के आधार पर फसल रोग के खतरों पर दैनिक जोखिम स्थिति अपडेट प्राप्त करें।

जब आप फसल अवशेष प्रबंधन रणनीतियों में निवेश करने का निर्णय लेते हैं, तो आपको उन शुरुआती खर्चों पर विचार करना होगा जो उत्पन्न हो सकते हैं, जैसे कि उपकरणों की लागत। साथ ही, कम–जुताई तकनीकों को सीखने और अपनाने के लिए पर्याप्त समय आवंटित करना महत्वपूर्ण है, जिन्हें अक्सर ष्टत्रू के साथ मिलकर उपयोग किया जाता है। किसान बदलावों को लागू करने में हिचकिचा सकते हैं यदि उन्हें लगता है कि ऐसा करना बहुत कठिन या महंगा होगा। सरकारें और गैर–सरकारी संगठन (गैर–सरकारी संगठन) किसानों को कृषि अवशेष प्रबंधन समाधानों में मूल्य देखने और उनके कार्यान्वयन का समर्थन करने में मदद कर सकते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि, श्वह्रस्ष्ठ फसल निगरानी जैसे सटीक कृषि प्लेटफ़ॉर्म टिकाऊ खेती और फसल अवशेष प्रबंधन के लिए बहुत सारी जानकारी प्रदान कर सकते हैं, जिससे बेकार खर्च और खराब प्रबंधन प्रथाओं में कमी आती है। व्यावहारिक वनस्पति सूचकांक, उत्पादकता मानचित्र, ऐतिहासिक मौसम रिकॉर्ड और 14–दिन का प्रति घंटा पूर्वानुमान सभी खेती की सफलता में योगदान करते हैं। ष्टत्रू प्रथाओं और टिकाऊ फ़ील्डवर्क में संक्रमण को आसान बनाकर, हमारी तकनीक बड़े पैमाने पर खेतों को स्थायी, लागत प्रभावी संचालन प्राप्त करने में मदद करती है।

कृषि अवशेष प्रबंधन का अंतिम लक्ष्य ऐसी पद्धतियों को अपनाना है जो पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करते हुए फसल की पैदावार में सुधार करें। फसल अवशेष प्रबंधन के महत्व की पुष्टि कई जांचों से होती है जो दर्शाती हैं कि फसल कटाई के बाद बची हुई पौधों की सामग्री को संभालने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधि से अगली उपज की गुणवत्ता और मात्रा प्रभावित हो सकती है.

उल्लेखनीय रूप से, अवशेषों, मिट्टी और फसलों से संबंधित परस्पर जुड़े कारकों की विशाल श्रृंखला के कारण सभी के लिए एक ही दृष्टिकोण नहीं है, साथ ही मिट्टी की तैयारी या रोपण तिथियों जैसे प्रबंधन विकल्प भी हैं। श्वह्रस्ष्ठ फसल निगरानी आपको इन कारकों पर बेहतर समझ और परिणामस्वरूप नियंत्रण प्रदान करके सर्वोत्तम दृष्टिकोण चुनने में सहायता कर सकती है। इसलिए, अपने फसल अवशेष प्रबंधन विकल्पों को ध्यान से लें और समय–समय पर कृषि दक्षता और स्थिरता की दृष्टि से उनका पुनर्मूल्यांकन करें।

– लेखक– वासिल चेरलिंका (02–11–2023), ईओएस डेटा एनालिटिक्स में वैज्ञानिक। वासिल चेरलिंका पेडोलॉजी (मृदा विज्ञान) में विशेषज्ञता रखने वाले बायोसाइंसेज के डॉक्टर हैं, जिन्हें इस क्षेत्र में 30 वर्षों का अनुभव है। उन्होंने यूक्रेन में इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई की और चेर्नित्सि नेशनल यूनिवर्सिटी में एग्रोकेमिस्ट्री, एग्रोनॉमी और मृदा विज्ञान में अपनी डिग्री प्राप्त की। 2018 से, डॉ. चेरलिंका मृदा विज्ञान, कृषि विज्ञान और कृषि रसायन विज्ञान में समस्याओं पर श्वह्रस्ष्ठ को सलाह दे रहे हैं।

हरित ईंधन

हरित ईंधन को जैव ईंधन (Biofuel) के रूप में भी जाना जाता है जो पौधों और जानवरों के द्रव्य से प्राप्त एक प्रकार का स्वच्छ ईंधन है। यह व्यापक रूप से उपयोग किये जाने वाले जीवाश्म ईंधन की तुलना में पर्यावरण अनुकूल है।

हरित ईंधन के प्रकार

बायो–एथेनॉल

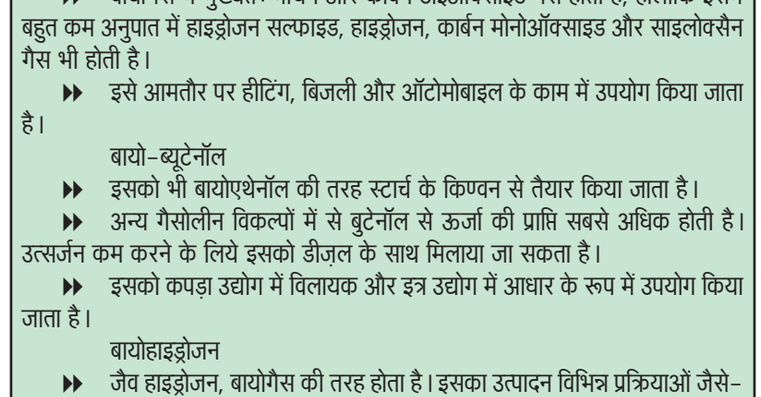

- इसको किण्वन प्रक्रिया का उपयोग करके मक्के और गन्ने से बनाया जाता है।
- एक लीटर पेट्रोल की तुलना में एक लीटर इथेनॉल में लगभग दो– तिहाई ऊर्जा होती है।
- पेट्रोल के साथ मिश्रित होने पर यह दहन निष्पादन में सुधार करके कार्बन मोनोऑक्साइड और सल्फर ऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करता है।

बायो–डीज़ल

- इसको वनस्पति तेलों जैसे– सोयाबीन, ताड़ या वनस्पति अपशिष्ट तेल और पशु वसा से प्राप्त किया जाता है, इसे फ्ट्रान्सएस्टरीफिकेशनफ्र कहा जाता है।
- यह डीज़ल की तुलना में बहुत कम हानिकारक गैसों का उत्सर्जन करता है।

बायो–गैस

- इसका निर्माण कार्बनिक पदार्थों के अवायवीय अपघटन जैसे– जानवरों और मनुष्यों के वाहित मल द्वारा होता है।
- बायोगैस में मुख्यतः मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड गैस होती है, हालाँकि इसमें बहुत कम अनुपात में हाइड्रोजन सल्फाइड, हाइड्रोजन, कार्बन मोनोऑक्साइड और साइलोक्सैन गैस भी होती है।
- इसे आमतौर पर हीटिंग, बिजली और ऑटोमोबाइल के काम में उपयोग किया जाता है।

बायो–ब्यूटेनॉल

- इसको भी बायोएथेनॉल की तरह स्टार्च के किण्वन से तैयार किया जाता है।
- अन्य गैसोलीन विकल्पों में से बुटेनॉल से ऊर्जा की प्राप्ति सबसे अधिक होती है। उत्सर्जन कम करने के लिये इसको डीज़ल के साथ मिलाया जा सकता है।
- इसको कपड़ा उद्योग में विलायक और इत्र उद्योग में आधार के रूप में उपयोग किया जाता है।

बायोहाइड्रोजन

- जैव हाइड्रोजन, बायोगैस की तरह होता है। इसका उत्पादन विभिन्न प्रक्रियाओं जैसे– पायरोलिसिस, गैसीकरण या जैविक किण्वन का उपयोग कर किया जा सकता है।
- यह जीवाश्म ईंधन के लिये सही विकल्प हो सकता है।

जैव ईंधन को बढ़ावा देने हेतु पहल-

इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल कार्यक्रम- इस कार्यक्रम को खाद्यान्न जैसे– मक्का, ज्वार, बाजरा, फल, सब्जियों के कचरे आदि से ईंधन निकालने के लिये शुरू किया गया है।

प्रधानमंत्री जी–वन योजना, 2019- इस योजना का उद्देश्य वाणिज्यिक परियोजनाओं की स्थापना के लिये एक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना और 2त्न इथेनॉल क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास को बढ़ावा देना है।

गोबर धन योजना, 2018- यह खेतों में उपयोग हेतु ठोस कचरा और मवेशियों के गोबर को खाद, बायोगैस तथा बायो–ष्टहृत्र में परिवर्तित करने पर केंद्रित है। इस प्रकार गाँवों को साफ–सुथरा रखने और ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि करने में मदद मिलती है।

- इसे स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत लॉन्च किया गया था।

जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति, 2018

- इस नीति द्वारा गन्ने का रस, चीनी युक्त सामग्री, स्टार्च युक्त सामग्री तथा क्षतिग्रस्त अनाज, जैसे– गेहूँ, टूटे चावल और सड़े हुए आलू का उपयोग करके एथेनॉल उत्पादन हेतु कच्चे माल के दायरे का विस्तार किया गया है।
- नीति में जैव ईंधनों को 'आधारभूत जैव ईंधनों' यानी पहली पीढ़ी (1G) के बायोएथेनॉल और बायोडीज़ल तथा 'विकसित जैव ईंधनों' यानी दूसरी पीढ़ी (2G) के एथेनॉल तथा निगम के ठोस कचरे से लेकर ड्रॉप–इन ईंधन को तीसरी पीढ़ी (3त्न) के जैव ईंधन, बायो सीएनजी आदि के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया है, ताकि प्रत्यीेक श्रेणी के अंतर्गत उचित वित्तीय और आर्थिक प्रोत्साणहन को बढ़ाया जा सके।
- अतिरिक्तर उत्पीदन के चरण के दौरान किसानों को उनके उत्पीद का उचित मूल्य नहीं मिलने का खतरा होता है। इसे ध्याकन में रखते हुए इस नीति में राष्ट्री य जैव ईंधन समन्व य समिति की मंजूरी से एथेनॉल उत्पानदन के लिये (पेट्रोल के साथ उसे मिलाने हेतु) अधिशेष अनाजों के इस्तेीमाल की अनुमति दी गई है।
- जैव ईंधनों के लिये नीति में 2G एथेनॉल जैव रिफाइनरी को 1जी जैव ईंधनों की तुलना में अतिरिक्तई कर प्रोत्सोहन, उच्चै खरीद मूल्य1 आदि के अलावा 6 वर्षों में 5000 करोड़ रुपए की निधियन योजना हेतु वायबिलिटी गैप फंडिंग का संकेत दिया गया है।

आगे की राह

एक बड़ी कृषि अर्थव्यवस्था बनने हेतु भारत के पास बड़ी मात्रा में कृषि अवशेष उपलब्ध हैं, इसलिये देश में जैव ईंधन के उत्पादन की गुंजाइश बहुत अधिक है। जैव ईंधन नई नकदी फसलों के रूप में ग्रामीण और कृषि विकास में मदद कर सकता है।

शहरों में उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट और नगरपालिका कचरे का उपयोग सुनिश्चित कर स्थायी जैव ईंधन उत्पादन के प्रयास किये जाने चाहिये। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन और कार्यान्वित जैव ईंधन नीति भोजन और ऊर्जा दोनों प्रदान कर सकती है।